सस्ता साहित्य [illegible]

रूसी युवकों के बीच

सोवियत जन-जीवन की झांकी

रामकृष्ण बजाज

आमुख
डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
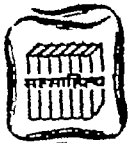
सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली
१९६२

प्रकाशक मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

संस्करण पहला : १९६२

मूल्य अढाई रुपये

मुद्रक हीरा आर्ट प्रेस,
दिल्ली

प्रकाशकीय

हिन्दी मे यात्रा-साहित्य के प्रति पाठको की बढती हुई रुचि और इस प्रकार के साहित्य के अभाव को देखकर हमने यात्रा-साहित्य का प्रकाशन प्रारम्भ किया है। इस माला मे अबतक कई पुस्तकें निकल चुकी है। ये पुस्तकें न केवल रोचक है, बल्कि ज्ञानवर्द्धक भी है। हमें हर्ष है कि इन सभी पुस्तको को पाठको ने बहुत पसद किया है।

'रूसी युवको के बीच' इस माला की एक महत्वपूर्ण कडी है। इसके लेखक कुछ समय पूर्व भारतीय युवको का एक प्रतिनिधि-मडल लेकर रूस गये थे और रूसी जन-जीवन का उन्होने अच्छी तरह अध्ययन किया था। विभिन्न क्षेत्रो मे रूस की प्रगति का लेखक के मन पर जो असर पडा, वह उन्होने इस पुस्तक मे दिया है। विश्व का एक अत्यत शक्तिशाली राष्ट्र होते हुए भी रूस के सबध में लोगो के विचारो में वडी भिन्नता है। रोचक होने के साथ-साथ इस पुस्तक की खूबी यह है कि यह उस देश को समझने मे बहुत सहायता करती है।

इस पुस्तक का हिन्दी-अनुवाद श्री वैजनाथ महोदय ने किया है। उसके लिए हम उनके बहुत आभारी है।

हम आशा करते है कि यह तथा इस माला की सभी पुस्तकें पाठक चाव से पढेंगे और उनसे लाभान्वित होगे।

—मंत्री

आमुख

श्री रामकृष्ण बजाज कुछ समय पहले युवक-कांग्रेस के प्रतिनिधि की हैसियत से रूस की यात्रा पर गये थे। इस यात्रा मे वहा के जीवन आदि का उनके दिल पर जो असर पडा, वह उन्होने इस पुस्तक मे लिख दिया है। उनका विवरण साधारणत सहानुभूतिपूर्ण और, कही-कही, आलोचनात्मक है। पुस्तक काफी योग्यता और सूक्ष्मदर्शन के साथ लिखी गई है।

यत्र-विज्ञान की दिशा मे सोवियत सघ अद्भुत प्रगति कर रहा है। यदि इस प्रगति का उपयोग वहा की जनता का रहन-सहन ऊचा उठाने की ओर किया जायगा तो उन्हे आध्यात्मिक क्षेत्र मे आगे बढने के लिए काफी समय और मौका मिलेगा। मुझे विश्वास है कि ऐसा जल्दी ही होगा।

--राधाकृष्णन्

भूमिका

सोवियत सघ अपने जन्मकाल से ही ससार के लिए कुतूहल और दिलचस्पी का विषय बना हुआ है। अनेक वर्षों तक तो यह एक रहस्य-मय देश ही बना रहा। बहुत कम लोग वहा जाकर राजनैतिक और सामाजिक जीवन के क्षेत्र मे इस नये प्रयोग का निरीक्षण कर सकते थे। परन्तु अब वहा जाना अधिक सुलभ हो गया है। फलत: अब अधि-काधिक लोग वहा जाने लगे है। वहा की जीवन-पद्धति को कोई अच्छा समझे या बुरा, वह बरबस सबका ध्यान अपनी तरफ खीचती है। अपने विस्तार, अपनी शक्ति और वैज्ञानिक प्रगति के कारण ससार के भावी निर्माण मे वह निश्चय ही बडे महत्व का और सचेष्ट भाग अदा करेगा।

सोवियत सघ के बारे मे बहुत-कुछ लिखा गया है और विभिन्न प्रकार की राये भी प्रकट की गई है। परन्तु यह किताब एक ऐसे तरुण व्यवसायी का दृष्टिकोण सामने रखती है, जिसके परिवार ने स्वाधीनता-सग्राम में खुलकर भाग लिया है, जो गाधीजी के बहुत निकट सम्पर्क मे रहा और उनसे हमेशा मार्ग-दर्शन पाता रहा है। स्वय श्री रामकृष्ण बजाज युवक-आदोलन में सक्रिय भाग लेते रहे है।

मैं आशा करती हू कि यह पुस्तक व्यापक रूप से पढ़ी जायगी और इससे सोवियत सघ को अधिक अच्छी तरह समझने मे भी काफी मदद मिलेगी। हम सब शान्ति चाहते है, परन्तु उसके लिए राष्ट्रों का परस्पर एक-दूसरे को समझना और उनके बीच मैत्री होना बड़ा जरूरी है।

—इन्दिरा गांधी

प्रस्तावना

सन् १९५८ के जून मास मे अखिल भारत काग्रेस कमेटी के युवक-सगठन के प्रतिनिधि-मण्डल के नेता की हैसियत से सोवियत रूस जाने का मुझे अवसर मिला था। वहा से लौटने पर अपने मित्रो और साथियो के लाभार्थ मैंने सोवियत रूस के बारे मे अपने विचार कुछ लेखो के रूप मे लिखे। बाद मे जब यह तय किया गया कि इन्हें पुस्तक के रूप मे प्रकाशित करना चाहिए तब मैंने इन लेखो को फिर से देखकर कुछ व्यवस्थित किया और इनके साथ, अपनी इस यात्रा मे मैं रोज जो डायरी लिखता था, उसका भी कुछ भाग जोड दिया। अपनी उस यात्रा मे सोवियत सघ को देखकर मेरे दिल पर जो असर हुआ है, केवल वही पाठको के सामने रखने का प्रयत्न मैंने इस पुस्तक मे किया है। मैं वहा खुले दिल और दिमाग को लेकर गया था। वहा मैंने जो कुछ देखा और अनुभव किया, बिलकुल निष्पक्ष भाव से—बगर किसी अनुकूल या प्रतिकूल पूर्वाग्रह के—लिखने का यत्न किया है।

इस पुस्तक का उद्देश्य यह नही है कि ससार में जो विभिन्न प्रकार की आर्थिक और राजनैतिक प्रणालिया प्रचलित हैं, उनकी मैं तुलना करू, या सोवियत रूस मे जो महत्वपूर्ण बडी-बडी प्रवृत्तिया चल रही हैं और उनका वहा के जनजीवन पर जो असर हो रहा है, उनका कोई विस्तृत ब्यौरा मैं पाठको के सामने रखू। सोवियत रूस उद्योग और यत्रो के क्षेत्र मे बडी तेजी से आगे बढ रहा है। शिक्षा के क्षेत्र मे भी

वहा बहुत बड़े-बडे प्रयोग हो रहे है, जो बडे दिलचस्प है। इन पहलुओं को जितना और जिस प्रकार देखने और समझने का अवसर मिला, उसका केवल उल्लेख मात्र इसमें किया गया है। हमारा प्रतिनिधि-मण्डल युवको का था और सोवियत रूस के युवक-सगठन-समिति के निमन्त्रण पर हम वहा गये थे। इसलिए स्वभावत हमारा अधिकाश समय युवको से सम्बन्ध रखनेवाली प्रवृत्तियो के केन्द्रो को देखने एव युवको और उनके सगठनो तथा उनकी समस्याओ का अध्ययन करने ही मे बीता। इस वृत्तान्त मे हमारी यात्रा के इस पहलू पर अधिक ध्यान दिया गया है।

रूस की हमारी यह यात्रा अनेक कठिनाइयो और मर्यादाओ के बीच हुई। सबसे पहली बात, हमारे साथ हमारा अपना कोई दुभाषिया नही था। रूस मे भाषा की कठिनाई वहुत बडी है, क्योकि वहा बहुत कम लोग अग्रेजी या हिन्दी जानते है। इसलिए हमारे मेजबानो ने जो दुभाषिये हमे दिये, हमें मुख्यत उन्हीपर निर्भर करना पडा। फिर जन-साधारण के साथ स्वतत्रतापूर्वक घुलने-मिलने और उनके साथ बात-चीत करने का हमारे पास खाली समय भी नही था। इसलिए मैं चाहूगा कि पाठक इन बातो को ध्यान मे रखकर ही मेरे सस्मरणो को पढे।

सोवियत सघ की युवक-समिति के सदस्यो ने हमारा वहुत ध्यान रखा और बहुत प्रेम से हमारा आतिथ्य किया। उनके इस प्रेम और आतिथ्य के लिए मैं सचमुच उनका वहुत आभारी हू।

इस यात्रा के बाद हमारी 'वर्ल्ड असेंवली ऑव यूथ' की भारतीय कमेटी को सयुक्त राज्य अमरीका के 'यग एडल्ट कौसिल' की तरफ से अमरीका आने का निमन्त्रण मिला। इसलिए इसी प्रकार के एक युवक-प्रतिनिधि-मण्डल को लेकर वहा जाने का अवसर भी मुझे मिला। इन दो देशों की सामाजिक और राजनैतिक जीवन-पद्धतिया विल्कुल भिन्न होने पर भी मैंने देखा कि इनकी जनता में आश्चर्य-

जनक समता है। इसलिए 'रूस और अमरीका' इस शीर्षक से मैंने एक अध्याय इसमे और जोड दिया है।

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी ने युवको के प्रतिनिधि-मण्डल के अगुआ के रूप मे सोवियत रूस जाने का मुझे यह जो अवसर दिया और स्वय इन प्रतिनिधियो ने भी हमारी इस यात्रा मे मुझे जो सहयोग दिया, उसके लिए उनके प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित किये बगैर मैं नही रह सकता।

डॉ० राधाकृष्णन ने इस पुस्तक के लिए जो दो शब्द लिख देने की कृपा की, उसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हू।

उन दिनो अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी का युवक-विभाग श्रीमती इन्दिरा गाधी के मातहत था। हमारी इस रूस-यात्रा का श्रेय उन्हीको है। मेरी यह पुस्तक जिन दिनो छप रही थी तब वह अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की अध्यक्षा होने के कारण काम-काज मे बहुत व्यस्त थी, स्वास्थ्य भी उनका अच्छा नही था। फिर भी कृपापूर्वक कुछ समय निकालकर उन्होने इस पुस्तक की भूमिका लिखने का जो कष्ट किया, उसके लिए मैं उनका भी हृदय से आभारी हू।

—रामकृष्ण बजाज

विषय-सूची

रूसी युवकों
के
बीच

: १ :

सोवियत संघ का जन-जीवन

सोवियत सघ के युवक-सगठन की कमेटी के निमन्त्रण पर, अखिल भारत काग्रेस कमेटी के युवक-विभाग की तरफ से, एक सद्भावना-मण्डल भारत से सोवियत रूस गया। इसमे सात व्यक्ति थे—छ पुरुष और एक महिला। सन् १९५७ मे भारत मे हुए युवक-काग्रेस के लखनऊ-अधिवेशन के अवसर पर सोवियत रूस की इस कमेटी के प्रतिनिधि हमारे निमन्त्रण पर भारत आये थे। तभी उन्होने हमे सोवियत रूस आने के लिए निमन्त्रण दिया था। हमारी यह यात्रा इसी निमन्त्रण का परिणाम थी। हमारा प्रतिनिधि-मण्डल रूस मे एक महीना रहा और उसने मास्को, लेनिनग्राड, याल्टा (जो क्रीमिया मे काले समुद्र के तट पर स्थित एक विश्राम-नगर है), युक्रेन की राजधानी कीव और उज्बेकिस्तान की राजधानी ताशकन्द की यात्रा की।

हम उनके मेहमान थे, इसलिए सोवियत जीवन के विविध पहलुओ के बारे में हम स्वभावत· उनसे वे सब प्रश्न नही पूछ सकते थे, जो हमारे मन मे उठते थे। हम उन्हे किसी तरह के पसोपेश मे नही डालना चाहते थे। हमारी सबसे बडी कठिनाई तो यह थी कि हमारे साथ हमारा अपना दुभाषिया नही था। उन्होने हमें हिन्दी और अग्रेजी जानने-वाला दुभाषिया दिया था। हमें पूर्णत. उसीपर निर्भर रहना पड़ा। फिर, हमारा अधिकाश समय उन्होंने हमारे लिए अपनी कमेटी की तरफ से जो कार्यक्रम बना दिया, उसीमे चला गया। इसमें भी 'सोवियत यूथ

कमेटी' के लोगो से हम सदा घिरे हुए रहते थे। इस कारण हमे सोवियत यूनियन के आम नागरिक के सपर्क मे आने तथा उससे दिल खोलकर बातचीत करने का न तो अवसर मिला और न सुविधा ही। इसके अतिरिक्त भाषा की एक बडी दीवार तो हमारे बीच थी ही।

इन तमाम कठिनाइयो के बावजूद हम सोवियत रूस मे बहुत-सी चीजें देख सके। कुछ अच्छी थी, कुछ इतनी अच्छी नही भी थी। इन अनुभवो को सुनाते वक्त हमारे मेजबानो के प्रति कही अन्याय न हो जाय, इसका भी अवश्य ध्यान रखना है। साथ ही अपने देश-भाइयो के प्रति भी हमारा कर्त्तव्य है कि वे सारी बातें हम उन्हे बता दें, जो हमने अपनी इस यात्रा मे वहा देखी तथा अनुभव की। इसलिए मैं बहुत सक्षेप मे अपने ये अनुभव यहा लिख रहा हू। यह करते हुए मेरा प्रयत्न यही रहेगा कि मैं अपने-आपको किसी भी प्रकार की पूर्वधारणा से प्रभावित नही होने दू। दरसल हम बिना किसी पूर्वधारणा के ही सोवियत सघ गये थे और हमारा उद्देश्य ऐसे देश के जन-जीवन का बिल्कुल निष्पक्षता से अध्ययन करना था, जो जितना विवादास्पद है उतना ही शक्तिशाली भी। हम यह भी जानते हैं कि उसके बारे मे ससार मे अनेक प्रकार की धारणाए भी है। अत हमने खासतौर पर यह प्रयत्न किया कि हम वहा की हर बात को निष्पक्ष दृष्टि से देखें और उन्हें समझने का यत्न करें।

सबसे पहले हम मास्को गये। इसलिए यह उचित होगा कि इस राजधानी की जिन चीजो ने हमे सबसे अधिक प्रभावित किया, पहले उन्हीकी चर्चा करें।

मास्को का विश्वविद्यालय अपने-आपमे एक बहुत बडी सस्था है। उसके अन्तर्गत तेरह कालेज हैं—छ प्राकृतिक विज्ञान के और सात अन्य विषयो के। इनमे कुल २२००० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। इनमे से १५००० तो बाकायदा दिन के वर्गो मे पढ़ते है और २००० शाम को लगनेवाले वर्गो मे आते है। शेप ४५०० पत्र-व्यवहार के माध्यम से

पढते और परीक्षा में वैठते है। विश्वविद्यालय की इमारत बहुत भव्य और प्रभावशाली है। इसमे हजारो कमरे और १५० लेक्चर हाल हैं। सुन्दर वगीचे, उपवन और खेल के मैदान भी है।

मास्को मे जमीन के अन्दर चलनेवाली रेल-गाडिया, जिन्हे 'मैट्रो' कहते है, सोवियत सघ की एक आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धि है। यूरोप और एशिया के देशो मे वनी हुई ऐसी रेलो की अपेक्षा यह अधिक उत्तम और सुन्दर है। अमरीका में जो ऐसी रेलें है, उनको अभी तक मैंने नही देखा है। फिर भी उनके बारे मे मैने जो कुछ सुना है, उससे मैं कह सकता हू कि मास्को की रेल-व्यवस्था उससे भी बढ-कर है।[1]

इसकी लम्बाई केवल ७० किलोमीटर (४३.५ मील) है, जिसपर ४७ स्टेशन है। इनकी बनावट बहुत सुन्दर है। लगभग सारे स्टेशनो पर ऊपर लाने-लेजानेवाली बहुत अच्छी चलती हुई सीढिया लगी है। हर स्टेशन सगमरमर का बना है और उनकी रचना अलग प्रकार की है। इनकी छतो मे सुन्दर रग-बिरगी बत्तियो के झूमर लटक रहे है। दीवारो पर सुन्दर कलापूर्ण चित्र बने हुए है। दीवारें मोज़ेक की और फर्श भी सगमरमर का चिकना तथा चमकदार है। सारी रचना इतनी सुन्दर और कलापूर्ण है कि किसी भी देश को उसपर गर्व हो सकता है।

मास्को मे एक स्थायी औद्योगिक तथा कृषि-प्रदर्शिनी है। मुख्य मण्डप बहुत बडा है। उसके अलावा रूस के प्रत्येक गणराज्य के लिए अलग-अलग मण्डप बने हुए है। भिन्न-भिन्न योजनाओ के अतर्गत प्रत्येक राज्य मे कितना काम हुआ है, इसके चित्र 'ग्राफ' द्वारा बताये गए है। इन ग्राफो को समय-समय पर बदल भी दिया जाता है, जिससे देखनेवालो को ताजा-से-ताजा जानकारी मिलती रहे, इनमे बताये गए आकडे बडे प्रभावोत्पादक प्रतीत होते है।

---

[1] इसके बाद मैं अमरीका गया था और अब कह सकता हू कि सोवियत रूस की इन रेलों के वारे में मेरा अनुमान सही है।

मास्को मे एक विशाल क्रीडागण (स्टेडियम) भी है । इसे 'लेनिन स्पोर्टस स्टेडियम' कहते हैं । सन् १९५७ का युवक-समारोह यही हुआ था । यह एक देखने लायक चीज है । मुख्य स्टेडियम बडा है, जिसमे लगभग एक लाख दर्शक बैठ सकते हैं । उसके अलावा बच्चो के खेलो के लिए अखाडे, तैरने के तालाब, नृत्यगृह, नाट्य-गृह, हिम-क्रीडा-गृह इत्यादि भी हैं ।

मास्को की नई गृह-योजना भी बडी आकर्षक है । हवाई अड्डे से मास्को शहर के बीच एक नया नगर बस रहा है । सोवियत सघ मे मकान सस्ते है । परन्तु अभी इनकी सख्या बहुत कम है, इसलिए मकानो की बहुत तगी है । बहुत-से परिवार एक कमरे मे ही अपनी गुजर कर रहे हैं ।

प्रत्येक नई इमारत मे हजारो कमरे होते है । यदि आप अपने किसी मित्र से वहा मिलने जाना चाहते हैं तो आपको न केवल सडक का और इमारत का नाम मालूम होना चाहिए, बल्कि मजिल, मकान और प्रवेश-द्वार की सख्या भी मालूम होनी चाहिए ।

उद्योग के क्षेत्र मे रूस बडी तेजी से आगे बढ रहा है । इस क्षेत्र मे वह ससार का नेतृत्व करने के प्रयत्न मे लगा हुआ है । सारे देश को उद्योग-मय बनाने का वहा निश्चय कर लिया गया है । इसलिए सारी शक्ति अधिक-से-अधिक उत्पादन करने मे लगाई जा रही है । इस्पात का उत्पादन वहा बहुत तेजी से बढ रहा है । पिछले दस वर्षो मे वहा इसका उत्पादन १,३०,००,००० से बढकर ५,२०,००,००० टन प्रति वर्ष हो गया है । इसका अर्थ है ४०० प्रतिशत की वृद्धि ।

खेती मे भी रूस बडी तेजी से प्रगति कर रहा है । मुझे बताया गया कि खेती की चीजो मे उनका उत्पादन अमरीका की बराबरी पर पहुच चुका है । वे हर क्षेत्र मे अमरीका की बराबरी करना चाहते है । सच तो यह है कि वे अपना रहन-सहन का स्तर भी अमरीका के बराबर ले आना चाहते हैं, बल्कि उससे भी आगे बढ जाना

चाहते है। युक्रेन उनका अन्नागार है। उन्होने हाल ही मे निश्चय किया है कि इस राज्य की कुल बिना काश्त जमीन के पाचवें हिस्से पर केवल अगूरो की ही खेती हो। स्पष्टत इसका अर्थ यह है कि वहा गेहू की कमी नही है। इसीलिए तो शराब पैदा करने के लिए अगूरो की खेती बढाई जा रही है। इन दिनो वहा शराब की माग बढती जा रही है।

रूस के जेट हवाई जहाज बहुत अच्छे है। वे आसमान मे आठ-आठ, नौ-नौ मील की ऊचाई पर चले जाते है। गति भी बहुत तेज है। बेशक उनमे सुविधाए बहुत नही होती। खातिरदारी भी कम और एकदम मामूली है। उदाहरण के लिए मास्को से ताशकन्द हम जिस जेट हवाई जहाज मे गये, उसमे हाथ-मुह धोने के कमरे के नल मे गरम पानी का प्रबन्ध भी नही था। हाथ वगैरा धोने के लिए साबुन आदि तक का कही पता नही था। परन्तु जेट की उडान का क्या कहना! बहुत आरामदेह, धक्को वगैरा का नाम तक नही।

अब उनके अतिथि-सत्कार की बात सुनिये। इन लोगो ने जिस प्रकार हमारा सत्कार किया, शब्दो मे उसका वर्णन करना बड़ा कठिन है। विशिष्ट अतिथियो के समान हमे रक्खा गया। हमारी हर बात का ख्याल रखा जाता था। हम जहा कही गये, हर्षध्वनि के साथ हमारा स्वागत किया गया। सम्मान की जगह पर बैठाया गया। कीव मे तो जनता ने अपने प्रेम से हमे अभिभूत कर दिया। यहातक कि वहा हमारे लिए होटल मे लौटना भारी हो गया। रूस की जनता में भारत के लिए जो प्रेम है, उससे हम बहुत प्रभावित हुए। हमे बताया गया कि चीनियो के बाद उनका सबसे अधिक प्रेम भारतीयो के प्रति ही है। कुछ लोग कह सकते है कि यह प्रेम दरसल बनावटी होगा। पहले से सूचनाए दे दी गई होगी कि हमारा इस प्रकार से स्वागत वगैरा किया जाय। परन्तु मैं कह सकता हू कि यह बात हर समय लागू नही होती। फिर भी अधिकाश लोगो के व्यवहार मे और हमसे मिलने के तरीको

मे मुझे एक प्रकार की समानता जरूर दिखाई दी। इसका कारण यह रहा होगा कि उन्हे इस बात की तालीम दे दी गई है कि किस प्रसग पर कैसा वर्ताव करना चाहिए। विशेष परिस्थितियो मे, सारे-के-सारे समूह की, एक विशेष प्रकार से बर्ताव करने की आदत-सी हो गई है। इसलिए आज जो सारी जनता दिल खोलकर आपका स्वागत कर सकती है, कल यदि उनके नेताओ की नीति मे परिवर्तन हो जाय तो वही जनता, उतने ही जोरो से, आपसे द्वेष भी करने लग जायगी।

सोवियत युवक-समिति ने हमे स्पष्ट रूप से बता दिया था कि हम विना किसी रोक-टोक के जहा चाहे जा सकते है और लोगो से जो चाहे बातचीत कर सकते है। जब भी कभी इसका अवसर मिला, हमने इसका लाभ उठाया। हमारे प्रतिनिधियो को जब-जब समय मिलता वे सडको पर निकल जाते, लोगो से मिलते या दूकानो मे जाकर चीजें खरीदते। बहुत-से लोग हमे ऐसे मिलते थे, जो हमसे बातचीत करना चाहते थे और भारतवासियो के जीवन और रहन-सहन से अवगत होना चाहते थे। अपने देश की स्थिति भी हमे बताना चाहते थे। इनमे से कुछ विद्यार्थी या कालेजो के प्रोफेसर होते। वे अग्रेजी जानते थे। वे स्वय हमारे पास आते, दुकानदारो की बात हमे अग्रेजी मे समझाते और खरीद-फरोख्त मे हमारी मदद भी करते। जब उन्हे पता लगता कि हम भारत से आये है तो उन्हे बडी खुशी होती और वे कुछ अधिक खुलकर बातें करने लग जाते। परन्तु इस प्रकार प्रकट रूप से हमारे निकट आने और बातचीत करने की उनकी इच्छा के बावजूद, मैं देखता कि उनके दिलो मे कही कुछ झिझक छिपी हुई है, जो उन्हे कुछ कहने या करने से रोक रही है। एक लम्बे अर्से से अपने-आपको दबाये रखने के कारण शायद उनके व्यवहार मे यह अटपटापन आ गया हो। इनमे से कुछ लोगो से तो हमने कहा भी कि हम उनके घरो पर जाना पसन्द करेंगे और विशेप रूप से देखना-जानना चाहेंगे कि रूसी लोग अपने घरो मे किस प्रकार रहते है। उनका जीवन

क्या है ? परन्तु इसमे उनकी प्राय अनिच्छा ही प्रकट हुई । इन बुद्धि-जीवियो के व्यवहार से हमे कुल मिलाकर यही लगा कि रूस ऊपर से जैसा कुछ दिखता है, भीतर से बहुत-सी बातो मे उसका रूप दूसरा ही है । प्रारम्भ में जिन कठिनाइयो का उल्लेख किया जा चुका है, उनके कारण वे लोग जो बाते हमसे कर जाते थे, उनकी प्रमाणिकता प्राप्त करने का हमारे पास कोई साधन नही था ।

इनकी बातचीत से हमे जो बाते मालूम हुई, उनमे से बहुत-सी गभीरतापूर्वक विचार करने योग्य है । एक महत्वपूर्ण बात तो उन्होने यह बताई कि रूस की सपूर्ण आबादी मे कम्यूनिस्टो की सख्या १०-१५ प्रतिशत से अधिक नही है । यह स्वाभाविक भी है । किसी भी पार्टी की सदस्य-सख्या आबादी का एक छोटा अश ही हो सकती है । परन्तु ध्यान देने की बात तो यह है कि उनकी राय मे कम्यूनिस्ट पार्टी के समर्थको की सख्या भी बहुत अधिक नही है । कुल मिलाकर वे अल्प सख्या में ही हैं । फिर भी रूस का शासन साम्यवादियो के ही हाथो मे है । इतनी छोटी सख्या रूस के बहुसख्यक समाज पर शासन कर रही है । उनका मत था कि इसी वजह से चालीस वर्ष के साम्यवादी दल के शासन के बाद आज भी वहा गोपनीयता और आतक का साम्राज्य छाया हुआ है । बेशक, स्तालिन के बाद परिस्थिति जरूर कुछ बदली है । इनके कथनानुसार आज भी रूस के नागरिको को विदेशो मे आने-जाने की आजादी नही है । प्रतिनिधियो के रूप मे जो बाहर जाते हैं, वे सब केवल साम्यवादी ही होते है । साधारण नागरिक तो यह सोच भी नही सकते कि उन्हे देश से बाहर जाने के लिए पासपोर्ट मिल सकता है । फिनलैंड की सरहद तो रूस से मिली हुई है । परन्तु वहा भी वे नही जा सकते । तो भी, इन दिनो कम्यूनिस्टो ने जो बडी-बडी सफलताए पाई है, इसका उन्हे भान है । उन्हे गर्व है कि ससार को दिखाने के लिए उनके पास भी अब कुछ है । इसलिए अब दूसरे देशो के लिए, खासकर अल्प-विकसित देशो के लिए, उन्होने अपने देश के दरवाजे खोल

दिये है। परन्तु वे यह नही चाहते कि रूस के साधारण नागरिक रूस से बाहर प्रगतिशील देशो मे जाय और उनके जीवन से अपने जीवन की तुलना करें।

जितने दिन मैं रूस मे रहा, इगलैंड के साम्यवादी दल के 'डेली वर्कर' अखबार को छोडकर मुझे किसी दूसरे देश का एक भी अखबार नही दिखाई दिया। स्वय रूस के पत्रो मे ऐसे समाचार या विचार आपको कही नही मिल सकते, जो शासन या कम्यूनिस्ट पार्टी के विरोध मे हो। इनमे प्राय शासन और पार्टी की प्रशसा, उत्पादन के आकडे, सफलताओ का वर्णन और ख्रुश्चोव तथा अन्य सोवियत नेताओ के भाषणो के ही विवरण प्रमुख होते हैं। यहा के अखबारो ने आइजन-होवर को भेजे ख्रुश्चोव के पत्र तो पूरे-के-पूरे छाप दिये, परन्तु आइजन-होवर ने ख्रुश्चोव को जो पत्र भेजे, उन्हे नही छापा। हमसे मिलनेवाले बहुत-से रूसियो को जब हमने बताया कि भारत के अखबार पण्डित नेहरू या किसी नेता या सरकार की भी टीका कर सकते है और उनके विरुद्ध वे लिख भी सकते है, ऐसा करने मे उन्हे कोई भय या खतरा महसूस नही होता, तो उन्हे बडा आश्चर्य हुआ। उन्होने कहा कि भारत के निवासी जैसी स्वतत्रता का उपभोग कर रहे है, वैसी स्वतत्रता मिलने की आशा तो हम स्वप्न मे भी नही कर सकते। परन्तु चीन के जितनी आजादी मिल जाय तो भी हम अपना अहोभाग्य समझेंगे।

हमने उनसे एक सीधा-सा सवाल पूछा कि यदि कम्यूनिस्ट वहा अल्प सख्या मे है, और फिर भी आपपर राज्य करते है तो आप कम्यू-निस्टो को चुनावो के द्वारा हटा क्यो नही देते, खास तौर पर तब जब-कि आपके सविधान मे जनतत्री चुनावो का प्रविधान है ? उन्होने कहा कि सविधान मे जनतत्री चुनावो का प्रविधान होना एक बात है और उसपर अमल होकर सचमुच जनतत्री चुनावो का हो जाना एकदम दूसरी बात है। जाहिर है कि किन्ही भी पाच आदमियो की राय एक-सी नहीं हो सकती। इसलिए मतभेद तो होगे ही। इसलिए राज-

नीति के क्षेत्र मे अल्पमत और वहुमत भी होगे ही। परन्तु रूस मे विरोध होता ही नही। वास्तविकता यह है कि कम्यूनिस्टो का एक दल पहले से यह निश्चय कर लेता है कि फलां जगह के लिए कौन खडा होगा। वस, फिर दूसरे किसीको खड़ा होने ही नही दिया जाता। फिर भी यदि सविधान के प्रविधान के आधार पर कोई खड़ा होने की हिम्मत कर वैठता है तो उसका जीना दूभर कर दिया जाता है। वह हाथ टेक देता है। यहा कम्यूनिस्ट पार्टी इतनी शक्तिशाली है कि कामरेड मोलोतोव, मालेनकोव, वुलगानिन और जुकोव जैसे प्रभावशाली पुरुष उसके सामने झुक जाते है। तव इस आतक का मुकावला एक साधारण आदमी कैसे कर सकता है ? इसलिए रूस की जनता ने समझ लिया है कि इस अल्पमत की सत्ता के सामने सिवा सिर नीचा करके पडे रहने के उसके लिए कोई चारा नही है। यही वजह है कि रूस में जनसाधारण को इस वात मे कोई दिलचस्पी नही रह गई है कि उनपर कौन राज कर रहा है और कैसे कर रहा है। इसकी अपेक्षा उन्हे अपने दैनिक जीवन में अधिक रस है। उनकी दिलचस्पी इस वात मे अधिक हो गई है कि उनके रोजमर्रा के रहन-सहन का स्तर किस प्रकार अधिकाधिक ऊचा हो।

कोउ नृप होउ हमहि का हानी
चेरी छाडि अब होव कि रानी

वे जानते हैं कि स्पुतनिक का आविष्कार रूस की एक वहुत वडी सफलता है। परन्तु उन्हे लगता है कि उससे रूस के साधारण मनुष्य का क्या भला हुआ? उन्हे इस वात का दुख और शिकायत है कि उनके रहने के लिए पर्याप्त मकान नहीं है। वहा एक-एक कमरे मे साधारणत: आठ-आठ, दस-दस मनुष्य रहते हैं, जिनमे न नहाने-धोने की और न पाखाने की पर्याप्त सुविधाए होती है। इनके लिए उन्हे लम्वी कतारें वनाकर वडी देर तक खडे रहना पड़ता है। वे जानते है कि एक स्पुतनिक के वनाने पर इतना पैसा लग जाता है कि जितने में एक पूरा-का-

पूरा नया शहर बस जाय। अपने प्रजाजनो की सुख-सुविधाओ का प्रबन्ध करने की बजाय सोवियत सरकार फौज और शस्त्रास्त्रो पर अधिक-से-अधिक धन खर्च कर रही है। इन स्पुतनिको के कारण रूस के निवासियो की इज्जत ससार मे भले ही बढ गई हो, परन्तु उनके अपने घर मे उनका सुख रत्तीभर भी नही बढा है।

सोवियत सघ मे प्रत्येक मनुष्य से खूब काम लिया जाता है। साधारण मनुष्य की आय इतनी नही कि वह अपनी सारी जरूरतो को पूरी कर सके। निर्धारित मात्रा से अधिक उत्पादन करने पर ही उसे न्यूनतम मजदूरी से अधिक मजदूरी मिल सकती है। जहातक उसके उदर-पोषण और जीवन-निर्वाह की नितात आवश्यक वस्तुओ का प्रश्न है, वे चीजें तो सरकारी बाजार मे सस्ते दामो मे उसे मिल जाती हैं। हर व्यक्ति के लिए निश्चित मात्रा से ज्यादा वे ही चीज चाहिए, तब भी उसे अधिक भाव देकर वे चीजें मिलती है। अन्य घरेलू और रोजमर्रा की आवश्यक चीजो के दाम भी बहुत होते है। इससे मजदूरो और अन्य नौकरी-पेशा लोगो के लिए अपनी आमदनी हर तरह से बढाने की कोशिश करते रहना अनिवार्य-सा ही हो गया है।

कारीगरो से अधिक मेहनत कराने का एक और तरीका अख्तियार किया जाता है। मान लीजिये कि आठ घटे मे किसी वस्तु का उत्पादन कम से-कम एक सौ की सख्या मे करने का तय करके उसपर कम-से-कम मजदूरी के दर तय कर दिये गए। अच्छे कारीगर १२५-१५० तक उस वस्तु को बनाकर कुछ अधिक कमाई करने लगते हैं। कुछ समय बाद कम-से-कम उत्पादन की सख्या एक सौ से बढाकर १२५ या १५० की कर दी जाती है। अब वह इससे बढकर उत्पादन करे तब ही उसे अधिक मजदूरी मिल सकेगी। इस तरह वहा के मजदूरो पर काम करने का बोझा बढता ही जाता है। उन्होने बताया कि इससे अधिक मजदूरो व अन्य काम करनेवालो का शोषण और क्या हो सकता है।

इसलिए वह अपने काम के समय मे तो अधिक-से-अधिक परिश्रम

करने की कोशिश करता ही है, साथ ही काम के इन निश्चित आठ घण्टो के कठिन परिश्रम के बाद भी वह वही या अन्य कही, कुछ अधिक काम करने की कोशिश करता है, ताकि कुछ अधिक कमा सके।

सोवियत जनता का रहन-सहन का स्तर मामूली ही है। बेशक, अनेक बातो मे वह भारत की जनता की अपेक्षा जरूर ऊचा है। परन्तु यदि यूरोप के अन्य देशो की जनता के जीवन-मान से उसकी तुलना की जाय, और उसीके साथ तुलना की जानी चाहिए, क्योकि वह मुख्यत एक यूरोपीय राष्ट्र है, तो कहना होगा कि उसका स्तर बहुत नीचा है। यह सच है कि उनके यहा बेकारी की समस्या नही है। उनके पास ससार की कुल जमीन का छठा हिस्सा है और उनकी आवादी केवल बीस करोड है, जो कि ससार की आबादी का सिर्फ दसवा हिस्सा होगी। अपने नागरिको के लिए उनके पास काफी रोजगार है। कभी-कभी तो वे काम करनेवाले आदमियो की तगी भी अनुभव करते है। यद्यपि हर आदमी को वहा काम मिल जाता है, फिर भी वहा गरीब और अधभूखे लोग आम तौर पर दिखाई दे जाते है। कभी-कभी तो भिखारी के दर्शन भी हो जाते है।

यूरोप के अन्य देशो की अपेक्षा रूस की जनता का जीवन-स्तर वहुत नीचा होते हुए भी यह सच है कि रूस मे रोजगार सवको मिल जाता है। हमे तो यह बात अपने-आपमे बहुत बडी लगती है, क्योकि हम एशिया-अफ्रीका के लोग इस क्षेत्र मे वहुत पिछडे हुए है। परन्तु जब यूरोप के देशो के साथ उनकी तुलना करते है तो ऐसी कोई खास वात नजर नही आती। अन्य देशो मे भी अधिक बेकारी नही है, और न उनका रहन-सहन गिरा हुआ है। इस दृष्टि से रूस ने कोई वहुत वडी सफलता प्राप्त करली है, ऐसा नही कहा जा सकता।

रूस की आवोहवा वहुत अच्छी है। परन्तु उसके अनुरूप वहां के लोगो के चेहरो पर ताजगी नही दिखाई देती। इसका कारण यही है कि साधारण नागरिक को जीवन का आनन्द लेने के लिए फुरसत और विश्रान्ति

बहुत कम मिल पाती है। कारखानो, खेतो, स्कूल, फैक्टरी आदि मे स्त्रियो को भी उतना ही काम करना पडता है, जितना पुरुषो को। इसके अलावा उनको अपनी गृहस्थी की देख-भाल भी करनी पडती है। इस तरह उनपर काम का बोझ पुरुषो से अधिक पड जाता है। अत हमने देखा कि इस कठिन परिश्रम के कारण रूस की अधिकाश स्त्रियो के चेहरो से रमणी सुलभ कोमलता लापता हो गई है।

वहा उपभोक्ता वस्तुओ की कमी सर्वत्र लगी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे इस कमी का अनुभव होता था। भोजन और मकान को छोड-कर, जो कि जीवन की प्राथमिक आवश्यकताए है, वहा अन्य चीजें आसानी से प्राप्त नही होती। कीमतें भी उनकी काफी ऊची हैं।

रूस मे एक अच्छे गरम सूट की कीमत दो हजार रूबल (१ रु० = १ २ रूबल) होती है। जिसके पास दो अच्छे गरम सूट हैं, वह काफी पैसेवाला व्यक्ति माना जाता है। सूती कमीज की कीमत साठ रूबल और रेशमी कमीज की कीमत डेढसौ रूबल होती है। जूतो की एक जोडी, जो भारत मे तीस रुपये मे मिल जाती है, रूस मे उसकी कीमत ढाईसौ रूबल होती है। युक्रेन के योजनामत्री ने हमे बताया कि रूस मे जूतो का औसत उत्पादन वर्ष मे फी आदमी सात पडता है, जो रूस की आबोहवा को देखते हुए बहुत ही कम है।

रूस मे स्त्रियो के एक मामूली चमडे के हैंडबैग की कीमत चौरासी रुपये पडती है और एक साधारण तौलिया बयालीस रुपये मे मिलता है। छोटे-छोटे खट्टे नीबू वहा तेरह रुपये के सेरभर मिलते है, और एक अच्छे बडे नीबू के तीन रुपये लगते है। बडी डबल रोटी की कीमत तीन रुपये होती है और दोसौ ग्राम मक्खन की कीमत पाच रुपये। इतने ही वजन के शुद्ध घी के सात रुपये होते है। मक्खन निकला हुआ दूध तीन रुपये प्रति सेर और शुद्ध दूध दस रुपये सेर मिलता है। दात के मामूली ब्रुश की कीमत वहा तीन रुपये है। साबुन की जिस टिकिया से हम यहा कपडे धोते है, वह वहा नहाने के काम मे ली जाती है और

उसकी कीमत होती है तीन रुपये। सूती मोजो की एक जोडी के नौ रुपये लगते है और केनवस के जूतो की कीमत सताईस रुपये है। बिजली का सामान जरूर यहा की तुलना मे वहा सस्ता मिलता है। बिजली से चलनेवाला अच्छा ग्रामोफोन, जिसमें लाउडस्पीकर भी लगा होता है, वहा २६२ रुपये मे मिल जाता है और टेलीवीजन का सैट ६६६ रुपये मे।

हा, शिक्षा-सम्बन्धी सुविधाए वहा खूब है। हर नागरिक को अपनी बुद्धि और प्रतिभा का विकास करने का पूरा अवसर मिलता है। परन्तु जहा-तक निःशुल्क डाक्टरी सहायता का प्रश्न है, हमे बताया गया कि वह अभी सन्तोषजनक नही हो पाई है। हर डाक्टर को प्रतिदिन चालीस से अधिक परिवारो की देख-भाल करनी पडती है। फलतः इलाज के लिए जानेवाले मरीजो को देर-देर तक ठहरना पड़ता है। इसलिए जिनके पास साधन है, वे खानगी डॉक्टरो से अपना इलाज करवा लेते है। यद्यपि रूसियो ने औषधि-विज्ञान और शल्य-चिकित्सा मे काफी प्रगति कर ली है और वहा डॉक्टर भी बहुत बडी सख्या मे हैं, फिर भी नि शुल्क डॉक्टरी सहायता का स्तर कुछ नीचा ही है। इसीकी वजह से इस तरह का काम करनेवाले सरकारी डॉक्टरो का वेतन केवल छ सौ रूबल प्रतिमास है, जबकि एक साधारण टैक्सी ड्राइवर का वेतन वहा इससे लगभग दूना होता है।

क्रीमिया मे घूमते हुए हमने देखा कि बहुत-से मकानो के साथ-साथ कुछ अधिक जमीन भी जुडी हुई है। यह मकानवालो की निजी जमीन थी। कुछ लोग इन मकानो में स्थायी रूप से रहते थे। दूसरे मकान ऐसे लोगो के थे, जो शहरो मे रहते है।

कभी-कभी एकान्तवास और खुली हवा का आनन्द लेने की उनकी इच्छा होती है तो वे यहा आकर रहते है। यहा अपनी इन जमीनो पर वे कुछ अतिरिक्त उत्पादन भी कर लिया करते हैं और इसे खुले बाजारो मे—वहा भी बाजार ही कहते है—बेच देने का उन्हे पूरा

अख्तियार है। यो सारे देश मे, गाव-गाव मे, सरकारी वाजार और सरकारी दुकानें होती है, जिनमे सामूहिक खेतो की उपज सरकार द्वारा निर्धारित भावो पर वेची जाती है। जिनके पास सुविधा है, वे अपना माल खुले बाजारो मे भी वेच सकते है और उसकी जो कीमत मिले, ले सकते है। आम तौर पर इन खुले बाजारो मे माल ऊची कीमत मे बिकता है, कारण कि एक तो यह माल अधिक अच्छा होता है और दूसरे इनमे बे-मौसम की चीजें भी मिल जाया करती है।

सोवियत सघ मे समानता नही है, यह बात तो एकदम एक नये आदमी को भी दीख जाती है। यूक्रेन के योजनामन्त्री ने स्वय स्वीकार किया कि वहा न्यूनतम मासिक वेतन छ सौ रूबल है और अधिकतम वेतन पद्रह हजार रूबल। स्वय सरकारी आँकडो के अनुसार वहा उच्च-तम और न्यूनतम वेतन का अनुपात २५ १ होता है। परन्तु मैंने स्व-तत्र रूप से जो पूछ-ताछ और जाच की, उससे पता चला कि यह अनु-पात अधिक नही तो कम-से-कम १०० १ तो है ही।

मैंने तीन सौ से कम रूबल पर लोगो को काम करते देखा है। दूसरी तरफ फौज के कुछ अधिकारियो और मन्त्रियो आदि को मासिक तीस हजार रूबल तक वेतन मिलता है। इसके अलावा इन लोगों को और भी कितनी ही सुविधाए मुफ्त मे मिलती है, जो कि साधारण आदमियो को नही दी जाती, जैसे निवास, मोटर इत्यादि। वे अपनी वचत वैंक मे जमा करवा सकते है और इस प्रकार अपनी निजी सम्पत्ति को वढा सकते है। पार्टी के उच्चाधिकारियो के ग्राम-निवास अलग होते हैं, जहा वे सप्ताह के अत मे जाकर विश्राम करते है। शहरो मे भी इन लोगो के वडे-वडे निवास-स्थान होते हैं, जिनमे कई कमरे होते है, जवकि साधारण लोगो को वहुत तग और छोटे मकानो मे अपनी जिन्दगी वितानी पडती है।

एक वात और भी ध्यान देने योग्य है। वह यह कि दो हजार से कम मासिक आय पर आयकर की दर १० प्रतिशत है, जवकि सबसे अधिक

कमाई करनेवालो पर ऊची-से-ऊची दर केवल १३ प्रतिशत ही है।

जिन परिवारो मे बच्चे है, उनमे काम करनेवाली नौकरानियो को चौबीस घण्टे की नौकर माना जाता है। रविवार को जरूर छुट्टी होती है। इनको भोजन के अलावा तीन सौ रूबल मासिक वेतन मिलता है। होटलो मे और अन्यत्र जब-जब भी हमने नौकरो को इनाम (टिप) देना चाहा, तब-तब उन्होने इसको पसद किया, परन्तु यह इनाम उन्होने लिया तभी जब आस-पास कोई देखनेवाला नही होता था।

कारखाने मे काम करनेवाले एक साधारण मजदूर को मासिक छ सौ से आठ सौ रूबल तक वेतन मिलता है। डॉक्टर को भी छ सौ रूबल ही मिलते है। बी० ए० पास लेक्चरर को प्रायः बारह सौ से लेकर उन्नीस सौ रूबल तक वेतन दिया जाता है और एम० ए० पास लेक्चरर को पच्चीस सौ से बत्तीस सौ तक। असिस्टेण्ट प्रोफेसर का वेतन दो हजार से लगाकर चार हजार रूबल मासिक तक जाता है। डॉक्टरेट की उपाधि-प्राप्त प्रोफेसर को लगभग पैंतालीस सौ रूबल दिये जाते हैं। यदि वह आशिक समय ही काम करता है तो उसे सोलह सौ रूबल मासिक मिलते है। 'इस्टीच्यूट ऑव इटरनेशनल अफेयर्स' के डायरेक्टर का वेतन सात हजार रूबल है और ऐकेडेमीशियन को बीस हजार से लेकर तीस हजार रूबल वेतन दिया जाता है।

हमे यह भी बताया गया कि नियुक्तियो और तरक्कियो मे भी पक्षपात और सिफारिशे चलती है। विभागाध्यक्ष प्राय. अपने-अपने विषय के विशेषज्ञ होते है, परन्तु इनमे भी साम्यवादी दल के सदस्यो को प्राथमिकता दी जाती है। सारे महत्वपूर्ण पदो, जैसे कारखानो के प्रबन्धक या सचालक, शिक्षा-सस्थाओ के अध्यक्ष आदि पर केवल साम्यवादी ही नियुक्त किये जाते है। परन्तु इन सारी बातो की पडताल करके देखना हमारे लिए आसान नहीं था।

हमे सबसे अधिक आश्चर्य तो यह सुनकर हुआ कि स्वय मास्को शहर की मुख्य सडको के एक हिस्से मे सिर्फ पार्टी और शासन के उच्च-

अधिकारियो की गाडिया ही आ-जा सकती है। आम सडको पर भी केवल इनकी ही गाडिया हॉर्न बजा सकती है।

हमे यह भी पता लगा कि सरकारी अधिकारियो और जन-साधारण के वीच सपर्क नही के बराबर है। युक्रेन का सचिवालय एक बहुत बडे भवन मे है। इस राज्य के योजना-मन्त्री से मिलाने के लिए जब हमे वहा ले जाया गया तो इमारत के इस कोने से लेकर उस कोने तक, सिवा दरवान और मत्री महोदय के सचिव के, हमे एक भी आदमी नही दिखाई दिया। यह तो नही माना जा सकता कि जनता की हर तकलीफ को सरकार खुद ही दूर कर दिया करती है और इसलिए लोगो को किसी भी मत्री या अधिकारी से मिलने की जरूरत ही नही पडती। यह भी कोई नही मानेगा कि सोवियत रूस मे या ससार के अन्य किसी भी देश मे लोगो की कोई समस्याए या शिकायतें ही नही होती, जिनकी ओर मत्रियो या सरकारी अधिकारियो का खास तौर पर ध्यान दिलाने की जरूरत हो। भारत मे शासन के सचिवालयो मे तो सदा लोगो की भीड लगी रहती है। परन्तु ऐसा लगता है कि सोवियत रूस मे लोग मत्रियो या अधिकारियो से मिलने से डरते है, या उनको यह निश्चय हो गया है कि उनकी कही कोई सुनवाई नही होगी।

यह स्पष्ट था कि फौजी आदमियो के अलावा सरकारी अधिकारी ही वहा सर्वसत्ताधारी है। स्वय कम्यूनिस्ट पार्टी के लोगो की जवानी हमने इन अधिकारियो के व्यवहार की शिकायतें सुनी। वे कहते थे कि ये अधिकारी लापरवाह, ढीले और अयोग्य हैं। पार्टी के वडे-वडे उच्च पदाधिकारियो तक को पता नही था कि ख्रुश्चोव का मासिक वेतन क्या है। जव मुझे यह जानने की उत्सुकता हुई तो मैंने पता लगाना चाहा कि उन्हे इतनी-सी वात भी क्यो नही मालूम ? उन्होने जवाव मे कहा कि उन्हे ऐसी वातो की जानकारी हासिल करने मे कोई दिलचस्पी नही है।

सोवियत सघ मे खेलो का प्रचार वढ रहा है। उनका सवसे प्रिय

खेल फुटवॉल है। उसे देखने के लिए बडी संख्या में लोग एकत्र होते है। मुख्य शहरो मे वडे-वडे क्रीड़ागण बने हुए है। विश्व-विद्यालयो तथा अन्य शिक्षा-सस्थाओ मे भी खेलो की सुविधाए वरावर उपलब्ध है।

रूस मे सगीत, नृत्य और नाटक आदि की भी वृद्धि हो रही है। इनका स्तर भी अच्छा है। लोगो को सगीत तथा नृत्य का दिली शौक है। हमने एक सर्कस, कठपुतली का नृत्य, और एक रूसी सिनेमा भी देखा, जिसका नाम था—'वगुलो की उडती कतार'। सिनेमा का अभिनय और चित्राकन वहुत कल्पनापूर्ण था। प्रेमी के युद्ध पर चले जाने पर नायिका की शारीरिक और मानसिक पीडा का दिग्दर्शन इस चित्र मे किया गया है। नायिका का अभिनय इतना सुन्दर था कि वहा की भाषा नही जानने के वावजूद हमारे दिल पर उसका असर हुआ। हमने एक 'वैले'— नृत्य-नाट्य भी देखा, जिसके लिए रूस वहुत प्रसिद्ध है। उनकी यह प्रसिद्धि उपयुक्त ही है।

हमे कई ऐसे स्थानो पर ले जाया गया, जहा रोगी विश्राम और स्वास्थ्यलाभ करते है। ऐसे स्थान याल्टा मे अधिक है। स्वास्थ्य लाभ के इन स्थानो मे काफी सुविधाए है। वातावरण आकर्षक, आनन्ददायक और स्वास्थ्य के अनुकूल है। हमे वहां के लोगो के साथ, तैरने, नौका-विहार करने और वॉलीवॉल खेलने मे खूब आनन्द आया। हमे वताया गया कि ये स्थान योग्य मजदूरो और किसानो के लिए सुरक्षित रहते है, जिन्हे विश्रान्ति और छुट्टी की जरूरत होती है। ऐसे लोग यहापर वहुत दूर-दूर से आते है। लेकिन कुछ लोगो ने हमें वताया कि असल मे वहुत कम किसान और मजदूर लोग इन सुविधाओं से लाभ उठा पाते है। दरअसल पार्टी के उच्च अधिकारियो और उनके पिट्ठुओ के लिए ही ये स्थान सुरक्षित रहते है।

मैने देखा कि रूसियो मे अपने देश के लिए गहरा प्रेम और अभिमान है। इस विषय मे साम्यवादियो या गैर-साम्यवादियो मे कोई भेद नही है। दोनो अपनी मातृभूमि को समान रूप से प्यार करते है और उसकी नई-पुरानी, हर चीज पर उन्हे गर्व है। साम्यवादियो को भी क्रान्ति पर

पहलेवाले युग का चीजो पर गर्व है। उन्होने बडे प्रेम से और एक प्रकार का गौरव अनुभव करते हुए ये चीजें हमे दिखाईं। पीटर 'महान' और 'भयकर' ईवान तक के प्रति उनके दिल मे आदर है। आज के रूस-निवासी, यहातक कि साम्यवादी भी मानते है कि ये दोनो ही महान और शक्तिशाली शासक थे। उन्होने रूस को शक्तिशाली बनाया। अपने जमाने मे वे भी प्रगतिशील थे। यह दूसरी बात है कि आज की दृष्टि से वह शासन-प्रणाली पुरानी और प्रतिगामी रही हो।

लेनिनग्राद मे एक कला-निकेतन (आर्ट गैलरी) है। इसपर रूसियो को बडा गर्व है। यह एक अनूठा सग्रहालय है, जिसमे समस्त यूरोप के पुराने कलाकारो की कृतिया बडी साज-सभाल से रखी गई है। कहा जाता है कि ससार के सर्वश्रेष्ठ कला-निकेतनो मे इसका चौथा स्थान है। साम्यवादी सरकार ने पुराने जारो के महलो और बगीचो तक को राष्ट्रीय स्मारको के रूप मे सुरक्षित रखा है। इन्हे वे विदेशी आगन्तुको को बडे गर्व के साथ दिखाते हैं।

इस विषय मे एक बात मुझे खास दिखाई दी, और वह यह कि अपनी सफलताओ के बारे मे उनके दिलो मे एक उलझन पैदा हो गई है। यह सच है कि कुछ क्षेत्रो मे उन्होने अनेक बडी-बडी सफलताए प्राप्त की है, परन्तु ऐसा मालूम होता है कि वे भीतर से कुछ ऐसा भी अनुभव करते है कि दूसरी अनेक बातो मे वे पिछडे हुए हैं और इसके लिए वे अपने-आपको कुछ दोषी महसूस करते है। यह इस बात से प्रकट हो रहा था कि जब कभी कोई चीज हमे वे दिखाते तो उसके साथ यह पूछे बिना उनसे नही रहा जाता कि हमे वह पसन्द आई या नही। यदि हम कह देते कि अच्छी है तो उन्हे बडा सन्तोष होता। मेट्रो और मास्को विश्वविद्यालय तो सचमुच बहुत बडी चीजें है। परन्तु इनके बारे मे भी हमसे यह प्रश्न पूछे बगैर वे नही रह सके। जब हमने इनकी महानता की प्रशसा की तो उनका चेहरा आनन्द से खिल गया।

इसी सिलसिले मे मुझे एक बात और याद आ रही है। लेनिनग्राद

मे यन्त्रो के पुर्जे बनानेवाले एक कारखाने को देखने के लिए हम गये। सच पूछिये तो उसे देखकर मैं कतई प्रभावित नही हुआ। उसका प्रवन्ध अच्छा नही था। चारो तरफ चीजें अस्त-व्यस्त विखरी पडी थी। सफाई का नामोनिशान नही था, मानो कोई देखनेवाला ही न हो। लगता था कि आदमी भी जरूरत से अधिक थे। यह कारखाना देखकर हम बाहर निकले। अखबारो के सवाददाताओ मे से एक महिला भी हमारे साथ थी। उसने हमसे वही प्रश्न पूछा। जो चीज मुझे अच्छी नही लगी, उसकी प्रशसा मैं कैसे करता ? मैंने उसके सवाल को टालते हुए कहा कि लेनिन का नाम धारण करनेवाले इस कारखाने को देखने का हमे अवसर मिला, इससे हमे आनन्द हुआ। फिर इसे तो लेनिन-पुरस्कार भी मिल चुका है, आदि-आदि। परन्तु वह अपने प्रश्न पर ही अडी रही। मैंने भी उसके प्रश्न का सीधा जवाव नही दिया। इसपर उसे वहुत वुरा लगा। वह अपने असन्तोष को छिपा नही सकी और निराश होकर वहा से चलती वनी। हम जितने भी स्थानो पर गये, प्राय सव जगह 'विजिटर्स वुक' थी और हमसे कहा गया कि इन स्थानो के वारे मे हम अपने विचार इसमे लिख दें। जब किसी नये शहर मे जाते तो हवाई अड्डे पर ही रेडियो के लिए हमारा सन्देश रेकार्ड कर लिया जाता। हमारी यात्रा के समाचार अखवारो मे भी काफी व्यापक रूप मे छपते थे।

हमने दूसरी अजीब वात यह देखी कि जितनी भी सस्थाओ मे हम गये, उनके सचालको मे हमारे देश की परिस्थिति तथा अन्य चीजे जानने की ज़रा भी दिलचस्पी नही थी। यह वात मैं रूस के साधारण लोगो के वारे मे नही कह रहा हू। भाषा की कठिनाई के कारण उनसे मिलकर वातचीत करने का तो अधिक अवसर ही हमे नही मिल पाया। फिर भी हमने देखा कि इस कठिनाई के वावजूद वे हमारे देश के विषय मे जानकारी पाने को वहुत उत्सुक थे। परन्तु सस्था-सचालको का तो प्रयत्न यही था कि वे किस तरह तथ्यो व आकड़ो के सहारे अपनी सफलताओ से हमे प्रभावित करे। एक-दो जगहो को छोड़कर, किसीने भी न तो

हमारी पचवर्षीय योजना के बारे मे और न आजादी के बाद किये गए कामो के बारे मे कुछ पूछा। सामान्य प्रगति और भावी योजनाओं के बारे मे पूछना तो दूर ही रहा। वहा की सफलता के बारे मे हमे जो आकडे दिये गए, वे निश्चय ही काफी दिलचस्प थे। परन्तु कही-कही हमे ऐसा भी लगा कि बात कुछ बढा-चढाकर भी कही जा रही है। कभी-कभी हम प्रश्न भी कर लेते और दूसरी जगहो से भी जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करते। तब पता चलता कि हमे दिये गए आकडे हमेशा सही नही होते। उदाहरण के लिए औद्योगिक प्रदर्शिनी मे हमे दिये गए आकडे इतने प्रभावोत्पादक थे कि यदि वे सचमुच सही होते तो रूस को कही अधिक समृद्ध और प्रगतिशील होना चाहिए था, परन्तु प्रत्यक्ष मे तो वह ऐसा नही दिखा।

: २ :

शासक-दल

सोवियत सघ में साम्यवादी दल के सदस्य सर्वत्र "कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तु समर्था." अर्थात् सम्पूर्णतया सर्व-सत्ताधारी हैं। पार्टी के हर सदस्य के पास, यहातक कि 'कोमसोमोल' के सदस्य के पास भी अपनी सदस्यता का परिचय-पत्र होता है। यह एक अधिकार-पत्र का काम देता है। जिसके पास यह है वह आदमी जहा चाहे जा सकता है और जो चाहे कर सकता है। उसे कोई रोक-टोक नही। मास्को में एक दिन ब्राडकास्ट के लिए हमे टेलीविजन स्टेशन पर ले जाया जा रहा था। हम बडी जल्दी मे थे। इसलिए हमारा ड्राइवर निर्धारित रफ्तार से भी अधिक तेजी से कार चला रहा था। जब पुलिस के एक जवान ने हमारी कार रोकी तो हमारा दुभाषिया नीचे उतरा, उसने अपना परिचय-पत्र दिखाया और कुछ शब्द कहे। बस, वह अदब से देखता रह गया और हम आगे बढ गये।

एक दूसरी घटना। हम क्रीमिया के हवाई अड्डे सिम्फरोपोल की ओर कार से जा रहे थे। बीच मे एक रेलवे क्रासिंग आया। फाटक बन्द था। रेल के आने मे अभी कुछ देर थी। हमारा दुभाषिया नीचे उतरा। वह स्वय इस प्रदेश का निवासी नही था। ड्यूटी पर जो औरत खडी थी, उसके मना करने पर भी उसने फाटक की सील तोड़ दी, फाटक खोल दिया और हमारी कार के जाने के लिए रास्ता बना दिया। वह औरत बेचारी हैरानी से उस दुभाषिये की तरफ देखती रह गई। उसकी समझ मे ही नही आया कि वह क्या करे और उसे कैसे रोके।

हवाई जहाज मे, या जहा कही भी हम जाते, हमारे साथ विशेष अतिथि का-सा व्यवहार होता और खासतौर पर सुरक्षित जगहों पर हमें बैठाया जाता। सिम्फरोपोल से हम याल्टा जा रहे थे। यह समुद्र-तट पर एक सुन्दर स्वास्थ्यप्रद स्थान है। पिछले महायुद्ध के अत मे सन् १९४५ मे बडे तीन—स्तालिन, चर्चिल और रूजवेल्ट का सम्मेलन यहीं हुआ था। इस कारण सारे ससार मे यह स्थान प्रसिद्ध है। डेढ सौ मील ग्रामीण प्रदेश के बीच मे से होते हुए हम गये। हम ग्यारह आदमी थे—सात तो हम और चार स्थानीय युवक-सगठन के सदस्य। सिर्फ ग्यारह व्यक्तियो के लिए चार बडी-बडी कारें तैनात थी। उन्होने मोटर-साइकलवाले एक पुलिस के आदमी का भी प्रबन्ध कर दिया था, जो पायलेट की तरह हमारे आगे-आगे जाता था। यह स्थानीय व्यक्ति था। वह हमारे आगेवाली हर कार को इशारे से सूचित करता जा रहा था कि वह जरा रुक जाय या दाहिनी ओर सडक के बिल्कुल किनारे हो जाय, ताकि हम आसानी से उसके आगे हो जाय। जो गाडिया सामने से आतीं उन्हें, रफ्तार कम करके, एकदम बायें से गुजरने के लिए इशारा करता जा रहा था, ताकि हमे कोई कठिनाई न हो। हमारे पूछने पर कि हमारे लिए इतना सब इतजाम करने की क्या जरूरत थी, हमे बताया गया कि वह रास्ता कठिन व पहाडी था। बहुत-से बडे आडे-तिरछे मोड उसपर हैं। कहीं कोई दुर्घटना न हो जाय, इसलिए स्थानीय पुलिस को हिदायतें हैं कि विदेशी मेहमानो के साथ इस प्रकार के मार्गदर्शक दिये जाय। अपने देश मे तो इस प्रकार पुलिस के गार्ड केवल विशिष्ट सरकारी मेहमानो को ही दिये जाते हैं। इसलिए जब हमने देखा कि हमारे जैसे गैर-सरकारी प्रतिनिधि-मडल को इतना महत्व दिया जा रहा है, तो हमे कुछ अटपटा-सा लगा और सकोच भी हुआ।

रूस मे साम्यवादी दल और उसके सदस्यो की सत्ता के प्रति कोई सन्देह नहीं करता। उनके परिचय-पत्रो का असर जादू की तरह होता है। किसी काम को करवाने के लिए उन्हें अलग से सबधित अधिकारियों के

किसी पत्र आदि की जरूरत नही होती। इसी प्रकार शासन के अधिकारियो को भी कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्यो को कोई काम करने के लिए अलग से कोई सूचना देने की जरूरत नही होती। पार्टी के सदस्य का वहा स्वय पहुच जाना ही काफी होता है। सारा काम पार्टी के नाम पर होता है। दरअसल सारी सत्ता पार्टी के ही हाथो मे है। उनका तो कहना और मानना है ही कि अन्तत पार्टी जो कुछ भी करती है, सब जनता के हित मे ही करती है। परन्तु वास्तव मे पूरा लाभ तो पार्टी के सदस्य ही उठाते है। उन्हे कोई रोक नही सकता। सारा काम पूरी गोपनीयता के साथ किया जाता है। शासन भय और आतक के बल पर चलता है। बातें अवश्य उदारता की की जाती है। परन्तु आम जनता में सर्वत्र अविश्वास और भय व्याप्त है। हा, यह सच है कि आज वह इतना नही जितना स्तालिन के जमाने मे था। फिर भी किसीको पूरा चैन और सतोष नही है।

रूस के युवक-सगठन 'कोमसोमोल' के प्रमुख सदस्यो ने हमे बताया कि उनका एक काम यह भी है कि वे युवको के हितो की सर्वत्र देख-भाल करें— क्या खेतो मे और क्या कारखानो में। इस सस्था का रूस में बडा असर है। उदाहरणार्थ कोमसोमोल के कुछ अधिकारियो ने हमें कहा कि किसी कारखाने का मुख्य व्यवस्थापक, जो स्वय एक विख्यात वैज्ञानिक भी है, युवको का जैसा ध्यान रखना चाहिए, नही रख रहा है। उनका दावा है कि वे प्रयत्न करके उसे अपने पद से हटा देंगे।

सोवियत सघ मे बच्चो का केवल एक सगठन है। उसका नाम है— 'यग पायोनियर्स।' इसकी सदस्य-सख्या १४५ लाख है। इसका सचालन भी कोमसोमोल ही करता है। उसमे पूरा समय देनेवाले वैतनिक कार्यकर्त्ता है, जिनकी नियुक्ति और नियत्रण कोमसोमोल के हाथो मे है। परन्तु वेतन चुकाया जाता है सरकार के शिक्षा-मत्रालय के द्वारा।

युवको का एक मात्र सगठन कोमसोमोल है। इसकी सदस्य-सख्या १८० लाख है। इस सगठन का सचालन और नियन्त्रण पूरी तरह से कम्यूनिस्ट पार्टी करती है। इसका बजट भी करोडो रूबल का है,

जिसका अधिकाश शासन से ही मिलता है। स्वय कम्यूनिस्ट पार्टी के बजट, उसकी आय के साधनो आदि के बारे मे हमे बहुत अधिक जानकारी नही मिल सकी। केवल इतना ही ज्ञात हो सका कि इसके मातहत जितने सगठन और सस्थाए काम करती है, उन्हे सहायता के तौर पर काफी धन-राशि सरकार से मिलती रहती है। इन तमाम सगठनो का उपयोग कम्यूनिस्ट पार्टी की ताकत बढाने और उसे बनाये रखने के लिए होता है।

बच्चो का 'यग पायोनियर्स' सगठन बहुत अच्छा है। बच्चो को वह जो शिक्षा और प्रशिक्षण दे रहा है, वह भी उपयोगी तथा हितकर है। बच्चे स्वस्थ, तेजस्वी और बुद्धिमान होते हैं। परन्तु मेरी समझ मे नही आया कि इन सबसे साम्यवादी दल के प्रति वफादारी की शपथ क्यो दिलाई जाती है। यदि साम्यवादी समाज मे कोई अन्तर्विरोध नही है, यदि सोवियत रूस की जनता के आपसी हितो मे कोई सघर्ष नही है, यदि सरकार मजदूरो, किसानो और शेष जनता के हितो का प्रतिनिधित्व सही रूप मे करती है, और इसलिए विरोधी दलो की कोई जरूरत नही है, जैसा कि वहा कहा जाता है, तो कम्यूनिस्ट पार्टी को टिकाये रखने और उसकी ताकत को बढाने के लिए शासकीय कोष से रोजमर्रा इतना खर्च करने की जरूरत क्यो होनी चाहिए ? फिर सरकारी खर्च से चलनेवाले बच्चो और युवको के ये सगठन शासन के मातहत क्यो नही ? ये कम्यूनिस्ट पार्टी के ही मात- क्यो हैं ?

शासन लाखो कार्यकर्त्ताओ का खर्च देता है, परन्तु उनपर नियत्रण सिर्फ कम्यूनिस्ट पार्टी का ही है। वस्तुत वही उनसे काम लेती हैं और उनका उपयोग अपने सगठन की ताकत बढाने मे करती है। दावा तो यह है कि उनका सविधान लोकतत्री है, वे इसी लोकतत्र की पद्धति से चुनाव भी करते है और मानते है कि ये ही सिद्धान्त सबसे अच्छे है, परन्तु हम समझ नही पाये कि वहा यह सब जो हो रहा है, इसका मेल लोकतत्र के सिद्धान्तो से कैसे बैठाया जा सकता है।

वे दावा करते है कि कोमसोमोल की प्राथमिक इकाइयो मे अब उन्होने

बिना किसी दखल के लोकतत्री पद्धति के चुनाव शुरू कर दिये है, परन्तु वहा भी गुप्त मतदान की पद्धति नही अपनाई गई है। उन्होने हमे बताया कि कम्यूनिस्ट पार्टी के पिछले अधिवेशन मे यह अनुभव किया गया कि ठेठ नीचे के स्तर पर गुप्त मतदान की कोई आवश्यकता नही है। मतदाताओ को अपनी इच्छा के अनुसार चुनाव करने की आजादी दी जा सकती है। इससे यह साफ जाहिर होता है कि ऊपर के किसी भी स्तर के चुनावो मे मतदान की और विचार-प्रकाशन की स्वतन्त्रता नही है।

कामरेड बारानोव्स्कीने, जो युक्रेन गणतत्र मे योजना-उपमत्री है, हमें बताया कि यो तो उनके यहा पहले से ही विकेन्द्रीकरण था, परन्तु अब रूस के गणतन्त्रो को और भी अधिक अधिकार दे दिये गए हैं। पहली क्रान्ति के बाद देश मे यान्त्रिको और वैज्ञानिको की कमी के कारण सारे उद्योगो को केन्द्रीय सरकार के आधीन कर दिया गया था, परन्तु अब तो काफी वैज्ञानिक तैयार हो गये हैं और इसलिए अब वे उद्योगो को विकेन्द्रित करना चाहते है। विकेन्द्रीकरण मे कई लाभ हैं। नौकरशाही तरीको मे जो अनावश्यक देरी होती है, वह इसमे नही होगी। सही और पूरी जानकारी ऊपर नही पहुचने के कारण कभी-कभी जो गलत निर्णय हो जाते है, वे नही होगे। फिर प्रत्यक्ष स्थान पर अधिकारियो के मौजूद होने के कारण परिस्थिति का अध्ययन हो सकेगा और निर्णय तुरन्त लिये जा सकेंगे। एक बात और है। हर जगह की परिस्थिति अलग-अलग होती है। दूर बैठकर इन सब बातो पर ठीक से विचार नही हो पाता। पहले देश के ४० प्रतिशत उद्योग राज्यो के अधीन थे। अब यह सख्या ६० प्रतिशत तक पहुच गई है। चूकि अब प्रत्येक राज्य अपनी समस्याए खुद हल कर लेता है, इसलिए काम सरलता से और जल्दी-जल्दी निपट जाता है। उनके अधिकार भी बढ गये है।

उन्होने यह भी बताया कि केन्द्रीय सरकार अपने निर्णय राज्यो की सलाह लेकर ही करती है। वे देशभर मे जितनी भी चीजें पैदा करते हैं, उनमे से चार सौ चीजो के बारे मे, जो सारे राष्ट्र के लिए आवश्यक है,

केन्द्र स्वय निर्णय करता है। केन्द्रीय योजना-आयोग मे सारे राज्यो के प्रतिनिधि होते है, जो आयोग को अपने राज्य की आवश्यकताओ और उत्पादन-क्षमता के बारे मे जानकारी देते रहते है। अन्त मे सबकी जरूरतो का अच्छी तरह अध्ययन करने के बाद यह निश्चय किया जाता है कि हर वस्तु का कुल कितना उत्पादन किया जाय, और उसमे से कितना उत्पादन कौन-सा राज्य करे। प्रत्येक राज्य कितना उत्पादन करे, इसका निर्णय हो जाने के बाद बाकी सब चीजो का अमल राज्य-सरकारो पर छोड दिया जाता है। इस विकेन्द्रीकरण की नीति के फलस्वरूप इस वर्ष उत्पादन ११ प्रतिशत बढ गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि रूसियो का, अपने देश के भीतर भी, प्रवास करना बहुत सीमित है। हमे यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि लेनिनग्राद मे हमारा प्रबन्ध करनेवाले युवक-समिति के प्रमुख कार्यकर्ता भी कभी मास्को नही गये थे, जो कि वहा से बहुत दूर नही है। रेल से केवल एक रात की यात्रा है।

स्तालिन की मृत्यु के बाद वहा जरूर शासन-नीति मे कुछ उदारता आई है। विशेषकर लडाई के दिनो में स्तालिन रूसियो का 'हीरो' बन गया था। उन्होने समझ लिया था कि जबतक रूस किसी ऐसे मजबूत आदमी के हाथो मे सगठित नही होगा, जो सारे राष्ट्र मे एकता ला सके और मित्र-राष्ट्रो के साथ कडाई से पेश आ सके, तबतक वे युद्ध मे कभी सफल नहीं होगे। इसीलिए तो, गत महायुद्ध मे, मरते समय रूसी सिपाही की जबान पर ये शब्द होते थे—"मैं अपनी मातृभूमि और स्तालिन के लिए जान दे रहा हू।" रूस को नष्ट होने से बचाने के लिए यह जरूरी था कि वे लडाई मे विजयी हो। इसलिए प्रत्येक रूसी स्तालिन के पीछे हो गया। लडाई के बाद स्तालिन ने इस स्थिति और अपनी लोक-प्रियता का पूरा-पूरा लाभ उठाया और वह वहा का तानाशाह बन बैठा। उसने अपने साथ केवल हा-मे-हा मिलानेवालो को रखा। शेष सबको दूर हटा दिया। सारे राष्ट्र मे आतक का साम्राज्य छाया हुआ था। नि सन्देह यह स्थिति बहुत दिन तक

तो नही टिक सकती थी। कुछ उदारता का आना अनिवार्य था। आज के रूसी नेताओ के पल्ले ऐसा कोई पराक्रम नही है, जिससे वे रूस की जनता के दिलो पर उतना अधिकार पा सकें। यदि वे चाहते है कि उनके हाथों मे सत्ता बनी रहे और वे जनता मे अप्रिय भी नही बनें, तो जनसाधारण को कुछ आराम देना अनिवार्य हो गया था।

आज स्तालिन के बारे मे शासन का अधिकृत रुख यह है कि वह एक महापुरुष था और उसने रूस के लिए बहुत-कुछ किया था, जिसके कारण उसका नाम देश के इतिहास में सदा के लिए अमर हो गया है। परन्तु उससे भी कुछ गलतिया तो हुई ही थी। वे अब उन ग़लतियो को दुरुस्त करने मे लगे हुए है। इनमे से मुख्य भूल थी व्यक्ति-पूजा। वे कहते हैं कि अब हमने इस गलती का पूरा पर्दाफाश कर दिया है और इससे हमे लाभ हुआ है। लोगो को बिना कारण जेल मे डाल दिया जाता, उन्हे फांसी पर भी लटका दिया जाता या गोली से उडा दिया जाता था। इस भूल को हमने सुधार लिया है और अब हमे आशा है कि भविष्य मे कानून को नजर अदाज नही किया जायगा। उनका मानना है कि देश के बाहर और भीतर भी उनके दुश्मन इतने अधिक है कि उनके लिए सावधानी, सतर्कता, और एकता से रहना बहुत आवश्यक है। वे अनुभव करते है कि उनपर एक महान जिम्मेदारी आई है, जिसे पूरी करने के लिए उन्हे अपने-आप रास्ता ढूढना होगा। जाहिर है कि इसमें भूलें होगी और भूलें करते-करते ही आगे के लिए रास्ता निकलेगा। चीनियो को यह कठिनाई नही होगी, क्योकि रूसियों की भूलो, प्रयोगो और अनुभवो का लाभ उन्हे अपने-आप मिल जायगा।

रूस मे कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य अनुभव करते है कि स्तालिन के समय की अपेक्षा अब सत्ता का आधार काफी अधिक व्यापक बना दिया गया है। यो तो स्तालिन की भाति ही ख़ुश्चोव भी सरकार और दल दोनों के प्रधानमत्री है, परन्तु आज सारी सत्ता अकेले उनके हाथो मे केन्द्रित नही है। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय वह अकेले नही करते, बल्कि सारी पार्टी करती है। आधारभूत नीति के बारे मे निर्णय करने का पूरा अधिकार

प्रीसीडियमके ही भी नही है। ऐसे निर्णयो मे पार्टी के अन्य सदस्यों का भी हाथ रहता है। इससे प्रकट है कि स्वय पार्टी के सदस्य भी सत्ता के केन्द्रीकरण को पसन्द नही करते। परन्तु एक बात स्पष्ट है। कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य लोकतन्त्र के सिद्धान्तो को चाहते तो हैं, परन्तु केवल अपने बीच। वे सत्ता को छोडना नही चाहते। दूसरो के लिए नही, केवल अपने लिए लोकतन्त्र लागू करना चाहते है।

बात यह है कि यदि किसी एक आदमी के हाथ मे सत्ता आ जाती है तो फिर वह उसे अपने ही हाथो मे रखना चाहता है। यदि परिस्थिति-वश केवल वह सर्वशक्तिमान नही रह पाता तो सत्ता एक गुट के पास आ जाती है। फिर वह गुट अपने हाथ मे आई सत्ता से चिपटे रहना चाहता है। और जब वह देखता है कि वह भी उस सत्ता की रक्षा नहीं कर सकता तो और भी कुछ लोगो को अपना साझीदार बना लेता है। इस तरह शासन की बागडोर अधिक लोगो के हाथो मे पहुच जाती है। रेल के तीसरे दर्जे मे सफर करनेवाले मुसाफिरो की मनोवृत्ति से वहा के शासन की तुलना की जा सकती है। जब कोई नया मुसाफिर उस डब्बे मे घुसना चाहता है तो अन्दर के सब मुसाफिर मिलकर उसको रोकते है। परन्तु यदि इस सारे विरोध और प्रतिकार के बावजूद वह अन्दर घुस आता है, तो वह भी उन मुसाफिरो मे से एक बन जाता है और डब्बे के अन्दर आना चाहनेवाले नये मुसाफिरो को रोकने में शरीक हो जाता है। यह खीचातानी समय-समय पर होती ही रहती है।

मुझे लगता है कि रूस मे भी यह प्रक्रिया काम करेगी और समय के साथ-साथ सत्ता मे अधिकाधिक लोग शरीक होते रहेगे। हा, यदि इसी बीच पार्टी या फौज मे कोई जोरदार तानाशाह पैदा होकर सर्वसत्ता-धारी बन जाय तो बात अलग है।

सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि इस बीसवी सदी के प्रगतिशील युग मे भी कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता अपने देश की साधारण जनता को इतने अधेरे मे कैसे रखे हुए है? आम जनता को बाहरी ससार

की परिस्थिति के बारे मे कुछ भी जानकारी नही। दूसरे देशों का जीवन कैसा है, उनका रहन-सहन का स्तर कैसा है, उनके विचार क्या है, इन सब बातो के बारे में वे कुछ भी जानते। जनता को हमेशा इकतरफा समाचार दिये जाते रहे है, जो अत्युक्तिपूर्ण और एक खास दृष्टिकोण को लिये रहते है। अपने देश की इतनी बडी आबादी को अज्ञान के गहरे गर्त मे रखने मे वे किस प्रकार सफल हुए है, यह मेरे लिए अभी तक एक प्रश्न चिन्ह ही बना हुआ है। आखिर उन्हे ऐसा करने की जरूरत ही क्या है ? खासकर तब जबकि इसके लिए उन्हे इतनी कीमत चुकानी पडती है। यह पहेली तब और भी जटिल बन जाती है जब हम देखते हैं कि रूसी लोग न केवल अपने ही देश पर शासन कर रहे हैं, बल्कि ससार के लगभग आधे भाग पर उनका प्रभाव है। और जब हम देखते हैं कि इस सबमे उनके अपने अधिकाश देश-भाइयो का भी पूरा क्रियात्मक सहयोग नही है, तो और भी आश्चर्य होता है कि वे किस तरह अपना कारोबार चलाते है। पता नही यह इस तरह कबतक चल सकेगा। यह भी सभव हो सकता है कि शीघ्र ही फौज अपने हाथ मे सत्ता ले ले या स्वय पार्टी मे फूट पड़ जाय और देश में विप्लव हो जाय। मोलोतोव, मालेनकोव, बुलगानिन और जुकोव जैसे चोटी के नेताओ को मिनटो में राजनीति के रगमच से हमेशा के लिए हटा दिया गया। यह परिस्थिति कबतक बनी रहेगी और कबतक लोग यह सब चुपचाप बरदाश्त करते रहेंगे—ये ऐसे महत्त्वपूर्ण सवाल है, जो स्वाभाविक ही सारी दुनिया के लोगो को विचलित किये हुए हैं।

परन्तु कुल मिलाकर मुझे लगता है कि रूस के लोग आगे ही बढ़ रहे हैं। उनका रहन-सहन का स्तर ऊचा उठ रहा है। उनका सैनिक बल भी बढ़ रहा है। परन्तु दिल मे यह सवाल जरूर उठता है कि यह सब किस कीमत पर ? जनसाधारण मुझे बहुत सुखी नही दिखे। उनसे अत्यधिक परिश्रम कराया जाता है। उनके जीवन मे न विश्वास है और न आनन्द। जीवन मे किसी बात की निश्चिन्तता नही। हर आदमी

अधिकाधिक भौतिक सुखो के पीछे पडा है। परन्तु उसे यह भी नसीब नही। वे इतनी प्रगति कर रहे है और ससार मे इतने शक्तिशाली हैं, फिर भी साधारण मनुष्य को इससे विशेष लाभ नही पहुचता। यह सब देखकर मुझे तो और भी निश्चय हो गया है कि हमारी यह लोकतत्र की पद्धति ही हमारे देश के लिए सबसे अच्छी है जिसमे व्यक्ति को पूरी स्वतन्त्रता है। हा, हमारी प्रगति की रफ्तार जरूर धीमी है। फिर भी वह स्थिर और निश्चित है। यद्यपि हमारा रहन-सहन का स्तर फिलहाल नीचा है, फिर भी लोग वहा से अधिक सुखी है और शाति से रहते है। स्वभावत ये विचार सर्वांगीण नही हो सकते। हम वहा इतना कम समय रहे कि इतने बडे देश की वास्तविक स्थिति का ज्ञान इतने थोडे समय मे हो ही नही सकता। यह तो मेरे मन पर जो प्रभाव हुआ है, उसे मैंने निष्पक्ष भाव से और स्पष्ट रूप से लिख दिया है। सभव है, यदि मुझे रूस की स्थति का और अधिक अध्ययन करने का मौका मिले तो मुझे अपने कुछ विचार बदलने भी पडें।

इस प्रकरण को समाप्त करने से पहले सावधानी के तौर पर मैं एक बात कह दू। रूस की आम जनता को और वहा के कम्यूनिस्ट शासन को एक नही मानना चाहिए। दोनो के बीच का अतर अलग-अलग स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए। रूसी जनता का असली रूप वही है, जो हम तॉल्स्तॉय और दोस्तव्स्की के उपन्यासो मे पढते है। उन्हे अपने अतीत और उसकी परम्पराओ तथा सस्कृति पर गर्व है। वे स्नेहशील और आतिथेय हैं। सरल स्वभाव के और भले है—जैसे किसी भी देश के लोग आमतौर पर होते है। परन्तु कम्यूनिस्ट शासन की बात दूसरी है। उसमे गुप्तता, सर्वसत्ताधारिता, तानाशाही और नीति-हीनता है। वह आतक से काम लेता है और शरीर तथा मन को भी फौजी अनुशासन मे जकड देने की उसकी प्रवृति है। इसलिए रूस के शासन की रीति-नीति देखकर उसपर से वहा की आम जनता के स्वभाव, आशाओ और आकाक्षाओ का सही प्रतिबिंब पडता हो, यह जरूरी नही है।

: ३ :

यंग पायनियर्स

सोवियत रूस में एक बडी महत्वपूर्ण और दिलचस्प सस्था की प्रवृत्तियो को देखने और अध्ययन करने का हमे सुअवसर मिला। उसका नाम है, 'यग पायनियर्स'। १६ जून को हम 'यग लेनिन पायनियर्स' संगठन के सुप्रीम कौसिल के दफ्तर में गये। कामरेड फिदोतवा उसके उपसभापति है। उन्होने और कामरेड जिरेवा ने हमे यग पायनियर्स की प्रवृत्तियो के वारे में सारी जानकारी विस्तारपूर्वक समझाई। हमारे देश के वच्चो के प्रति यग पायनियर्स की शुभ कामनाओ के प्रतीक के रूप में उन्होने हमे एक विगुल और एक ड्रम भी भेंट किया।

यग पायनियर्स स्कूल में जानेवाले वच्चो का एक विशाल राजनैतिक सगठन है। छत्तीस वर्ष पूर्व इसकी स्थापना हुई थी। इस सस्था की सदस्यता ऐच्छिक है।

स्कूलो मे जानेवाले लडके और लडकियो को, जो इसमें शरीक होते हैं, शपथ लेनी पडती है कि "मैं सोवियत यूनियन का यग पायोनियर हू। अपने साथियो के सामने मैं वचन देता हू कि मैं अपनी सोवियत मातृभूमि को प्यार करूगा। महान लेनिन के उपदेशानुसार तथा कम्यूनिस्ट पार्टी के मार्गदर्शन मे मैं चलूगा, अध्ययन करूगा तथा जूझूगा।"

यह शपथ लेने के वाद यग पायनियर को एक लाल टाई दी जाती है और उसे सगठन का सदस्य वना लिया जाता है।

इस प्रवृत्ति और संगठन के सचालको के सामने अपना लक्ष्य स्पष्ट है। वे स्पष्ट रूप से जानते है कि यग पायनियर को क्या

है। यग पायनियर मातृभूमि और कम्यूनिस्ट पार्टी का भक्त होता है। वह कोमसोमोल का सदस्य बनने के लिए अपनेको तैयार करता है। सोवियत मातृभूमि को स्वतन्त्र और समृद्ध बनाने के लिए जिन-जिन लोगो ने अपने प्राण अर्पण कर दिये, उनकी स्मृति को वह अपने हृदय में सदा सजोता रहता है। ससारभर मे उसके बाल-मित्र होते हैं। वह लगन और मेहनत के साथ अध्ययन करता है और व्यवहार मे नेक और विनयशील होता है। उसे कॉमरेड या सहयोगी कहा जाता है। वह अपने से छोटो की सभाल करता है और बडो की सेवा-सहायता। वह राष्ट्र की सपत्ति की सभाल करता है। उसमे साहस और धैर्य होता है और वह कठिनाइयो से डरता नही। सदा सत्य बोलता है। अपने दल के सम्मान की रक्षा का उसे सदा ध्यान रहता है। व्यायाम के लिए वह नित्य सवेरे खेलो मे भाग लेता है। प्रकृति का वह भक्त होता है। पेड-पौधो, हरियाली, पशु-पक्षियो की वह रक्षा करता है। सक्षेप मे, यग पायनियर दूसरो के लिए एक आदर्श बालक होता है।

पायनियरो के दल अधिकतर अपने विद्यालयो से सलग्न रहते हैं और उनके काम-काज मे मदद करते है। छात्रालयो और शिविरो मे भी पायनियरो के दल होते हैं। स्कूल का दल प्राथमिक दल कहलाता है। उसके मातहत अनेक छोटे-छोटे दल होते हैं। एक दल मे तीस से लेकर चालीस पायनियर होते है। साधारणत एक दल एक कक्षा (क्लास) के बराबर होता है। यदि किसी बडे मकान मे एक ही विद्यालय के बहुत-से पायनियर रहते है तो वे वहा भी अपना एक स्वतत्र दल बना लेते है। कोमसोमोल की भाति उनके भी जिला-सगठन और नगरीय, प्रादेशिक और केन्द्रीय कौंसिलें होती हैं।

अपने दलो का सचालन पायनियर स्वय ही करते हैं। वे अपने मन्त्री और नेताओ का चुनाव भी खुद ही कर लेते हैं। आमतौर पर कोमसोमोल इनका मार्गदर्शन करता है। प्रत्येक बडे दल के मुख्य नेता की नियुक्ति कोमसोमोल करता है। इस पद के लिए वह अपना अच्छा-से-

अच्छा कार्यकर्ता भेजता है।

हर पायनियर-दल का सचालन उन्हीका चुना हुआ एक नेता, सलाहकार के रूप मे कोमसोमोल का एक प्रतिनिधि और कोमसोमोल द्वारा नियुक्त एक पूरा समय देनेवाला सवैतनिक कर्मचारी मिलकर करते है। कुल मिलाकर इस प्रकार पूरा समय देनेवाले शिक्षक पचास हजार है। इनका वेतन शिक्षा-मन्त्रालय द्वारा दिया जाता है। चूकि बच्चे कमाते नही है, इसलिए उन्हे कोई फीस नही देनी होती। ट्रेड यूनियन की केन्द्रीय कौंसिल बच्चो के इस सगठन को उसके साधारण कामकाज के लिए, जिसके अन्दर खेल और टूर्नामेंट भी आ जाते हैं, प्रतिवर्ष १६,५०,००,००० रूबल देती है। इसके अलावा इनके शिविरो आदि के आयोजनो के लिए भी वह रकम देता है।

इस सगठन की सदस्य-सख्या लगभग १,४५,००,००० है। समस्त राष्ट्र मे सात वर्ष से लेकर सत्रह वर्ष की उम्र के स्कूल जानेवाले बच्चो की कुल सख्या तीन करोड़ है। उनमे से दस और पद्रह वर्ष की बीच की उम्रवाले बच्चे इस सगठन के सदस्य है। उनकी यह उपर्युक्त सख्या है।

देश मे सात लाख छोटे और दो लाख बडे दल हैं। स्कूलो की सख्या भी इतनी ही है। रूस मे प्राथमिक शिक्षा की पढाई चार वर्ष की है, माध्यमिक शिक्षा की तीन वर्ष की और उसके बाद उच्च माध्यमिक शिक्षा की तीन वर्ष की। इस प्रकार स्कूली शिक्षा कुल मिलाकर दस वर्ष की होती है। खेलकूद और मनोरजन-सम्बन्धी लगभग सारी प्रवृत्तियो का प्रबन्ध यग पायोनियर्स के दल करते है। अपने सदस्यो के फुरसत के समय के सदुपयोग का व्यवस्थित इतजाम भी वे ही करते है। प्रत्येक स्कूल अथवा मकानो की एक इकाई के साथ उसका अपना खेल का मैदान भी होता है। इसके अलावा लगभग दस हजार अन्य सस्थाए है, जो बच्चो के खेलकूद आदि मे दिलचस्पी लेती है, प्रवासियो के केन्द्रो की देखभाल करती है और नौजवानो को विविध यत्रो आदि के प्रशिक्षण का प्रबन्ध करती है। यग पायोनियर्स के सदस्य बच्चो को अपनी रुचि के अनुसार

इन प्राविधिक विषयो मे रस लेने के लिए हर प्रकार से अधिकाधिक प्रोत्साहन दिया जाता है। हवाई जहाज और जल-जहाज आदि के बनाने मे जिनको रुचि है, ऐसे बच्चो और किशोरो के लिए विशेष विभाग खुले हुए है।

यग पायनियर्स के बच्चे यदि कोई प्रशसनीय काम करते हैं तो सरकार की तरफ से उनको विशेष रूप से मान्यता भी दी जाती है। हाल ही मे यग पायनियर, लोला कारपारस्काया ने एक बच्चे को जलने से बचा लिया। उसको विशेष रूप से सम्मानित किया गया। एक दूसरे लडके ने अनेक भेडों को बर्फानी तूफान से बचा लिया। उसका भी नाम सम्मान-प्राप्त किशोरो की सूची में लिख लिया गया।

बच्चो को पैदल यात्राओ के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। वे अपनी गरमी की छुट्टिया किस प्रकार बिताते है, इसको बडा महत्व दिया जाता है। शहरो, गावो और सामूहिक खेतो पर सर्वत्र ग्रीष्म-कालीन शिविर आयोजित किये जाते है। गावो के शिविरो मे लगभग तीस लाख बच्चे प्रति वर्ष भाग लेते है। इन देहाती शिविरो के लिए पिछले वर्ष १ अरब ६० करोड रूबल का खर्च मजूर किया गया था। इन शिविरो के लिए शिक्षक यग पायनियर्स की केन्द्रीय कौंसिल भेजती है। शरीर-श्रम को इन शिविरों मे सबसे अधिक महत्व दिया जाता है।

हर लडके और लडकी के पास एक खास पायनियर की वर्दी होती है, जो विशेष अवसरो पर पहनी जाती है। वर्दी की बनावट बच्चो की अपनी रुचि की होती है। हा, रग निर्धारित होते है। कीमत माता-पिता चुकाते हैं।

पायनियर बेकार पडी हुई उपयोगी चीजें, जैसे लोहे के टुकडे आदि एकत्र करने का अभियान भी करते हैं और उन्हें कारखानो को बेच देते हैं। युक्रेन के यग पायनियर्स ने एक बार इस तरह सत्तर वैगन कपास एकत्र कर ली, जो उन्होंने लेनिनग्राद के एक कारखाने को भेंट कर दी।

सोवियत सघ की अपनी यात्रा के दौरान पायनियर्स के ऐसे अनेक

शिविरो में हम गये। २५ जून को पहले-पहल हम ऐसे एक शिविर में गये, जो काले समुद्र के किनारे याल्टा के पास आरटेक में लगा था। उसका नाम था 'यूनियन लेनिन पायनियर कैंप'। इसमे तीनसौ पैंतीस यग पायनियर्स लडके-लडकियां थे, जो सोवियत सघ के विभिन्न गणराज्यो से आये थे। बच्चे अपनी वर्दियो में वडे सुन्दर और खुश लग रहे थे—सभ्य और हँसमुख। उन्होने बडे प्रेम से हर्ष-ध्वनि के साथ हमारा स्वागत किया। हमारे दिलों पर इन बच्चो के स्नेह का बडा असर हुआ।

शिविर चालीस दिन का था। हम आखिरी दिन पहुचे थे। बच्चो ने हमें बताया कि यद्यपि शिविर बहुत अच्छा रहा, परन्तु कही घर से इसकी तुलना की जा सकती है ? अब तो वे इस बात पर खुश हो रहे थे कि वापस घर जा रहे हैं। कितने ही बच्चो को अपने घर की याद सताने लगी थी। इनके बीच एक भारतीय बच्ची—कल्पना साहनी—को देखकर हमें बड़ी खुशी हुई। वह बहुत अच्छी रूसी बोल लेती थी और हर तरह से उनमे घुल-मिल गई थी।

बच्चो का बहुत-सा समय तो समुद्र के रेतीले तट पर खेलने और समुद्र में तैरने मे बीत जाता था। उन्होने अपनी एक छोटी-सी प्रदर्शिनी भी की थी। इसकी सारी रचना और सजावट प्राय. बच्चो ने ही की थी और अधिकाश चीजें बच्चो की ही जमा की हुई या बनाई हुई थी। भोजन के समय उन्होने हमारी बहुत खातिर की। भाषा की कठिनाई बाधक नही हुई। उसके बाद उन्होने हमे विश्राम करने के लिए कहा और अपना सगीत सुनाया। प्रतिमा से उन्होने कुछ भारतीय गीत भी सुनाने को कहा। हमने उन्हे कुछ भारतीय ग्रामोफोन रिकार्ड भेंट मे दिये।

शिविर एक सैनेटोरियम के ढग का था। यहापर प्रतिवर्ष ऐसे चार शिविर होते है। ये शिविर लम्बी अवधि तक चलते है। ग्रीष्मकालीन शिविर तो काफी अधिक लम्बा—पूरे मौसम का होता है। काम करनेवाले स्थायी होते है। इन चारों शिविरो पर अनुमानत. २,६०,००,०००

रूबल सालाना खर्च हो जाता है।

इस शिविर का दैनिक कार्यक्रम कुछ इस प्रकार था—प्रात सात बजे उठना, आठ बजे नाश्ता, नौ बजे समुद्र तट पर सैर, डाक्टरी-जांच, भिन्न-भिन्न दलो मे अध्ययन, तैरना, खेल आदि, फोटोग्राफी, सुतारी का काम, बिजली और अन्य यन्त्रो की ड्राइग, मॉडल बनाना, प्रकृति का अध्ययन, साहित्य, नृत्य, सगीत, शतरज और लडकियो के लिए सीना-पिरोना आदि विषय वहा पढाये जाते हैं। खेलो मे वहा वॉलीबॉल और बास्केट बॉल होता है। एक बजे भोजन। इसके बाद दो घटे विश्राम। शाम को पाच बजे चाय और उसके बाद खेल। कुछ बच्चे किश्तिया लेकर सैर पर निकल जाते हैं। यह सब आठ बजे तक चलता है। फिर रात का भोजन। और उसके बाद गायन या पठन। सिनेमा, चिट्ठी-पत्री लिखना आदि दस बजे तक चलता है। दस बजे सो जाना सबके लिए लाजिमी है।

शिविर पर पहुँचते ही सबसे पहले बच्चो को दस भिन्न-भिन्न समूहों मे बाट दिया जाता है। प्रत्येक समूह मे साधारणतया तीस बच्चे होते हैं। वे स्वय ही अपना समूह पसन्द कर लेते हैं और प्रतिदिन के अध्ययन के लिए विषय भी चुन लेते है। यद्यपि अध्ययन करना महत्वपूर्ण माना जाता है, फिर भी इन वर्गो मे उपस्थिति आवश्यक नही।

समुद्र के किनारे इस तरह के और भी शिविर होते रहते हैं। परन्तु हमने जो शिविर देखा वह सबसे नया और सोवियत सघ मे सबसे अधिक प्रसिद्ध था। नि सन्देह उसकी योजना बहुत अच्छे ढग से की गई थी और वह बडा आकर्षक था। पण्डित नेहरू और श्रीमती इदिरा गाधी जब सोवियत सघ की यात्रा पर आए थे, तब उनको भी इसी शिविर मे लाया गया था।

इन शिविरो मे प्रत्येक राज्य से कितने पायनियर लिये जाय यह कोमसोमोल की केन्द्रीय कौन्सिल निश्चित करती है। जिलो से लिए जाने वाले पायनियर की सख्या राज्य निश्चित करता है। तदनुसार ठेठ नीचे की

स्कूल पायनियर समितिया अपनी-अपनी सख्या निश्चित कर लेती है। सर्वश्रेष्ठ पायनियरो को ही चुनकर यहा भेजा जाता है। इस प्रकार चुनकर यहा भेजा जाना बच्चो के लिए बडे सम्मान की बात मानी जाती है। पैंतालीस प्रतिशत जगहे उन बच्चो के लिए सुरक्षित रखी जाती है, जिनके माता-पिता गत महायुद्ध मे मारे गए थे। इसी प्रकार जो पढाई मे तेज है अथवा बहुत गरीब है, उनको भी प्राथमिकता दी जाती है। हमे कहा गया कि चुनाव योग्यता और जरूरत दोनो बातो को ध्यान मे रखकर किया जाता है। पायनियर खुद ही चुने जाने योग्य बच्चो के कई नाम सुझाते है। शिक्षको की समिति इनमे से अतिम नामो का चुनाव करती है। शिविर से विदा होने से पहले प्रत्येक पायनियर को एक प्रमाण-पत्र दिया जाता है, जिसमे लिखा जाता है कि उसने किन-किन विषयो का अध्ययन किया तथा किस विषय में उसे विशेष रुचि है।

इससे पहले एक बार हम लोग मोटर मे सिम्फरोपोल से याल्टा जा रहे थे। रात का भोजन रास्ते मे एक अच्छे रेस्तरा मे किया, जो एक सुन्दर टेकड़ी पर बना है। रात के आठ बजे होगे। टेकडी के ऊपर से हमने देखा कि नीचे एक 'कैंप फायर' हो रहा है। जब हमे बताया गया कि वह यग पायनियर्स का शिविर है, तो हम टेकडी से उतरकर शिविर के सचालको की अनुमति लेकर उसमे शरीक हो गये। बच्चे बहुत खुश हुए। उन्होने बडे प्रेम से हमारा स्वागत किया और स्वाभाविक रूप से अपने कार्यक्रम मे पूरी तरह से भाग लेने के लिए हमे मजबूर कर दिया। सब लडके और लडकिया अपनी वर्दियो मे थे। उनकी सख्या चार सौ के करीब होगी। कोई गा रहा था, कोई खेल रहा था। सब आनन्द कर रहे थे। इस 'आलुस्था पायनियर कैंप' के बच्चो ने हमे गीत सुनाये और नृत्य किया। प्रतिमा को भी गाने के लिए कहा। यह कोई पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम तो था नही। पूर्व-सूचना नही देने पर भी हम इस शिविर मे सम्मिलित हो सके और उनके साधारण कार्यक्रम मे भाग ले सके, इससे हमे बडी खुशी हुई।

२८ जून को हम याल्टा से कीव के लिए रवाना होनेवाले थे। उस दिन सुबह हमारे रवाना होने से जरा पहले अस्सी पायनियर अपने नेता के साथ हमारे होटल पर हमसे मिलने और हमे विदा देने के लिए आ पहुचे। इसकी पूर्व-सूचना उन्होने हमे नही दी थी। उन्होने हमे अपने लाल-स्कार्फ भेंट किये और चाहा कि हम उनकी शुभेच्छाए और प्रेम भारत के बच्चो को पहुचा दें। उनके उत्साह और उमग का पार नही था। वे सब बहुत प्यारे लग रहे थे। उनकी इस विदाई से हम सब अभिभूत हो गये, क्योकि वह हार्दिक और सहज थी।

३० जून को हम कीव के निकट एक और पायनियर-शिविर मे गये। वह उसी समय खुला था, इसलिए उसका नामकरण नही हो पाया था। वह भूगर्भ का अध्ययन करनेवाले बच्चो के लिए था। गर्मी के मौसम मे यहा उनके तीन शिविर होते है। प्रत्येक शिविर छब्बीस दिन का होता है। शेष नौ महीनो मे भी यहा कुछ कम अवधिवाले अनेक छोटे-छोटे शिविर लगते रहते है। इनमे ७ से १४ वर्ष के बच्चो को लिया जाता है। ये प्राय युक्रेन के ही होते है। कुछ बच्चे लेनिनग्राद तथा आर्कटिक प्रदेशो तक से आते हैं।

उस शिविर मे दो सौ चालीस व्यक्ति थे। हम जिस समय वहा पहुचे, वह उनके विश्राम का समय था। परन्तु हमारे पहुचने से पहले एक व्यक्ति को मोटर साइकिल पर वहा भेज दिया गया था और उसने हमारे आने की सूचना उन्हे पहले से ही दे दी थी। इसलिए जब हम पहुचे तो हमने देखा कि फाटक पर बच्चे दोनो ओर कतार बनाये और अपने हाथो मे फूल लिये हमारे स्वागत के लिए तैयार खडे है। जैसे ही हमने प्रवेश किया, बच्चो ने दोनो तरफ से हमपर फूल बरसाना शुरू कर दिया। बहुत ही रोमाच-कारी अनुभव था यह हम सबके लिए। सामने ही एक बडे गत्ते पर लिखा था--"हम युक्रेन के पायनियर अपने भारतीय मित्रो का स्वागत करते है।"

सारे बच्चे क्षणभर मे हमारे मित्र बन गये। प्रेम उनमे छलक रहा

था। हममे से हरेक के साथ दस-दस, पद्रह-पद्रह वच्चे हो लिये और लगे हमे अपने सारे शिविर मे घुमाने और हर चीज दिखाने। शिविर एक विशाल क्षेत्र मे लगा हुआ था, जिसमे वहुत वडे और सुन्दर वगीचे और खेल के मैदान भी थे। जब वच्चे इस प्रकार हमे घुमा रहे थे तव उनके साथ कोई वुजुर्ग शिक्षक आदि नही थे। वडे आत्म-विश्वास के माथ उन्होने हमारा मार्ग-दर्शन किया और चारो तरफ घुमा-घुमाकर अच्छी तरह से अपनी सारी प्रवृत्तिया दिखाते रहे। ढेर सारी चेरी और स्ट्रावेरी उन्होने इकट्ठी कर ली और हमे दी। उनका आग्रह था कि हम उनके सामने ही इन्हे खाकर समाप्त कर दे। उन्होने हर पेड और पौधे का इतिहास वताया। उन्हे किसने लगाया—उन्होने या उनके पहलेवाले वच्चो ने—और वह उनके शिविर के लिए कितने उपयोगी है, आदि। खेत और वगीचे मे काम करने मे उन्हे वडा मजा आता था।

भोजन के वाद मैने आठ वच्चो को अपने पास वुलाया। सव लडके थे। दस-वारह वर्ष के होगे। हमारे दुभाषिये के द्वारा मैने उनसे पूछा कि वे भारत के वारे मे क्या जानते है। उन्होने तुरन्त जवाव दिया। झिझक का तो नाम ही नही था। उन्होने कहा, "भारत एक वडा देश है। वम्वई और कलकत्ता ससार के वडे-से-वडे शहरो मे से है। भारत वड़ा समृद्ध है। वहा खूव सोना, चादी और दूसरी धातुए भी है। वहा जाडा नही होता। भारत के लोग शान्तिप्रिय है।"

ये है कुछ और प्रश्न और उनके जवाव—

प्रश्न – आपने इतने प्रेम से हमारा स्वागत क्यो किया ?

उत्तर—आप ऐसे देश से आये है, जो वहुत दूर है।

प्रश्न—आपने इतना प्रेम दिखाया, इसका कारण क्या यह है कि हम वहुत दूर से आये है या इसलिए कि हम भारत से आये है ?

उत्तर—ओह, इसलिए कि आप भारत से आये है।

प्रश्न—तो भारतवालो मे इतना विशेष प्रेम क्यो ?

उत्तर—इसलिए कि हम उनसे मित्रता वढाना चाहते है।

प्रश्न—हमसे ऐसा प्रेम बढाने के लिए आपको किसने सिखाया ?

उत्तर—लेनिन ने।

प्रश्न—क्यो ?

उत्तर—क्योकि यदि हम भारत से और दूसरे देशो से प्रेम बढायेगे तो फिर कभी युद्ध नही होगा।

प्रश्न—आप भारत मे किसीको जानते है ?

उत्तर—जवाहरलाल नेहरू, राधाकृष्णन्, राजकपूर, नरगिस।

प्रश्न—जवाहरलाल नेहरू के बारे मे आप क्या जानते है ?

उत्तर—वह भारत के प्रधानमन्त्री है। वह सारी सरकार को चलाते है। जब वह किसी दूसरे देश मे जाते है तो वहा के बडे-से-बडे नेताओं से मिलते है। वह चाहते है कि ससार के सारे देश आपस मे व्यापार करें। उनकी एक लडकी है। हमने दोनो को टेलीविजन पर देखा है। उन्होने कीव के बच्चो के लिए दो हाथी भेंट किये है। हमारे नेताओ ने उन्हे एक हवाई जहाज भेंट किया है।

एक बारह वर्ष के बच्चे ने कहा कि भारत को उद्योग खूब बढाने चाहिए और जहाज बनाने चाहिए। जब अग्रेज भारत पर राज करते थे तब नेहरू को आठ वर्ष जेल मे काटने पडे थे।

प्रश्न—क्या आप नेहरू को पसन्द करते है ?

उत्तर—जरूर-जरूर, बहुत अधिक। उनके चेहरे से प्रेम बरसता है। उनकी हँसी बडी मीठी है। वह बडे सरल है। हम उन्हे इसलिए चाहते है कि उन्हे काम से प्रेम है और वह जानते है कि काम कैसे करना चाहिए।

प्रश्न—आपने महात्मा गाधी का भी नाम सुना है ?

उत्तर—हा, हमारे अखबारो मे उनके बारे मे कुछ आया था।

सचमुच वह सारी बातचीत बडी मजेदार थी। उनका सामान्य ज्ञान आश्चर्यजनक था और बर्ताव मोहक। हा, गाधीजी के बारे मे उनके अज्ञान और लापरवाही की तरफ जरूर हमारा ध्यान आकर्षित हुआ।

शाम को वे हमे अपने खेल के मैदान पर ले गये। वहा हम उनके

साथ वॉलीबॉल खेले। खेल के बाद वे हमे सभा-भवन पर ले गये और सगीत तथा नृत्य द्वारा उन्होने हमारा मनोरजन किया। एक बच्चे ने, जो मेरे पास बैठा था, देखते-देखते पेंसिल से मेरा चित्र बना लिया और भारत के बच्चो के प्रति अपना प्रेम और शुभेच्छाए प्रकट करते हुए वह चित्र मुझे भेंट किया।

वे सब-के-सब चाहते थे कि हम भी उन्हे भारत की तरफ से प्रेम के प्रतीक स्वरूप कुछ चीज़ जरूर दे। उस समय हमारे पास भारत की योजनाओ के चित्रवाले कुछ कार्ड थे। वही हमने उन्हे दे दिये। उनकी इच्छा यह थी कि हम उनके साथ भारत के सिक्को की अदला-बदली करे। जब सारी चीजें समाप्त हो गईं तब उन्होने हमसे कहा कि अपने 'विजिटिंग-कार्ड' ही दे दो। मतलब, उन्हे हमारी और भारत की स्मृति के रूप मे किसी-न-किसी चीज के पाने की बडी इच्छा थी। फिर चाहे वह कोई भी चीज़ हो। परन्तु शर्त यह थी कि वे अपनी तरफ से बगैर कुछ दिये, हमसे कुछ भी लेना पसन्द नही करते थे। तो उन्होने हमें पोस्टकार्ड दिये, अपने सिक्के दिये, और कई तरह के बिल्ले दिये। दो बच्चे हमे अपने फाउण्टेन पेन देना चाहते थे। किन्तु जब हमने इन्हे लेने से इन्कार कर दिया तो वे बडे उदास हो गये। सब हमारे प्रति प्रेम से अभिभूत हो गये थे।

उन बच्चो की हार्दिक इच्छा थी कि वे भारत से सपर्क रखे। उनकी यह दिलचस्पी क्षणिक नही थी, क्योकि भारत लौटने के बाद उनमें से कई बच्चो के पत्र मुझे यहा मिले है। इनमे उन्होने अपनी शुभेच्छाए प्रकट की है और भारतीय बच्चो से मित्रता करने की इच्छा जताई है। मुझे विश्वास है प्रतिनिधि-मण्डल के दूसरे सदस्यो को भी इस प्रकार के पत्र जरूर मिले होगे।

सोवियत रूस मे पाच जगहो पर इन 'यग पायनियर्स' की अपनी रेलें भी है। प्रत्येक रेल के चार-चार, पाच-पाच स्टेशन है, जो थोडे-थोडे फासले पर रक्खे गए है। ये रेलें मामूली रेलो की अपेक्षा बहुत छोटी है

और इनका सारा काम यग पायनियर ही करते है। कीव मे जब हम बच्चो की यह रेल देखने के लिए गये तो तेरह वर्ष के बच्चे, इवगानी कोवा ने हमारा स्वागत किया। रेलवे के मुखिया की ड्यूटी पर वही था। इस रेल की लम्बाई चार किलोमीटर है, जिसके अन्दर तीन स्टेशन है। हर प्रकार से वह एक साधारण रेल के समान है। सारा काम, उदाहरणार्थ सिगनल देना, समय पर रेलो को चलाना, लाइन बदलना, स्टेशनो का प्रबन्ध और कागजो की खाना-पूरी करना आदि, बच्चे ही करते है। इससे बच्चो का आत्म-विश्वास बढाने मे बडी मदद मिलती है। उन्हे विश्वास हो जाता है कि जिम्मेवारी का जो भी काम उन्हे सौपा जाता है, उसे वे भली प्रकार कर सकते हैं, भले ही वह कितना भी बडा और खतरनाक हो। केवल इजिन-विभाग मे एक बडा आदमी उनके साथ रहता है, जो जरूरत पडने पर उनकी मदद कर देता है। बच्चो ने अपनी गाडी मे बैठाकर हमे सैर भी कराई।

हमे बताया गया कि केवल युक्रेन राज्य मे २४००० पायनियर सर्कल है, जिनमे ६,००,००० सदस्य है। केवल कीव के उपनगरो मे, जिस प्रकार के शिविरो मे हम गये थे उस तरह के, बयासी शिविर और है। इनमे भेजे जानेवाले बच्चो के खर्च के लिए माता-पिता प्रत्येक बच्चे के लिए नव्वे रूबल देते है, जो असली खर्च का लगभग तीस प्रतिशत होता है। बाकी का खर्च ट्रेड यूनियन उठाती है। शिविर मे आनेवाले बच्चो मे से दस प्रतिशत बच्चे नि शुल्क होते है।

शिविरो पर किये जानेवाले खर्च के विभाजन के बारे मे जो बातें अलग-अलग जगह हमे बताई गई, उनमे जाहिरातौर पर कोई भूल मालूम होती है। शायद शिविर अलग-अलग प्रकार के है और उनका सचालन भी अलग-अलग प्रकार से किया जाता है। परन्तु हमे इस बारे मे सही बात की पूरी जानकारी नही मिल सकी।

सबसे बडी बात तो यह है कि यह सारा आन्दोलन बडा महत्वपूर्ण और प्रभावोत्पादक है। नि सन्देह बच्चो को तैयार करने की यह पद्धति

बडी कारगर है। इन शिविरो के स्वस्थ, हँसमुख, बुद्धिमान और उत्साही बच्चो को देखकर हमें लगा कि सोवियत सघ की यह नई पीढी अधिक मैत्री-परायण तथा मिलनसार होगी। इसके साथ ही हमे इस बात पर बराबर आश्चर्य होता रहा कि यह सारा सगठन पूरी तरह से कोमसोमोल के मातहत और उसके नियन्त्रण मे क्यो रक्खा गया है। कोमसोमोल तो स्वय कम्यूनिस्ट पार्टी के नियन्त्रण और आधीनता मे है। लोकतत्री विचारो के होने के कारण हम समझ नही पाये कि जिस सगठन का सारा खर्च शासन उठाता है, उसका नियन्त्रण-सचालन केवल एक राजनैतिक दल के हाथो मे दे देना कहातक उचित है। यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है और सभव है कि आनेवाले वर्षों मे इसके बहुत गम्भीर परिणाम हो। इससे या तो रूस के सारे लोग एक-दलीय शासन-पद्धति मे आस्था रखनेवाले मानव-यन्त्र बन जायगे या एक-दलीय शासन-पद्धति के सिद्धान्त का ही विस्फोट हो जायगा। भविष्य नौजवानो के हाथो मे है और इनका जिस प्रकार से वहा निर्माण हो रहा है, उसको देखते हुए लगता है कि भविष्य शायद बेहतर ही होगा।

जो हो, इन बाल-मित्रो से मिलना हमारे लिए नि सन्देह एक बडा सुन्दर अनुभव रहा। सोवियत रूस की हमारी यात्रा की यह एक विशेष घटना है। आनेवाले वर्षो मे शीघ्र ही सोवियत रूस का शासन करनेवाली इस भोली-भाली प्यारी पीढी के निर्मल प्रेम को हम कभी नही भुला सकते। उसने अपने प्रेम से हमारे दिलो को जीत लिया। सोवियत रूस के बच्चो का हमारे चित्त पर क्या असर हुआ, वह सक्षेप मे उन चद पक्तियो मे आ जाता है, जो हमने एक शिविर की 'विजिटर-बुक' मे हिन्दी मे लिख दी थी। वे इस प्रकार है—

"आपके इस यग पायनियर कैप को देखकर भारतीय युवक काग्रेस के हम सातो प्रतिनिधि बहुत खुश हुए। आपके बच्चो ने जिस तरह प्रेम-पूर्वक हमारा स्वागत किया है, उसे हम कभी नही भूल सकेंगे।

"आपने बच्चो के लिए बडा सुदर इन्तजाम किया है। इसके लिए आपको हार्दिक बधाई है। बच्चे स्वस्थ, हँसमुख, प्रसन्न और होशियार है। वे बडे मिलनसार और अतिथि-सत्कार मे निपुण है। स्वाभाविक प्रेम और आत्म-विश्वास से उन्होने हमारे साथ वर्ताव किया। हम लोग उनके इस असीम स्नेह को अपने साथ ले जा रहे हैं और अपने देश मे लौटकर आपका यह स्नेह अपने देश के बच्चो को देंगे।

"आप शान्ति को जी-जान से पसद करते है। उसमे आप बच्चो को—इस नई पीढी को—पूरी सफलता मिले, यही हमारी शुभ कामना है।"

. ४ .

कोमसोमोल

सोवियत रूस की 'यग कम्यूनिस्ट लीग' का नाम 'कोमसोमोल' है। यह रूस का एकमात्र युवक-सगठन है। इसका विस्तार अत्यन्त विशाल है। कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति के साथ हुई हमारी एक मुलाकात मे हमे बताया गया कि यद्यपि यह एक राजनैतिक सगठन है, तथापि यह कम्यूनिस्ट पार्टी की सस्था नही है। तब भी, इसका सगठन, सचालन और मार्गदर्शन पूर्णत कम्यूनिस्ट पार्टी द्वारा ही होता है। यह भेद की बात समझ सकना हमारे लिए मुश्किल था। हम समझ नही पाये कि एक राजनैतिक सगठन को किस तरह से स्वतत्र माना जाय, जबकि वह पूरी तरह से एक ही पार्टी के नियत्रण मे है।

चालीस वर्ष पूर्व कम्यूनिस्ट पार्टी ने कोमसोमोल का निर्माण किया था। इस समय उसकी सदस्य-सख्या १,८०,००,००० है। उसकी सदस्यता सबके लिए खुली नही है। जैसा कि उन्होने बताया, केवल उन्ही लोगो को उसका सदस्य बनाया जाता है, जो उसके योग्य हो। इस बात को उन्होने अधिक साफ नही किया। परन्तु इसका अर्थ यही था कि किसी-को भी इस सगठन मे तभी शरीक किया जाता है, जब उसको ठोक-बजाकर पूरी तरह से परख लिया जाता है और वह उनकी परीक्षा, पार्टी के आचार-विचार आदि मे सही पाया जाता है।

हमें यह भी बताया गया कि कोमसोमोल का मुख्य हेतु युवको को कम्यूनिस्ट पार्टी के काम के लिए तैयार करना है। कोमसोमोल के ध्येय-सूत्र ये है—"अपने देश को प्यार करो, अच्छे युवक बनो। सोवियत भूमि के

सभी निवासियो का आदर समानता के आधार पर करो। इनमे रग और जाति का भेद मत मानो। मानवता, मित्रता, सेवा-सहायता समूह-वाद और श्रम की प्रतिष्ठा को आत्मसात करो। युवको की परवरिश इस प्रकार करो कि वे बलवान और बहादुर बनें।"

कोमसोमोल, उनके शब्दो मे, 'लोकतन्त्री केन्द्रीकरण' के सिद्धान्त पर काम करता है। उनके विचार मे लोकतत्र की सर्वोत्तम पद्धति यही है। ऐसा माना जाता है कि इस सगठन का काम सदस्यो की सम्मिलित सम्मति से चलता है। इसमे सब सदस्य अपने विचार स्वतन्त्रतापूर्वक प्रकट कर सकते हैं। कोमसोमोल का सारा कार्यक्रम इन्ही रायो के आधार पर बनाया जाता है।

कम्यूनिस्ट पार्टी के उस समय के ताजा अधिवेशन मे यह तय किया गया कि प्राथमिक शाखा के चुनावो मे मतदान हाथ उठाकर हो, गुप्तरूप से चिट्ठिया डालकर नही, जैसा कि पहले होता था। उनका मानना है कि कम-से-कम सगठन की प्राथमिक इकाइयो के स्तर पर तो सदस्यो को अपने विचार स्वतन्त्रतापूर्वक और नि सकोच रूप से प्रकट करने देने चाहिए। इसका सीधा अर्थ यही होता है कि प्राथमिक शाखाओ के स्तर पर भी, कम-से-कम अभीतक तो, आज़ादी नही थी। ऊपर के स्तरो पर तो आज भी नही है।

यद्यपि वे कहते है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी स्वतत्र राय रखने का अधिकार है और यह भी कि किन्ही भी पाच जनों की राय एक-सी नही हो सकती, तथापि जहातक कोमसोमोल के लोगो का ताल्लुक है, नीचे लिखी बातो मे सब एक मत है—

१ साम्यवाद का प्रचार और विस्तार हो।

२ उनके सगठन मे वही लिये जाय, जो साम्यवाद मे विश्वास रखते है।

३ आधुनिकतम यन्त्रो की सहायता से अधिक-से-अधिक उत्पादन किया जाय।

४ विज्ञान और यन्त्र-शास्त्र की प्रगति का पूरा-पूरा लाभ मज-

दूरो को दिया जाय।

५. नये-नये कारखाने, बिजलीघर, इस्पात के कारखाने, आरण-विक बिजलीघर, कोयले की खानें, रासायनिक उद्योग बनाने मे मदद की जाय, खेती का उत्पादन बढाया जाय और पशु-सवर्धन को प्रोत्साहन दिया जाय।

कोमसोमोल ने निश्चय किया है कि इन सब कामो के लिए वह राष्ट्र को दस लाख युवक तथा युवतिया तैयार करके देगा।

श्री मिसियासेत्सेव कोमसोमोल-सगठन के दस उच्चतम अधि-कारियो में से एक है। उनका दावा है कि उनकी शिक्षा-प्रणाली ससार मे सर्वश्रेष्ठ है। उन्होंने कहा कि अब इस बात को पश्चिम के राष्ट्र भी मानने लगे है। वह कहते हैं कि उनकी शिक्षा-पद्धति बच्चो को केवल साक्षर नही, बल्कि सस्कारशील भी बनाती है। अपने नये कार्यक्रम मे उन्होने हाईस्कूल की पढाई मे औद्योगिक और यान्त्रिक प्रशिक्षण को भी शामिल कर लिया है। युवको को इन विषयो की जानकारी देने के लिए उन्होने नई किताबो का प्रकाशन आरम्भ किया है। अखबार, रेडियो, टेलि-विजन और मासिक पत्रिकाओ का उपयोग भी इस कार्य के लिए ये कर रहे है। वह चाहते है कि उनके युवको को राजनीति का अच्छा ज्ञान हो, उनके विचार निश्चित और पक्के हो तथा मार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तो से उन्हे पूरी तरह परिचित होना चाहिए। उनका सारा प्रयास युवको को इस लायक बनाने मे लगा हुआ है कि आवश्यकता पडने पर वे शासन का भार सभाल लें।

कोमसोमोल के पिछले अधिवेशन मे श्री ख्रुश्चोव ने कोमसोमोल के अगले कार्यक्रम की नई रूपरेखा प्रस्तुत की। हमने पूछा कि आप तो कहते है कि आपका सारा कार्यक्रम सदस्यो की राय से निश्चित होता है तब आपका अगला कार्यक्रम श्री ख्रुश्चोव ने कैसे निश्चित किया ? उन्होंने कहा, "बेशक, आपका कहना सच है। हम अपना कार्यक्रम सदस्यो की राय मे ही बनाते है। परन्तु हमारे

सदस्य जानते है कि हमारे नेताओ का ज्ञान उनसे भी बढकर है । इसलिए हमे उनके मार्गदर्शन की जरूरत रहती है । हम मानते है कि हमारे नेताओ द्वारा बनाया कार्यक्रम हमारे लिए सर्वोत्तम है । इसलिए हम उनको हमेशा अपने अधिवेशनो मे बुलाते है और उनकी सलाह और मार्गदर्शन पाकर हमे बडी खुशी होती है । यदि उनकी सलाह हमारी ज़रूरतो और आकाक्षाओ को पूरा नही करेगी तो स्वाभाविक ही उनका बताया हुआ कार्यक्रम लोकप्रिय नही होगा । अपने नेताओ की राय हम इसलिए मानते है कि हमे विश्वास है कि उनके विचार पार्टी के विचार है ।" उनकी राय मे पार्टी की राय से चलना बहुत जरूरी है, नही तो पार्टी टूट जायगी । वे मानते है कि ख्रुश्चोव ने कोमसोमोल के गत अधिवेशन मे अपने भाषण मे जो बातें कही, वे युवको की सही आकाक्षाओ को ही प्रकट करती थी ।

हम श्री फरसोप से भी मिले । वह लेनिनग्राद की कोमसोमोल के द्वितीय मत्री है । इस शाखा की सदस्य सख्या ३,८०,००० है, जो ५००० दलो मे बटी है । इस प्रदेश मे सैतालीस जिले है, जिनमे से बीस केवल लेनिनग्राद शहर मे है । पाच सौ पूरा समय देनेवाले कार्यकर्त्ता इनके दैनिक कार्यों मे लगे रहते है । इनका मुख्य कार्य युवको को अच्छे कार्यकर्त्ता बनने की तालीम देना होता है और इसके लिए राजनीति की सही शिक्षा, सास्कृतिक कार्यक्रम के द्वारा विश्राम व मनो-रजन की व्यवस्था की जाती है ।

हमे बताया गया कि उनके सदस्यो मे से १६,००० उत्तर और पूर्व के प्रदेशो मे स्वेच्छा से निर्माण-कार्य करने के लिए गये है । २०,००० अन्यत्र नई जमीन को तोडने मे लगे हुए है । मकानो के निर्माण मे तीस लाख श्रम-घण्टो (एक मनुष्य एक घण्टा काम करे, वह एक श्रम-घण्टा) का काम किया गया । उनके ग्रीष्मावकाश का कुछ समय सामूहिक खेतो पर काम करने मे बीता ।

हमने उनसे पूछा कि स्वेच्छा से काम करने से उनका क्या मतलब है,

और इस प्रकार जो लोग स्वेच्छापूर्वक काम करना स्वीकार करते है, उनके लिए क्या शर्ते होती हैं तथा उन्हे क्या मुआवजा दिया जाता है। इसके उत्तर मे उन्होने हमें बताया कि इन लोगो के भोजन और निवास का खर्च उस राज्य का कोमसोमोल उठाता है और प्रवास-खर्च प्रत्येक स्थान की सस्था। स्वयसेवक प्रतिदिन आठ घण्टे काम करते है। उन्हे अपने काम का पूरा मेहनताना मिल जाता है। अगर कोई स्वयसेवक अपने स्थान से बाहर जाना स्वीकार कर लेता है तो उसे सामान्य दरो से ड्योढा मेहनताना दिया जाता है। कभी-कभी वे सबकी आय को इकट्ठी कर लेते है और फिर आपस मे बाट लेते हैं। ये शिविर प्राय छुट्टियो मे एक महीने के लिए होते है। हमको बताया गया कि ऐसे एक शिविर मे प्रत्येक स्वय-सेवक को पारिश्रमिक के रूप मे, अपने सारे खर्च काट लेने के बाद, २००० रूबल (करीब १६६० रुपये) मिले। हमने उनसे पूछा कि जब आप उन्हे मेहनताना देते है तो इसे ऐच्छिक श्रम कैसे कहते है ? हमने यह भी पूछा कि क्या यह एक तरह की बेगार नही है, जबकि देश के नाम पर उनसे काम लिया जाता है और यदि वे नही करते है तो उन्हे नीचा समझा जाता है ? इसपर हमे कहा गया कि पहले उनको मेहनताना नही दिया जाता था। किन्तु अब उनके पास धन की कमी नही है, तब उन्हे पैसा क्यो नही दिया जाय ? फिर भी वह स्वेच्छा से किया गया काम है। किन्तु अन्त मे वे हमारी बात मान गये कि यह मजदूरो की कमी को पूरा करने का एक तरीका था।

पुरुषो और स्त्रियो को समान मेहनताना दिया जाता है। स्त्रियो को अपेक्षाकृत हलका काम देने की कोशिश करते है। लेनिनग्राद क कोमसोमोल के सदस्यो मे कम्यूनिस्ट पार्टी के २००० सदस्य है। इस कोमसोमोल-समिति का वार्षिक व्यय ९३ लाख रूबल का है।

ओमिया की कोमसोमोल के पहले मन्त्री श्री एरिक पोकरोवस्की ने हमे बताया कि वे विद्यार्थियो से २० कोपेक (लगभग १६ नये पैसे) मासिक

शुल्क के रूप मे लेते है और मजदूरो से उनके वेतन का डेढ प्रतिशत से अधिक नही। क्रीमिया के कोमसोमोल मे एक लाख सदस्य है। वे धातु के बेकार टुकडे सडको और खेतो मे से इकट्ठा करके सरकार को बेच देते है। इसी प्रकार वे पुराने अखबार भी इकट्ठे करके बेचते है। इन्होने अपने परिश्रम से सिम्फरोपोल मे एक बडा पार्क बना लिया है, जिसका मूल्य दस लाख रूबल कूता गया है। इनमे से एक सर्वोत्तम कार्यकर्ता को नगर की म्युनिसिपैलिटी ने ६००० रूबल भेंट किये। ऐसी भेटें या तो कार्यकर्ता स्वय रख लेता है या सगठन को दे देता है। कभी-कभी कोमसोमोल के सदस्य अपने कारखानो मे, स्वेच्छा से, अधिक समय काम करके इस प्रकार जो अधिक पैसा मिलता है, उसे अपने सगठन को दे देते है। क्रीमिया के कोमसोमोल का कुल वार्षिक व्यय बीस लाख रूबल के लगभग होता है। अपने कार्यकर्ताओ को वे औसतन ६०० से ७०० रूबल मासिक वेतन देते है। अगले पाच वर्षों के लिए उनका मुख्य कार्यक्रम शराब के लिए अधिक-से-अधिक अगूरो की खेती बढाना है। इस अवधि मे वे इस राज्य की कुल जेरकाश्त जमीन का पाचवा हिस्सा अगूरो की खेती मे ले आना चाहते है।

हमे यह कुछ अजीब-सा लगा कि आमतौर पर जो काम सरकार के करने के होते है, वे युवक-सगठनो द्वारा अपने प्रमुख कार्यों के रूप मे क्यो ले लिये जाते है ? इसका कारण शायद यही है ये सगठन ऐच्छिक युवक-सस्थाए न होकर सरकारी काम करने की एजेंसी बन गये है और हमारे यहा के 'अधिक अन्न उपजाओ'-विभाग की तरह काम करते है।

कोमसोमोल की प्राथमिक इकाइया कारखानो, खदानो, स्कूलो, सामूहिक खेतो, सरकारी खेतो और यत्रो की मरम्मत करनेवाले कारखानो पर जहा-जहा भी युवक काम करते और पढते है, होती हैं। एक इकाई बनाने के लिए कम-से-कम तीन सदस्य होने चाहिए। ऐसी अनेक इकाइयो को मिलाकर एक जिला बनता है। मास्को मे इस

प्रकार के बाईस जिले है । कुछ प्राथमिक केन्द्रो की सदस्यता ५००० है और इसकी सचालक-समिति मे तीन से लेकर पद्रह सदस्य है। जिला-समिति मे चालीस से लेकर एक सौ बीस सदस्य होते है ।

कोमसोमोल राज्य या केन्द्रीय सरकार के पदो के लिए अपने सदस्यो की सिफारिश करती है। इसकी केन्द्रीय कौन्सिल किसी भी शासकीय सस्था के काम मे सक्रिय हस्तक्षेप कर सकती है । जो लोग सोवियत कानूनो का भग करते पाये जाय, उनका भी वे विरोध कर सकते है ।

इसका एक उदाहरण हमे बताया गया । किसी बडे पन-बिजली स्टेशन का एक मुखिया है। वह एक देश-प्रसिद्ध वैज्ञानिक भी है। युवको की भलाई का वह पूरा ध्यान नही रखता था, फिर भी वहा की स्थानीय कोमसोमोल-समिति इसके साथ रिआयत करती रही । इससे कोमसो-मोल की केन्द्रीय कौसिल अपनी स्थानीय समिति से नाराज रही । उसने इस वैज्ञानिक के विरुद्ध कडी कार्रवाई करने की सिफारिश ऊपर भेज दी ।

उनका दावा है कि हर रूसी युवक को यह निश्चय हो गया है कि साम्यवाद ही सबसे उत्तम पद्धति है। इसीकी वजह से उनका देश दारिद्र्य मे से ऊपर उठकर इतना बलवान बना है । इस विषय मे उनके बीच कोई मतभेद नही है । यद्यपि हर युवक साम्यवाद को मानता है, तथापि कोमसोमोल के लिए वे केवल 'योग्य' और 'अच्छे' युवको का ही चुनाव करते है ।

कोमसोमोल अपने सदस्यो से नाममात्र का जो शुल्क लेता है, उससे सस्था को कोई विशेष आमदनी नही होती । फिर भी सगठन के अनुशासन की दृष्टि से वह लिया जरूर जाता है। कोमसोमोल विभिन्न देशी और विदेशी भाषाओ मे कोई चालीस पत्रिकाए और एक सौ इक्कीस समाचार-पत्र निकालता है, जिनसे उसे काफी आय हो जाती है ।

कोमसोमोल के सदस्यो मे से साम्यवादी दल, समय-समय पर

अच्छे-अच्छे युवको को चुनकर अपना सदस्य बनाता रहता है। इस प्रकार कोमसोमोल को साम्यवादी दल का स्थायी स्रोत कहा जा सकता है। चुनावो मे कोमसोमोल के सदस्यो और पार्टी के लोगो के बीच कभी सघर्ष नही होता।

इसमे सदेह नही कि यह सगठन बहुत व्यापक और शक्तिशाली है। परन्तु एक दल-विशेष के हित के लिए शासकीय कोष से इस प्रकार धन खर्च करना कहातक उचित है, यह मेरी समझ मे नही आया। एक पार्टी को इस प्रकार सरकार की बराबरी का दर्जा देना, क्या जनता के प्रति अन्याय नही है ? पार्टी को शासन के काम-काज मे हस्तक्षेप करने का जो अधिकार दे दिया गया है, यह भी क्या उचित है ? कोमसोमोल के सदस्य हर समय और हर जगह पार्टी का बोलबाला रखना चाहते है और उसका प्रभाव बढाने का सतत उद्योग करते रहते है। जब लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए पार्टी को इस तरह बराबर प्रयत्न करते रहना पडता है तो क्या उसकी लोकप्रियता का दावा सदिग्ध नही है ? इस प्रकार के कुछ सन्देह हमारे दिलो मे उठते रहे।

: ५ :

युवक नेताओं के बीच

जब हम सोवियत सघ पहुचे तब कामरेड रोमानोवस्की और कामरेड पोपोव ब्रुसेल्स गये हुए थे। ये दोनो वहा के युवको के मुख्य नेता थे। कामरेड रोमानोवस्की उस समय सोवियत युवक-सगठन-समिति के सभापति थे[1] और कामरेड पोपोव उप-सभापति। पोपोव तो भारतीय युवक काग्रेस के अधिवेशन मे रूस के प्रतिनिधि की हैसियत से भारत आये थे, और हमे रूस आने का निमत्रण उन्होने ही दिया था। तबसे हमारा उनके साथ व्यक्तिगत परिचय हो गया था। चूकि ये दोनो सज्जन वहा नही थे, इसलिए प्रारम्भ मे सगठन के बारे में हमारी कोई बातचीत नही हो सकी। इस बीच कामरेड शेवचेंको, जो समिति के दूसरे उप-सभापति थे, हमसे दो बार मिल चुके थे। परन्तु इस बातचीत का विषय केवल यात्रा का कार्यक्रम निर्धारित करना ही था। इसलिए जब हम रूस की थोडी यात्रा कर चुके और मास्को लौटे तब इन सब प्रमुख नेताओ के साथ वार्तालाप का बदस्तूर आयोजन किया गया।

कामरेड रोमानोवस्की, कामरेड पोपोव और शेवचेको के अतिरिक्त इस बातचीत मे कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति के पहले मत्री कामरेड सोमिचास्की[2] और कामरेड मूर्तजाई भी थे। कामरेड मूर्तजाई

---

[1] अब कामरेड रोमानोवस्की सोवियत रूस की केन्द्रीय सरकार म सास्कृतिक विभाग के उपमत्री नियुक्त हो गये है।

[2] अब वह वहा के प्रतिरक्षा-मत्रालय में गुप्तचर विभाग के उच्चतम अधिकारी हो गये हैं।

कोमसोमोल के एक मत्री और उज़वेकिस्तान के एक युवक नेता थे। 'कोमसोमोल प्रवदा' के सपादक कामरेड निप्पोमिसेट और सवाददाता कामरेड केसिस भी मौजूद थे। अव तो कामरेड केसिस भारत मे ही आ गये हैं। वह यहा अपने पत्र के स्थायी सवाददाता नियुक्त हुए है।

सभापति और अन्य युवक नेताओ ने वडे प्रेम से हमारा स्वागत किया। कुशल प्रश्न हुए और हमारी मुख्य वातचीत शुरू हुई।[1]

कामरेड रोमानोवस्की ने कहा, "हमारे निमन्त्रण को स्वीकार करके आप यहा आये इसकी हमे वहुत खुशी है। युवक-सघ और सोवियत सघ के तमाम युवको की तरफ से आपका स्वागत करते हुए मुझे वहुत प्रसन्नता होती है। सोवियत सघ की जनता और खास तौर पर यहा के युवको को भारत और उसकी जनता से वहुत प्रेम है। इसके कई कारण हैं। सबसे वडा कारण तो अतर्राष्ट्रीय शान्ति है, जो इन दोनो राष्ट्रो का उद्देश्य है। हमे यह जानकर वडा आनन्द हुआ कि आप यहा कुछ स्थानो की सैर कर चुके हैं, यहा के युवक-सगठनो को आपने देखा है तथा उनके प्रतिनिधियो से भी आप मिल चुके हैं। इनके वारे मे आपके क्या विचार है, यह हम जानने को उत्सुक है। क्या आप कुछ वतायेंगे ?"

मैंने कहा, "आपकी समिति ने यहा आने के लिए हमे जो निमन्त्रण दिया और यहा पहुचने पर जिस प्रकार हमारी यात्रा का प्रवन्ध किया तथा हर जगह हमारी सुख-सुविधाओ का जो इतना अधिक ख्याल रक्खा, उस सवके लिए हम वहुत आभारी है। हमारे स्वागत-सत्कार मे जिन-जिन मित्रो ने इतना कष्ट उठाया, उन सवके प्रति हम अपनी कृतज्ञता और आभार आपके द्वारा पहुचाना चाहते है। जहातक इस देश की जनता और काम-काज के वारे मे हमारे विचारो की वात है,

---

[1] वातचीत का यह विवरण हमारे प्रतिनिधि-मण्डल के एक सदस्य श्री सतपाल मित्तल द्वारा लिखे गए नोटों पर आधारित है।

इतने थोडे समय मे कोई राय कायम करना बहुत कठिन है। हमारी सबसे बडी कठिनाई तो भाषा की रही है। फिर भी कुल मिलाकर हमारे दिलो पर जो असर पडा है, वह आपको सक्षेप में बताने का मैं अवश्य प्रयत्न करूगा।

"यह तो हम निश्चित रूप से कह सकते है कि रूस की जनता और यहा के युवको और युवतियो के दिलो मे भारत की जनता के प्रति काफी आदर और प्रेम है। जहा-जहा भी हम गये, बडे प्रेम से हमारा स्वागत किया गया। अनेक जगहो पर वह स्वागत स्वयस्फूर्त था। कीव मे तो लोगो ने हमे बुरी तरह घेर लिया और हम सबको अपने प्रेम से मानो अभिभूत ही कर डाला। इन सब बातो का हमारे दिलो पर बहुत गहरा असर हुआ है। हमने यह भी देखा कि यहा की जनता सच्चे दिल से शान्ति चाहती है।

'अपनी यात्राओ के दौरान बच्चो और युवको के सगठनो का अध्ययन करने का हमने खासतौर पर प्रयत्न किया। इस सम्बन्ध में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने का और यह जानने का प्रयत्न किया कि अपने देश के युवक-सगठनो को मजबूत करने मे आपके इन अनुभवो से हम कितना लाभ उठा सकते हैं।

"हमने बच्चो का 'यग पायनियर्स' सगठन तथा युवको का 'कोमसोमोल' सगठन – दोनो देखे। यग पायनियर्स के द्वारा बच्चो का यहा जितना ध्यान रक्खा जाता है, उसे देखकर हम बहुत प्रभावित हुए है। युवक-सगठन कोमसोमोल को भी हमने भली प्रकार देखा और जाना कि वह भी बडा विशाल तथा शक्तिशाली सगठन है। कीव मे सोवियत रूस के प्रथम युवक-दिवस के समारोह मे हम सम्मिलित हो सके, इससे हमे बहुत आनन्द हुआ। यह समारोह बडा प्रभावोत्पादक था। युवको के शिक्षण और शारीरिक विकास, खेल-कूद और सस्कृति-निर्माण पर वे जितना ध्यान दे रहे है और जितनी तेजी से प्रगति कर रहे है, यह देखकर हमे हर्ष हुआ।"

विज्ञान और यन्त्र-शास्त्र के क्षेत्र मे रूस की तीव्र प्रगति और इसके लिए उठाये गए कष्टो का भी मैंने जिक्र किया। मैंने उन्हे बताया कि वहापर जनता को इतने दिनो के बाद भी अपनी रोजमर्रा की जरूरत की चीजो के लिए बहुत अधिक ऊची कीमतें देनी पड रही है। यह समस्या अभी तक हल नही हो पाई है। इसी प्रकार रहने के मकानो की समस्या की तरफ भी वे अभी ठीक से ध्यान नही दे पाये। फिर स्पुतनिक के निर्माण पर मैंने उन्हे बधाई दी और यह आशा प्रकट करते हुए कि उसका उपयोग शान्ति के लिए ही किया जायगा, मैंने कहा, "यदि इसका उपयोग शान्ति के लिए किया गया तो कहा जायगा कि आप लोगो ने सारी मानव-जाति के लिए बडा त्याग किया और बहुत कष्ट उठाये। परन्तु यदि स्पुतनिक का उपयोग युद्ध के लिए किया गया तो माना जायगा कि यह सब त्याग आपने केवल अपने राष्ट्रीय स्वार्थ के लिए किया।"

इसी प्रकार मास्को विश्वविद्यालय, ओरिएण्टल इस्टीट्यूट्स जमीन के अन्दर चलनेवाली रेल, उद्योग तथा कृषि-प्रदर्शनिया इत्यादि देखकर हमे जो खुशी हुई, उसका भी उल्लेख किया और कहा कि इन चीजो के निर्माण पर किसी भी देश को गर्व होना स्वाभाविक है।

मैंने कहा कि अनेक बातो मे हमारे उद्देश्य, हमारी दृष्टि और हमारे विचार अलग-अलग है। फिर भी जिन बातो मे हमारे विचार मिलते है, उनमे हम अवश्य एक साथ काम कर सकते है। उदाहरणार्थ, हम दोनो राष्ट्र चाहते है कि ससार मे शान्ति रहे तो अतर्राष्ट्रीय शान्ति के पक्ष मे ससार मे जन-मानस जाग्रत करने का काम तो हम दोनो राष्ट्र जरूर कर सकते है।

रोमानोवस्की—"आपसे यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि मास्को, लेनिनग्राद, याल्टा और कीव की जनता ने आपके योग्य ही आपका स्वागत किया। इस देश के बारे मे आपके विचार सुनकर भी हमे बडी

खुशी हुई, खासकर इस तथ्य के उल्लेख से कि रूस की जनता शान्ति चाहती है ।

"मुझे यह भी लगता है कि हमारे बीच विचार का, सिद्धान्तो का और दृष्टि का भेद होने पर भी कई बाते ऐसी है, जो हमे एकता के बन्धन मे बाधे हुए हैं ।

"यह सच है कि हमारे सिद्धात अलग अलग है । हम उन्हे एक दूसरे पर जबर्दस्ती नही लाद सकते । फिर भी अपने आपसी सम्बन्धो को हम अधिक मजबूत बना सकते है । मुख्य बात हमारे आपसी मतभेद नही बल्कि वे बातें हैं, जिनमे हम दोनो को समान दिलचस्पी है ।

"आपकी यह यात्रा और पिछले वर्ष हमारे प्रतिनिधि-मण्डल की भारत-यात्रा हमारे आपसी सबधो को मजबूत बनानेवाले सक्रिय कदम हैं । अब हमारे मित्र यह जानने के लिए उत्सुक है कि आपकी यह यात्रा हमारे आपसी सम्बन्धो को और भी दृढ बनाने मे प्रत्यक्ष रूप से किस प्रकार सहायक हो सकती है ? हम एक साथ मिलकर कौन-कौन-से काम कर सकते है ?"

उत्तर में मैने कहा, "पूरा विचार किये बगैर किसी निश्चित नतीजे पर पहुचना ज़रा कठिन है। यह तो हमारे देश मे वापस पहुचने पर मित्रो के साथ बैठकर इस यात्रा के प्रकाश मे सारी स्थिति का विचार और चर्चा करने पर ही निश्चय किया जा सकता है।

"दरअसल आपकी समिति के साथ हमारा यह पहला ही प्रत्यक्ष सपर्क है। युवक-समारोह के अवसर पर दर्शक के रूप मे हम लोगो का आना एक अलग बात थी । हमे अभी एक दूसरे को समझना है। इसलिए अच्छा है कि हम इस आपसी सपर्क को जारी रक्खें, जिससे हम एक दूसरे की प्रवृतियो को अच्छी तरह से समझ सके। साहित्य का आदान-प्रदान और पत्र-व्यवहार तो ज़ारी रह सकता है ।"

रोमानोवस्की—"भारत के युवक-आन्दोलन के प्रति हमारा रुख स्पष्ट है । भारत के पुनर्निर्माण में युवक-काग्रेस जो काम कर रही है,

उसे हम जानते हैं। हमारा मतभेद कहा-कहा है, यह भी प्रत्यक्ष है। परन्तु हमारा कर्तव्य है कि जो बातें हमारे और आपके बीच सामान्य हैं, जो दोनो के लिए हितकर है, उनको हम अधिक महत्त्व दें। हमारे दोनो देश और उनके युवक-सगठन शान्ति चाहते है। वे यह भी चाहते हैं कि ससार के सब राष्ट्र मित्रता से रहे और भावी समाज सुखी एव समृद्ध हो। ये कुछ सर्वसामान्य बातें हैं, जिनपर हम अपनी भावी प्रवृत्तिया आधारित कर सकते है और जो हमे अवश्य एक दूसरे के निकट ला सकती है।

"भारत की आजादी के सघर्ष मे रूस की जनता का सदा पूरा-पूरा नैतिक समर्थन और सहयोग रहा है।

"श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा हमारे देश की यात्रा और हमारी सरकार के प्रतिनिधियो के द्वारा भारत की यात्रा से हमारे पारस्परिक सम्बन्ध कुछ दिनो से बहुत अच्छे हो गये है। हमारे व्यापारिक और सास्कृतिक सम्बन्धो ने उन्हे और भी दृढ बना दिया है। इस मित्रता से अतर्राष्ट्रीय शाति को कायम करने मे काफी मदद मिल सकती है।

"पुस्तको, पत्रिकाओं, विवरण तथा अन्य प्रकार के साहित्य का आदान-प्रदान हम अवश्य ही करेंगे। पत्रव्यवहार भी होना ही चाहिए। 'प्रवदा' के प्रतिनिधि कामरेड केसिस शीघ्र ही नई दिल्ली पहुच रहे है। हमे विश्वास है, वहा उन्हे आपका सहयोग मिलता रहेगा। हमारे और आपके युवक-सगठनो के चित्रो की प्रदर्शिनी का हम आदान-प्रदान करना चाहते है। युवक-प्रतिनिधि-मडलो के आवागमन का प्रयोग काफी सफल रहा। इसे हम जारी रक्खें और अगले वर्ष, मुमकिन है, हम फिर अपना प्रतिनिधि-मडल भेजें तथा आपके प्रतिनिधिमडल को निमत्रित करें। लेकिन आगे से हमारा कार्यक्रम कुछ दूसरे किस्म का हो। हमारे दोनो के देश विशाल हैं। इसलिए वहा केवल भौगोलिक यात्रा करने की अपेक्षा ये प्रतिनिधिमडल देश के युवको की किसी-न-किसी विशेष प्रवृत्ति का अध्ययन करें। जिलो के स्तर पर हम सीधा पत्र-व्यवहार भी शुरू

कर सकते है। हमारी कई मातहत समितिया इसकी बहुत माग कर रही है। अपनी भारत की यात्रा में मै वहा के युवक काग्रेस के कई सगठनकर्ताओ तथा सचालको से मिला था। मैंने देखा कि वे काफी होशियार है। उन्होने मुझे प्रभावित भी किया। मैं तो उसी समय इस तरह का पत्र-व्यवहार शुरू करने के बारे में आपके सगठन की इजाजत लेना चाहता था।

"इस वर्ष हम कई गोष्ठिया कर रहे है। उनमें से कुछ ये है—

१ विज्ञान का शाति के लिए उपयोग।

२ रूसी विद्यार्थियो द्वारा अनेक भाषाए सीखना।

३ विद्यार्थियो की स्थापत्य कला।

"इस वर्ष हम बच्चो तथा युवको के अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-शिविर भी कर रहे है।

"इन सब प्रसगो पर अपने प्रतिनिधि भेजने के लिए आपको हमारा निमत्रण है।

"विद्यार्थियो मे यात्रा का शौक पैदा करने की दृष्टि से हमने एक नई प्रवृत्ति शुरू की है। इस कार्य के लिए हमने अपनी समिति के अन्तर्गत एक विद्यार्थी-पर्यटन-विभाग खोला है। वह इस प्रकार काम करेगा कि जिससे विद्यार्थियो को एक दूसरो के देशो में जाने के लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकता नही पडेगी। रूस के युवक व विद्यार्थी जब दूसरे देशो मे जाय तब उनका वहा का सपूर्ण खर्च वहा के युवक या विद्यार्थी उठा लेवे। जब वे लोग रूस आवें तो उनका खर्च हमारे यहा के वे ही प्रतिनिधि खुद उठा लें। हा, प्रवास का खर्च ये विद्यार्थी खुद उठावेगे और उसकी अदायगी तो अपने-अपने देश की मुद्रा मे ही हो सकती है। इसमे विदेशी मुद्रा एकत्र करने की झझट नही रहेगी। इससे प्रत्येक देश के युवको को दूसरे देश के युवको के साथ निकट सपर्क स्थापित करने तथा वहा का रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि का अध्ययन करने का अच्छा अवसर मिलेगा। इस प्रकार हम अपने देश से सैकडो प्रतिनिधि-

मण्डल विदेशो मे भेजने के लिए और वाहर से आनेवाले इतने ही मण्डलो का हमारे देश मे स्वागत करने के लिए तैयार है ।

"ये कुछ ठोस प्रस्ताव है, जिनकी विस्तृत चर्चा भी की जा सकती है ।"

मै—"आपके ठोस प्रस्ताव और गोष्ठियो का कार्यक्रम सुनकर हमे खुशी हुई । ये अच्छे हैं । हमे आशा है, इनसे हमारे दोनो के देशो का लाभ ही होगा ।

"परन्तु मैं आपके सामने हमारी कुछ मर्यादाए रखना चाहूगा, जिनके कारण इच्छा होते हुए भी इन सबपर अमल करने मे हमे शायद कठिनाई हो । हमारी इस असमर्थता का अर्थ यह नही कि आपके प्रस्ताव हमे पसन्द नही या हम उनके खिलाफ है । कई वार केवल कार्यकर्ताओ और साधनो की कमी के कारण वहुत-सी बातें हम नहीं कर पाते हैं । मैं आशा करता हू कि आप और आपके मित्र हमारी वात को सहीतौर पर समझने की कोशिश करेंगे और किसी प्रकार की गलतफहमी नही होने देंगे । हमारा युवक-सगठन एकदम नया है । उसकी स्थापना हुए केवल पाच-छ वर्ष हुए है । हमारे साधन वहुत अल्प हैं । हमारी पद्धति तथा सगठनो की रचना भी भिन्न प्रकार की है । इनकी सदस्य-सख्या भी वहुत अधिक नही है । फिर सरकार से हमे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कोई मदद नही मिलती ।"

रोमानोवस्की ने वीच मे कहा, "परन्तु भारत मे युवक-काग्रेस का प्रभाव तो वहुत है ।"

मैं—"आपका कहना बिल्कुल ठीक है, कामरेड । मैंने यह कभी नही कहा कि उसका कोई प्रभाव नही है । भारत के विद्यार्थियो, युवको और जनता पर उसके प्रभाव की वात मैं आपसे नही कर रहा था । नि स्सदेह उसका इन सबपर काफी प्रभाव है । मैं तो उसके विस्तार, सदस्य-सख्या और साधनो की वात कर रहा था । चूकि सरकार से हमे कुछ भी मदद नही मिलती, हमे हर वात मे

केवल अपने कार्यकर्ताओ के व्यक्तिगत उत्साह व सद्भावना पर निर्भर रहना पडता है। हमारे ये सब कार्यकर्ता स्वयसेवक के तौर पर काम करते है। उन्हे कुछ भी मुआवजा नही दिया जाता। सच तो यह है कि हमारे सारे सगठन का आधार ही स्वेच्छापूर्वक दी जाने-वाली सहायता और सहयोग है। यदि हमारे पास साधन हो तो नि सन्देह हम भी बिना किसी कठिनाई के करोडो की सख्या मे अपने सदस्य बना सकते है। इसलिए हमारी शक्ति और प्रभाव सदस्यो की सख्या पर नही, बल्कि हम नवयुवको की जा सेवा करते है, उसपर निर्भर है।"

रोमानोवस्की—"आर्थिक कठिनाइना तो हमारे सामने भी हैं। परन्तु अगले साल कम-से-कम एक प्रतिनिधि-मण्डल तो हम जरूर भेजना और बुलाना चाहते है।"

मैंने विनोद मे कहा, "जनाव ! मैं न ता रोमानोवस्की हू और न अपने देश की युवक-काग्रेस का सभापति। आपने जितने भी सुझाव और प्रस्ताव हमारे सामने रखे है, वे सब मैं बडी खुशी के साथ अपने सग-ठन के सामने पेश करूगा। हमारे सगठन के इन सभी प्रस्तावो पर पूरी तरह से गौर कर लेने पर आपको जरूर उचित उत्तर भेजा जायगा। मैं आशा करता हू कि इस बारे मे मेरी स्थिति को आप समझ रहे है।"

रोमानोवस्की—"अवश्य ! मैं आपकी बात पूरी तरह से समझता हू और उससे सहमत भी हू। अगर इसा प्रकार के प्रश्न और प्रस्ताव भारत मे हमारे प्रतिनिधि-मण्डल के सामने रखे जाते तो हम भी उनके जवाब मे ठीक यही कहते। आपका जवाब अतर्राष्ट्रीय राजनीति के अनुरूप है।"

मैं—"आपकी इजाजत हो तो अव मैं 'वर्ल्ड असेम्वली ऑफ यूथ' के बारे मे सक्षेप मे कुछ चर्चा करना चाहूगा।"

रोमानोवस्की—"अवश्य ! शौक से कहिये।"

इसी समय उन्होने हमे तीन वजे श्री ख्रुश्चोव के साथ होनेवाली

हमारी मुलाकात की विविवत सूचना दी।

मैंने कहा, "आपके प्रधानमन्त्री के इस सौजन्य के लिए हम उनके वहुत कृतज्ञ हैं। जव हम उनसे मिलें तो राजनैतिक शिष्टाचार की किन विवियो (प्रोटोकोल) का पालन करना हमारे लिए जरूरी होगा, कृपया हमे वता दीजिये। क्या इस मौके पर हमारे देश के राजदूत को भी अपने साथ मे ले जाना उचित होगा ? प्रतिनिवि-मडल के सदस्य यह भी जानना चाहते हैं कि क्या आपके प्रवानमन्त्री के साथ हमारे प्रतिनिधि-मडल का चित्र भी लिया जा सकता है ?"

रोमानोवस्की—"कामरेड ख्रुश्चोव ने हमे सूचित किया है कि वह आपके प्रतिनिवि-मण्डल से तीन वजे मिलेंगे। मिलने-सम्वन्धी शिष्टाचार आदि के वारे मे हमे कोई सूचना नही मिली है। जहातक चित्र का सवव है, स्वय श्री ख्रुश्चोव से प्रार्थना करनी होगी। परन्तु मेरा ख्याल है, यह सम्भव होगा।"

मैं—"तो अव मैं 'वर्ल्ड असेंवली ऑफ यूथ' के वारे मे चर्चा शुरू करू ? आप जानते हैं कि इस अन्तर्राष्ट्रीय सस्था का अधिवेशन इस वर्ष के अगस्त मास मे भारत मे हो रहा है। अत. उसकी भारतीय शाखा के सभापति के नाते मैं आपको सूचित करना चाहता हू कि इसकी भारतीय समिति की प्रेरणा से इस अन्तर्राष्ट्रीय सस्था की कार्यकारिणी ने अपने एक प्रस्ताव द्वारा यह निश्चय किया है कि वह आपकी समिति को प्रेक्षक के तौर पर इसमे भाग लेने के लिए निमन्त्रित करे। मैं जानता हू कि इसका उत्तर आप तुरन्त तो नही दे सकते। अत मैं चाहता हू कि आपकी समिति इसपर सहानुभूतिपूर्वक विचार करे और यथासमय अपने निर्णय की सूचना हमे देने की कृपा करे।"

रोमानोवस्की—"आपकी सस्था की अतर्राष्ट्रीय समिति की तरफ से भी हमारे पास निमन्त्रण और प्रस्ताव की प्रतिलिपि आ गई है। हमने इसपर विचार और निर्णय भी कर लिया है। 'वे' से सह-

योग करने के लिए हम सदा तैयार रहे है। इसके सभापति और मत्री से हमारा पत्र-व्यवहार बराबर चल रहा है कि हम सब मिलकर कोई सर्वसामान्य कार्यक्रम बनायें। सन् १९५६ मे हमने इन दोनो सज्जनो से विनती की थी कि वे रूस आयें, हमारी प्रवृत्तियो का अध्ययन करें और यह सोचें कि हम सब मिलकर कोई सामान्य कार्यक्रम बना सकते है या नही। परन्तु उन्होने हमारे निमन्त्रण को स्वीकार नही किया। इसके अध्यक्ष श्री लारेन्स से लन्दन में मैं मिला था और तब उनसे फिर यह विनती की थी। किन्तु उन्होने गोलमोल उत्तर देकर बात को टाल दिया। अपनी समिति की तरफ से मैंने कुछ और भी ठोस प्रस्ताव उनके सामने रखे थे। परन्तु उनकी ओर से कोई जवाब नही मिला। इस सबका अर्थ यह है कि वे हमारे साथ कोई सपर्क रखना नही चाहते।

"यद्यपि इस अतर्राष्ट्रीय सस्था के प्रकाशनो मे सोवियत रूस के विरोध मे प्रचार चलता रहता है, फिर भी हमारी इच्छा यही रही है कि हम एक दूसरे से कोई समझौता कर लें। परन्तु नतीजा क्या हुआ यह तो आप जानते ही है। इन सब बातो को देखते हुए हमारी समिति ने निश्चय किया है कि हम इसके अधिवेशन में भाग नही लें। आप और भारत के अन्य मित्र इस बारे मे अन्यथा नही समझें। हमे निमन्त्रण भिजवाने का आपने जो प्रयत्न किया, इसके लिए हम आपके कृतज्ञ है। परन्तु हम क्यो नही आ सकते, इसका कारण तो स्पष्ट ही है। आप यह नही समझें कि आपके प्रयत्न और सदाशय का हम निरादर कर रहे हैं। हमे आशा है कि इस इन्कारी का हमारे सम्बन्धो पर कोई असर नही पडेगा।

"हमे लगता है कि सभा-सम्मेलनो मे प्रत्यक्ष भाग लेने के लिए जाने के पहले आपस मे कुछ प्रारम्भिक बातचीत हो जाना आवश्यक है। फिर केवल प्रेक्षक के तौर पर भाग लेने के लिए जाना भी ठीक नही। कोई सामान्य कार्यक्रम हम बनायें, इस दिशा मे हमारे प्रयत्न

बरावर जारी रहेगे। सुलह-समझौता और चर्चा का रास्ता वन्द हो जाय, ऐसी कोई बात हमारी तरफ से नही होगी।

"इसलिए यदि इसके सभापति और मत्री इस विषय पर चर्चा करने के लिए रूस आ सकें तो अब भी हम उनका यहा स्वागत करेंगे।"

मैं—"सभापतिजी ! मैं आपकी बात समझता हू और आपकी स्पष्टवादिता की कद्र करता हू। मेरा तो कर्त्तव्य था कि मैं अपनी और अपनी समिति की इच्छा आपको बता दू। यह कर्तव्य मैं अदा कर सका, इसकी मुझे खुशी है।"[1]

हमारी यह चर्चा कोई तीन घण्टे तक चली। चर्चा अत्यन्त दिलचस्प और शिक्षाप्रद रही। उनके सारे चोटी के नेता उसमे उपस्थित थे। उनकी परिपाटी के अनुसार उनकी तरफ से केवल उनके सभापति कामरेड रोमानोवस्की बोल रहे थे और हमारे प्रतिनिधि-मडल की तरफ से उसके नेता की हैसियत से मै। कामरेड रोमानोवस्की रूसी भाषा मे बोल रहे थे। मैं भी बोलना तो चाहता था हिन्दी मे ही, परन्तु दुभाषिया हिन्दी नही जानता था। इसलिए मुझे अग्रेजी की ही शरण लेनी पडी। हमारी बातचीत के बीच दूसरा कोई नही बोला। एक प्रकार से यह अनुभव बहुत अच्छा रहा। रोमानोवस्की सामान्य कम्यूनिस्टो से कुछ अलग प्रकार के आदमी है। साधारणतया वे लोग बस काम-

---

१ 'वर्ल्ड असेम्बली ऑफ यूथ' (WAY) के बारे में कोई गलतफहमी नहीं हो इसलिए यह बता देना जरूरी है कि कामरेड रोमानोवस्की का कथन तस्वीर का केवल एक रुख है। चूंकि उस समय विवाद में पडना उचित नहीं था इसलिए मैंने बात को आगे न बढ़ाकर उसे वहीं खत्म कर दी। साम्यवादी युवक-सगठनों और 'वे' के बीच सहयोग में जो बाधा आ रही है उसका मुख्य कारण 'वर्ल्ड फेडरेशन आफ डेमाक्रेटिक यूथ' का असहयोग था, जिससे सोवियत युवक समिति सलग्न है। 'वे' ने उससे सहयोग करने के कई प्रयत्न किये परन्तु उसमे सफलता नहीं मिली। 'वे' अब भी इसके लिए यत्नशील है कि सहयोग के लिए कोई सामान्य कार्यक्रम मिले। हम आशा करें कि आगे-पीछे, देर-अबेर दोनों को इसमें सफलता मिलेगी।

से काम की बात करते है। पर रोमानोवस्की की बातचीत में बडी शिष्टता, सौजन्यता और आकर्षण था।

इस मुलाकात के लिए आने से पहले मेरे मन मे कुछ शका थी। क्योकि इस स्तर पर और ऐसे लोगो से—जो इस विषय मे बडे निपुण है—बातचीत करने का हममे से किसीको अनुभव नही था। उनमे से हर व्यक्ति एक-एक ऐसे सगठन का मुखिया था, जिसकी सदस्य-सख्या दस लाख मे गिनी जाती है और जिसका वार्षिक बजट करोडो का होता है। उनमे से अधिकाश विदेशो मे अपने प्रतिनिधि-मडल लेकर हो आये थे और कूटनीतिक चर्चाए कर चुके थे। लेकिन हमारे लिए तो यह पहला ही मौका था और मुझे छोडकर हममे से एक भी सदस्य इसके पहले अपने देश के बाहर तक नही गया था। परन्तु बातचीत समाप्त हो जाने पर हमारे रूसी मित्रो ने हमारी बातचीत के तरीके और उसके ऊचे स्तर पर प्रसन्नता प्रकट की। हमारे प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्यो को भी कुल मिलाकर हमारी बातचीत अच्छी लगी। हमने अपना काम अच्छी तरह किया, इसपर उन्हे प्रसन्नता हुई। उनकी भी राय रही कि बातचीत के बीच एक भी बात ऐसी नही कही गई, जो हमारी शान के खिलाफ हो। इसका कारण यही था कि हम सब आपस में खूब सलाह मशविरा कर लिया करते। सबका परस्पर विश्वास था और एक टीम के रूप मे मिल-जुलकर सब काम करते थे। स्वय मेरे लिए यह बडे सन्तोष की बात रही।

इस बातचीत में हमारे एक रूसी मित्र भी शामिल थे। वह अगरेजी जानते थे। उन्होने बाद मे हम लोगो को बधाई दी कि रूस के युवक सगठनो के नेताओ पर हमारी बातचीत का असर बहुत अच्छा पडा। यह सज्जन भारत भी आ चुके थे और हमारे देश से उनको प्रेम है। उन्होने कहा कि हम सब जानते है कि कामरेड रोमानोवस्की एक बडे चतुर व्यक्ति हैं और ऐसी चर्चाओ का उन्हे बहुत अनुभव है। फिर भी चर्चा दोनो तरफ से समान स्तर पर ही रही।

: ६ :

ख़ुश्चोव से भेंट

सोवियत युवक-समिति के सदस्यो से हुई चर्चाओ के बीच हमने उन्हें यह सुझाया था कि यदि सभव हो तो प्रधानमन्त्री ख़ुश्चोव और अन्य नेताओ से भी हम मिलना चाहेगे। उन्होने हमारे इस सुझाव पर हँसते हुए कहा कि हम आपके लिए सबकुछ कर सकते है, परन्तु यह बात हमारे वस की नही। हमने उन्हें याद दिलाया कि जब उनके प्रतिनिधि भारत आये थे तब हमने उन्हे अपने प्रधानमन्त्री से मिलाया था। अत यदि वे भी इस प्रकार की भेंट की व्यवस्था कर सकें तो यह अनुचित नही होगा। उन्होने हमारी बात का अनुमोदन तो किया, परन्तु साथ ही कहा कि आपको समझना चाहिए कि यह भारत नही, रूस है। रूसी सरकार के सदस्य प्राय किसीसे नहीं मिलते। वे तो साधारणत विदेशी सरकारो के प्रतिनिधि-मण्डलो से भी नही मिलते। "फिर आपका प्रतिनिधि-मण्डल तो गैर-सरकारी है और वह भी युवको का। इसलिए इस सबध मे कुछ भी करना हमारे लिए सभव नही होगा। फिर भी चूकि आपने इच्छा प्रकट की है तो हम इसे विचारार्थ प्रधानमन्त्री के दफ्तर मे पहुचा देंगे।"

इसपर हमने तो प्रधानमन्त्री से मिलने की सारी आशा छोड दी थी और हमारे लिए बनाय गए कार्यक्रम के अनुसार उस देश के विभिन्न भागो की यात्रा के लिए निकल पडे थे।

दो सप्ताह बीत गये। उस समय हम काव मे थे। एक दिन हमारे एक दुभाषिया ने, जो मास्को से हमारे साथ आया था और युवक-समिति का प्रतिनिधि भी था, हमसे एकाएक कहा कि उसकी समिति ने

पुछवाया है कि हम सोवियत सरकार के नेताओ से क्यो मिलना चाहते हैं। क्या हम किन्ही खास समस्याओ पर उनसे बातचीत करना चाहते है ? हमने बताया कि ऐसी कोई बात नही है। हम तो उनसे रूबरू मिलकर उन्हे धन्यवाद देना चाहते थे कि रूस की जनता ने हमारा बहुत प्रेम से स्वागत किया। मालूम हुआ कि इससे उसे सन्तोष हो गया। इसके बाद उसने हमारे कीव के कार्यक्रम को इस तरह बैठाया कि वह एक रोज पहले समाप्त हो गया। फिर इस बारे मे उसने हमें कोई सकेत भी नही किया, केवल इतना पूछा कि चूकि कीव का कार्यक्रम, एक प्रकार से, समाप्त ही हो गया है इसलिए यदि कीव से हम लोग एक रोज पहले मास्को चले चलें तो हमे कोई एतराज तो नही है ? उसने बताया कि यहां जो महत्वपूर्ण मुलाकातें रह गई है, वे एक दिन पहले निपटाई जा सकती हैं। इससे युवक-सगठन के नेताओ के साथ महत्वपूर्ण बातो पर चर्चा करने के लिए मास्को मे हमे एक दिन अधिक मिल जायगा। जिस ढग से उसने यह बात हमारे सामने रखी हमारे लिए दूसरा कोई चारा ही नही रह गया। परन्तु हमने उसका कोई ख्याल नही किया, क्योकि इससे मास्को मे हमे एक दिन अधिक जो मिल रहा था। हा, हमे इतना तो लगा कि इसमे कोई खास बात जरूर है। परन्तु हम कल्पना नही कर सके कि वह क्या हो सकती है।

मास्को पहुचने पर कार्यक्रम के अनुसार सोवियत युवक-समिति के नेताओ के साथ बातचीत के लिए हमे ले जाया गया। बातचीत समाप्त होने के कुछ पूर्व ही कामरेड रोमानोवस्की ने हमें यह खुशखबरी सुनाई कि दोपहर को तीन बजे हमे प्रधानमन्त्री से मिलने जाना है। हमे लेने के लिए वह ठीक ढाई बजे आयेगे। उस समय हम तैयार रहें। उन्होने खास तौर पर कहा कि समय का बराबर ध्यान रहे। एक मिनट की भी देर न हो।

ठीक पौने तीन बजे हमारी गाड़िया सुविख्यात क्रेमलिन पहुच गईं। हमें पहली मंजिल पर ले जाया गया। कामरेड

रोमॉनोवस्की के अलावा 'यग कम्यूनिस्ट लीग' के प्रथम सचिव कामरेड सेमिचास्की भी प्रधानमन्त्री के दफ्तर के पडौस वाले कमरे मे हमारे साथ आ मिले ।

ठीक तीन वजकर एक मिनट पर हमे प्रधानमन्त्री के कमरे मे जाने के लिए इशारा किया गया। मन मे एक अजीब उत्तेजना थी। हम एक ऐसे व्यक्ति से मिलने के लिए जा रहे थे जो सोवियत सघ का सर्वेसर्वा था। यह मुलाकात रूस यात्रा की हमारी सवसे महत्वपूर्ण मुलाकात होने वाली थी। यह वही व्यक्ति है आधे ससार पर जिसकी सत्ता चलती है और जिसकी इच्छा पर आज समस्त मानव जाति का भाग्य है ।

दरवाजा खुला। प्रतिनिधि मण्डल के नेता की हैसियत से सबसे पहले मैंने अदर कदम रखा। दूसरे साथी भी मेरे पीछे-पीछे आये। कमरा लम्बा था और प्रधानमन्त्री की मेज कमरे के दूसरे छोर पर थी। हमारे कमरे के अन्दर दाखिल होने से पहले ही हमारे मेजवान अपनी कुर्सी से उठे और हमारा स्वागत करने के लिए दरवाजे की तरफ कई कदम वढकर आये और प्रतीक्षा मे खडे रहे। ज्योही हम अदर दाखिल हुए, उन्होंने न केवल हाथ जोडे बल्कि मुस्कुरा कर नमस्ते कहते हुए हमारा स्वागत किया। जिस गरम जोशी के साथ उन्होने हमारा स्वागत किया उससे हमे बडा आश्चर्य और आनन्द हुआ। उन्होने हम सवसे एक-एक करके हाथ मिलाया और हमारी यात्रा के अतरग दुभाषिए मित्र कामरेड मिशा ने क्रमश हम सबका परिचय कराया।

परिचय के वाद मनुभाई पटेल ने श्री ख्रुश्चोव को एक गाधी टोपी भेट की। उन्होने इसे वडे प्रेम से हसते हुए स्वीकार की और उसी समय पहन भी ली। जितनी देर हम उनके साथ रहे वह टोपी भी उनके सिर पर शोभा पाती रही। यह भी कैसा सयोग हुआ कि टोपी उनके सिर पर ऐसी ठीक वैठी मानो नाप देकर उनके ही लिए वनवाई गई हो। वह उनके माथे पर खूब फव रही थी।

इतने ही मे स्वय श्री ख्रुश्चोव ने सुझाया कि क्यो न हम

सब मिलकर अपनी तसवीर खिचवा लें ? इस मैत्रीपूर्ण सुझाव को सुनकर हम बहुत खुश हुए। सच तो यह है कि युवक-समिति के नेताओ के कहे अनुसार, हम स्वय श्री ख्रुश्चोव से इसकी प्रार्थना करने वाले थे। हमने उन लोगो से कह भी रक्खा था कि वे किसी फोटोग्राफर को तैयार रक्खें। इसलिए जब यह प्रस्ताव स्वय मेजबान की तरफ से आया तो हमे स्वभावत. बडी खुशी हुई। हमारे अन्दर दाखिल होने से पहले ही कई फोटोग्राफर वहा मौजूद थे और फिलम व तस्वीरे लेने के लिए उपयुक्त अवसर देखकर खडे हो गये थे। इन फोटोग्राफरो के अलावा श्री ख्रुश्चोव के साथ कमरे में और कोई नही था। उनका भी काम होते ही वे चुपचाप कमरे से बाहर हो गए।

कमरे मे एक तरफ लम्बी दीवार के समानान्तर एक लम्बी मेज लगी हुई थी। फोटो खिचने के बाद श्री ख्रुश्चोव हमे उस मेज पर ले गये। इस मेज का आकार अग्रेजी के 'टी' (T) जैसा था। स्वभावत: मैंने समझा कि मेज के शिरोभाग वाली कुर्सी पर वह स्वय बैठेंगे। परन्तु नही। उन्होने हमारे दुभाषिये श्री मिशा को वहा बैठने के लिए सकेत किया और स्वय हमारे सामने वाली कुर्सी पर बैठे। स्पष्टत. उनका सकेत इस ओर था कि हम सब समान स्तर पर मिल रहे हैं और हमारी यह मुलाकात अनौपचारिक है। इसका हमारे दिलो पर बडा असर हुआ और उनकी इस भावना को हम सबने मन ही मन सराहा।

यह देखकर हमें और भी खुशी हुई कि हमारी बातचीत के लिए सरकारी दुभाषिये को बुलाने की अपेक्षा यह काम उन्होने मिशा को ही सौंपा और सो भी अग्रेजी से नही बल्कि हिन्दी से। हमारे मित्र मिशा के लिए भी यह एक विशेष अवसर था, क्योकि मेरा ख्याल है कि अपने जीवन मे प्रधानमन्त्री से मिलने और उनके दुभाषिये का काम करने का उसको यह पहला ही अवसर मिला था। हम सबको इससे और भी ज्यादा खुशी हुई।

हमारा ख्याल था कि हमारी इस मुलाकात के बारे मे पहले श्री

ख़ुश्चोव कुछ कहेगे और उसके बाद, जैसा कि युवक समिति से तय हुआ था, शिष्टाचार के नाते हम इस प्रेमपूर्ण और सौजन्यपूर्ण स्वागत के प्रति धन्यवाद देंगे, फिर मुलाकात समाप्त हो जायगी। परन्तु वहा तो उलटी ही वात हो गई और हमे उससे वहुत प्रसन्नता हुई। श्री ख़ुश्चोव ने हमारा स्वागत किया और यह इच्छा प्रकट की कि हमने इस यात्रा मे सोवियत रूस मे क्या-क्या देखा, यह सक्षेप में वतायें। साथ ही उन्होने यह भी कहा कि अगर हमे कोई सवाल पूछना हो तो वह शौक से उसका जवाव देंगे। सचमुच यह हम सवके लिए अकल्पनीय था। अत हमे वडी प्रसन्नता हुई।

सच वात तो यह है कि हम इसके लिए तैयार ही नही थे। हमारा इस तरफ खयाल भी नही गया था कि सवाल-जवाव का मौका मिलेगा, इसलिए दिमाग मे पहले से ऐसे कोई सवाल नहीं थे। लेकिन जव उन्होने यह मौका दिया तो हमने भी सोचा कि इससे पूरा फायदा उठाया जाय। मैंने इस बात का खासतौर पर ध्यान रक्खा कि हमारे सवाल सार्वजनिक हो और उनमे कोई विवाद की वात न आने पाये जिससे कोई पेचीदगी खडी हो या हमारे मेजवान को किसी तरह की दुविधा हो।

सवालो की शुरूआत से पहले मैंने रूस के वारे मे हमारे प्रतिनिधि-मडल के विचारो से उन्हे अवगत कर दिया। उन्हें वताया कि रूस की जनता ने हमारा जो हार्दिक स्वागत किया तथा जहा-जहा हम गये वहाँ हमारा जो सम्मान हुआ, उससे हमे अपार प्रसन्नता हुई है। खास-तौर पर 'यग-पायनियर्स' का काम सराहनीय है। उसका हम पर वडा प्रभाव पडा है। हमने देखा कि 'कोमसोमोल' भी एक वडा और शक्ति-शाली युवक सगठन है। रूस की जनता ने हमारे प्रति जितना प्रेम दिखाया और जिस उदारता के साथ हमारा आतिथ्य किया, उसके लिए हम उसके और युवक सगठनो की सोवियत समिति के आभारी हैं। भारत लौटने पर हम ये सारी वातें अपने देश के युवको से कहेंगे और उन्हें वतायेंगे कि रूस मे हमने क्या-क्या देखा और हमे वहा

कितना सौहार्द मिला।

इसके बाद हमारे प्रश्न और श्री ख्रुश्चोव के उत्तर शुरू हुए। प्रश्नोत्तर इस प्रकार है—¹

मैं—"भारत के युवको को आप कोई सन्देश देना चाहेगे ?"

ख्रुश्चोव—"भारत के नौजवानो से सबसे पहली बात मैं यह कहना चाहता हू कि वे अपने रहन-सहन का स्तर ऊचा उठाए। मैं चाहता हू कि वे खूब परिश्रम के साथ अध्ययन करें ताकि भावी जीवन मे वे अच्छे कार्यकर्त्ता बन सकें। आप जानते है कि जीवन स्थिर नही है। वह बराबर आगे बढता रहता है। इसलिए मैं चाहता हू कि वे आगे बढकर ऊँचे स्तर पर काम करें। इस युग मे यन्त्र-शास्त्र और विज्ञान बडी तेजी से आगे बढ रहे है। मैं जानता हू कि भारत के युवक अपनी मातृभूमि को प्यार करते है और उसके विकास और पुनर्निर्माण में जुटे हुए है। मैं चाहता हू कि वे और भी अधिक अच्छी तरह काम करे और अपने पूर्वजो का गौरव बढाए। भारत और सोवियत युवको के बीच मैत्री बढे और हम एक दूसरे के अधिक निकट आए। मानवता को युद्ध और विनाशकारी शक्तियो से जूझकर उन पर विजय पानी है और मनुष्य मात्र के जीवन-स्तर को ऊचा उठाना है। हर व्यक्ति खूब परिश्रम करेगा तो मानव जाति की साधन सम्पत्ति बडे परिमाण में बढ सकती है और दुनिया के हर प्राणी का जीवन-स्तर ऊँचा उठ सकता है। भारत के नौजवानो को मेरा यह सन्देश आप सुना दें।"

इस प्रेम भरे सन्देश के लिए मैंने उन्हे धन्यवाद दिया और विश्वास दिलाया कि उनका सदेश मैं भारत के नौजवानो तक अवश्य पहुचा दूगा।

---

¹ बातचीत के समय हमने नोट नहीं लिये थे। १२ जुलाई, १९५८ के 'न्यूज एण्ड व्यूज फ्राम दी सोवियत यूनियन' में इस मुलाकात का जो विवरण छपा था, मुख्यत उसीके आधार पर मैं इन प्रश्नों और उत्तरों को उद्धत कर रहा हू। यह पत्रिका नई दिल्ली स्थित रूसी दूतावास के सूचना विभाग का प्रकाशन है।

मैंने कहा—"आप जब भारत आये थे, तब मुझे आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आपके लिए आयोजित अनेक सभाओ मे भी मैं उपस्थित था। क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि हमारा देश आप को इतना अच्छा क्यो लगा ?"

ख्रुश्चोव—"सोवियत रूस की जनता को भारत सचमुच अच्छा लगता है। वह उसे प्यार करती है। आपके प्रति हमारा इस सहानुभूति का खास कारण तो यह है कि आपने विदेशियो के राज मे बहुत लम्बे समय तक तकलीफें उठाई हैं। अब आप आजाद हो गये है और अपने देशवासियो के सुख के लिए अपने साधनो का विकास करने मे लग गये है। इसकी हमे बडी खुशी है। अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे भी आप पचशील के आधार पर सब देशो के साथ शातिपूर्वक रहना चाहते हैं, यह भी अच्छा है। सोवियत रूस के लोग भी इन सिद्धान्तो की कद्र करते है।"

मैं—"क्या आप यह बताएगे कि वर्तमान स्थिति मे ससार मे शान्ति बनाए रखने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात क्या है ?"

ख्रुश्चोव—"शान्ति की ताकत बढाने के लिए सबसे पहले लोगो को बताया जाना चाहिए कि वे शान्ति की सुरक्षा और उसे सुदृढ बनाने के लिए क्या करें। इस समय युद्ध की शक्तिया अपने जोरदार साधनो के द्वारा अपने विचार फैला रही है। हमे चाहिए कि शान्ति के दुश्मनो की इन हलचलो का हम पर्दाफाश करें। शान्ति की रक्षा के लिए हमे सुसगठित हो जाना चाहिए। पचशील के सिद्धान्तो का हमे ससार के कोने-कोने मे प्रचार करना चाहिए।"

इसके बाद श्री ख्रुश्चोव ने सयुक्त राज्य अमरीका के बारे मे बोलना शुरू किया और बताने लगे कि किस प्रकार उसके आधीन आक्रमण-कारी दल ससार को युद्ध की तरफ ढकेल रहे हैं। उन्होने ग्वेटमाल लैटिन अमरीका के कुछ देशो और लेबनान की घटनाओ का भी जिक्र किया। उन्होने यह भी बताया कि काश्मीर के मामले मे अमरीका गलती पर है। उन्होने कहा, "अमरीका हिन्दुस्तान की अपेक्षा पाकिस्तान का पक्ष

क्यो लेता है, यह मेरी समझ में नही आता । हमारा प्रतिनिधि-मण्डल स्वय काश्मीर गया था । वहा की स्थिति अपनी आखो से देखने के बाद उसकी निश्चित राय है कि बख्शी गुलाम मोहम्मद की वर्तमान सरकार काश्मीर की जनता के हित मे बहुत अच्छा काम कर रही है ।" उन्होने मुझसे कहा, "आप जब कभी बख्शीजी से मिलें तो उन्हे बताए कि हमारी काश्मीर यात्रा के समय उन्होने जितने प्रेम से हमारा आतिथ्य किया, उसके लिए हम उनके कृतज्ञ है ।" श्री ख्रुश्चोव ने कहा कि कश्मीर के बारे मे भारत का पक्ष सही है । अमरीका तो पाकिस्तान का पक्ष इसलिए ले रहा है कि पाकिस्तान बगदाद-सन्धि और दक्षिण-पूर्वी-एशियाई-गुट के राष्ट्रो का सदस्य है । परन्तु यह उसकी गलती है । उन्होने आगे कहा कि भारत एक स्वतन्त्र नीति का पालन करते हुए आक्रमणकारी सैनिक गुटो मे शरीक होने से इन्कार कर रहा है, यह अच्छा है । यही कारण है कि अमरीका की अपेक्षा सोवियत रूस भारत को अधिक चाहता है और उसका हिमायती है ।

मैंने कहा—"क्षमा करें । हमने आपका बहुत सा समय ले लिया । परन्तु मै एक बात और पूछना चाहता हू ।"

ख्रुश्चोव—"इसका ख्याल न करें । आप बहुत दूर से आ रहे हैं । अब तो खैर इन जेट हवाई जहाजो की बदौलत भारत हमारे इतने निकट आ गया है कि हम मास्को में नाश्ता करके दिल्ली में दोपहर का भोजन कर सकते है और रात के भोजन के समय वापस मास्को लौट सकते है । भारत के निवासी विशाल हृदय हैं । इसलिए हम और भी देर तक बैठें तो मुझे आनन्द ही होगा ।"

पैंतीस मिनट तो पहले ही हो चुके थे । मुझे लगा कि अब हमें अधिक समय लेकर इस सौजन्य और अतिथ्य का अनुचित लाभ नही उठाना चाहिए ।

मैंने अपना अतिम प्रश्न पूछा, "जब हम अपने प्रधानमन्त्री से मिलें, तब उनसे कहने के लिए आप कोई सन्देश देना चाहेगे ?"

श्री ख्रुश्चोव ने कहा, "बडी खुशी के साथ। सबसे पहले आपके प्रधानमत्रीजी के स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन के लिए मेरी शुभ कामनाए आप उन तक पहुचा दें। यदि वह अच्छे-चगे रहे, तो जो शुभ काम वह कर रहे है, उसे आगे काफी समय तक करते रहेंगे। ये मेरी हार्दिक शुभकामनायें है।"

हमारी बातचीत समाप्त होते ही हमारे प्रतिनिधि मण्डल के सब मदस्य श्री ख्रुश्चोव के हस्ताक्षर लेने के लिए आगे बढे, जो उन्हे तुरन्त मिल गये।

अत मे हमारे कल्याण और भविष्य के लिए श्री ख्रुश्चोव ने जो इतनी आत्मीयता के साथ शुभेच्छाए प्रकट की, उसके लिए मैंने उनके प्रति अपना आभार प्रकट किया—न केवल प्रतिनिधि-मण्डल की तरफ से, बल्कि भारत की समस्त तरुण पीढी की तरफ से। मैंने उन्हे विश्वास दिलाया कि भारत पहुचने पर हम उनकी शुभ-कामनाए हमारे भाइयो तक अवश्य पहुचा देंगे।

अपनी सारी पूर्व परपराओ को छोडकर श्री ख्रुश्चोव ने हमे यह मिलने का अवसर दिया था, इसके लिए अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करने तथा हमारी इस यात्रा की स्मृति के रूप मे हमने बातचीत के बाद श्री ख्रुश्चोव को हाथीदात की अशोक-स्तभ की एक प्रतिकृति भेंट की। चलने से पहले मैंने उनसे कहा कि भारत पहुचने पर वहा के युवक आन्दोलन पर कुछ पुस्तकें और 'गाधीवादी पूजीपति के नाम' ('टु ए गाधीयन कैपिट-लिस्ट') नामक पुस्तक भी मैं आपके अवलोकनार्थ भेजूगा। इस पुस्तक मे महात्मा गाधी और मेरे पिताजी के बीच हुआ पत्र-व्य-वहार है। मैंने उन्हें यह भी बताया यह पुस्तक मैं उन्हे खासतौर पर क्यो भेजना चाहता हू। गाधी जी की राजनैतिक और अन्य प्रवृत्तियो के बारे मे तो बहुत कुछ लिखा व कहा गया है। परन्तु उनका जनसपर्क बहुत विशाल था, और बहुत से लोग उनसे मार्ग-दर्शन मागते रहते थे। गाधीजी भी उनके जीवन मे बडी दिलचस्पी लेते और अपनी बहुविध

प्रवृत्तियो के बीच भी बराबर उनका मार्गदर्शन करते थे। गाधीजी के जीवन के इस मानवीय पहलू के बारे मे विदेश मे लोगो को अधिक जानकारी नही है। भारत पहुचते ही इस पुस्तक की एक प्रति मैंने उनके पास भेज दी।

इस प्रकार चालीस मिनट की यह स्मरणीय भेंट परस्पर धन्यवाद और शुभेच्छाओ के आदान-प्रदान के साथ समाप्त हुई। ससार के वर्तमान युग के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति से हम मिले थे। सचमुच ही यह घटना जीवन मे भुलाई नही जा सकती।

श्री ख्रुश्चोव ने जिस सहृदयता से हमारा स्वागत किया और हमारे प्रश्नो के उत्तर दिये, उससे हम बहुत प्रभावित हुए। वह बहुत शान्ति से बैठे रहे, किसी प्रकार की जल्दबाजी नही की। उन्होने जरा भी यह प्रकट नही होने दिया कि सरकारी काम मे व्यस्त रहने के कारण उन्हे हमसे बात-चीत करने की फुरसत नही है। वह बडी आत्मीयता के साथ बातचीत कर रहे थे। बीच-बीच में उनकी आँखो में विनोद भी झलक जाता था—हंसी की बात पर वह जोर से कहकहा भी लगा देते थे। इन सारी बातो का हम पर बडा असर हुआ। केवल एक बात—सयुक्त राज्य अमरीका की नीति की निंदा—हमे जरा खटकी। हमारे प्रश्नो के साथ उसका कही कोई सम्बन्ध नही था। ऐसा लगा कि इसके लिए कोई प्रसग नही होने पर भी ये अनावश्यक बाते वह अकारण ही और बहुत कठोर शब्दो में कह गये।

तास ने इस मुलाकात के समाचार तुरन्त सारे ससार मे पहुचा दिये। इस प्रसग पर जो चित्र और फिल्मे ली गईं उनका भी बडा प्रचार किया गया। इससे हमारे कुछ साथियो की यह गाँठ दृढ हो गई कि ख्रुश्चोव के दिमाग मे पहले से कोई बात चल रही थी, उसे प्रकट करने के लिए उन्होने इस भेट का उपयोग कर लिया।

चूकि यह भेट मात्र एक शिष्टाचार थी, मैंने अपने साथियो से कह दिया था कि वे इसके नोट न लें। यह अच्छा नही

दिखेगा। परन्तु बाद मे जो कुछ हुआ उससे मुझे इस बात पर अफसोस हुआ कि हमारे पास इस महत्वपूर्ण चर्चा के कुछ भी नोट नही हैं। फिर भी चलने से पहले मैंने श्री ख्रुश्चोव से पूछ लिया था कि हम इस बातचीत को प्रकाशित तो कर सकते है ? उन्होने इसे तुरन्त स्वीकार कर लिया। इसलिए यह और भी आवश्यक हो गया कि हमारे पास मुलाकात का अधिकृत विवरण हो। परन्तु ऐसी परिस्थिति में हमारे पास अब सिवा इसके कोई चारा नही रह गया कि हम अपने मेजवानो से ही इस मुलाकात का अधिकृत विवरण मांगें। यह देना उनके लिए कठिन नही था। क्योकि ज्यो ही हमारी बातचीत शुरू हुई, दो आदमी हमारे पास आकर बैठ गये थे और उन्होंने सारी बातचीत को विस्तार से लिख लिया था।

चूकि अब मैं तुरन्त भारत लौटना चाहता था, इसलिए मैंने उनसे पूछा कि क्या हमे बातचीत की रिपोर्ट तुरन्त मिल सकती है। परन्तु इस मे देरी लग गई दो-दिन बाद मैंने उन्हे फिर याद दिलाई कि भारत के लिए रवाना होने से पहले वह मुझे मिल जाती तो ठीक था, ताकि यदि मैं अपने प्रधानमत्री से मिलू तो उन्हे एक प्रति दे सकू। तब जाकर कही उन्होंने मुझे बताया कि कि वे यथासभव जल्दी ही सरकारी विवरण प्राप्त कर रहे है। परन्तु जबतक स्वय श्री ख्रुश्चोव इसे देखकर मजूर नहीं कर लेंगे, वह नही दी जा सकेगी। उस समय वह चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति के साथ लेनिनग्राद गये थे। उनकी मजूरी के लिए विवरण वहा भेजा गया था।

हमारा प्रतिनिधि मण्डल सरकारी नहीं था। और न हमारी बातचीत महत्वपूर्ण ही थी। उसमे न तो कोई विवाद की बात थी और न कोई गूढ कूटनीतिक महत्व की। इसलिए कोई भी बडा और जिम्मेदार अधिकारी अपनी जिम्मेवारी पर उसे प्रकाशनार्थ दे सकता था। परन्तु यह नही किया गया। यह परिपाटी उनके यहा है ही नही। जब तक उनके नेता मजूरी नही दे देते, बिलकुल मामूली और मासूम चीजें

भी बाहर नही जा सकती। भारत मे हमे भी इससे सबक लेना चाहिए। ऐसे मामलो मे और खासकर जहा विदेशियो का सम्बन्ध आता है, हमेशा बहुत सावधान रहने की जरूरत है। भावार्थ मे जरा भी इधर या उधर नही होना चाहिए। कोई बात प्रकाशन के लिए देने से पूर्व यह अच्छा है कि जिन व्यक्तियो का उस चीज से सम्बन्ध है, उसे अच्छी तरह देख लें और निश्चय कर लें कि उसमें कोई अनावश्यक या गलत बात तो नही है। यह चीज़ अगर दूसरो पर छोड दी जाती है तो उसमे भूल हो जाने का सदा अन्देशा रहता है। और नही तो किसी बात पर जोर देने मे ही थोडी सी भूल हो सकती है। इतने से भी कभी-कभी बडा अन्तर पड जाता है और अकारण गलतफहमिया होकर सीधी बातें उलझ जाती है। जो समाचार पहलेपहल आते हैं उन्हे हमेशा मोटी सुर्खियो मे छापा जाता है। बाद मे उनका प्रतिवाद भी दे दिया जाय तो उसे सब नही पढते। एक बार जो गलती हो जाती है सो हमेशा के लिए ही हो जाती है। उसे सुधारना बड़ा कठिन होता है।

तास ने तुरन्त इस मुलाकात के समाचार सारे ससार मे फैला दिये। भारत के कुछ समाचार पत्रो मे भी वे छप गये। शीर्षक था—'भारत का हिमायती रूस, न कि अमरीका।'

: ७ :

पहला 'युवक दिवस'

सोवियत सघ की युवक-समाजवादी लीग (कोमसोमोल) ने २६ जून का दिन 'युवक दिवस' के रूप मे सारे देश मे मनाने का प्रस्ताव रखा, जो रूस की सरकार ने स्वीकार कर लिया। वैसे यह दिन ऐतिहासिक या अन्य किसी दृष्टि से खास महत्व का नही था, परन्तु जून स्कूली छुट्टियो का आखिरी महिना होता है और मौसम भी बडा सुहावना रहता है। इसीलिए यह दिन तय किया गया।

यह उनका प्रथम युवक-दिवस-समारोह था। युक्रेन की राजधानी कीव मे उत्सव मे भाग लेते हुए हमे बडी प्रसन्नता हो रही थी। ता० २८ जून की शाम को हम कीव पहुचे। फौरन ही हमे 'सिनेरामा' देखने ले जाया गया। रूस मे इसे पनोरमा कहते है। फिल्म अच्छी थी। देश के ऐतिहासिक और आर्थिक महत्व के कई स्थानो को चल-चित्र द्वारा बताया गया था। इनमे मास्को के पिछले युवक उत्सव का भी चित्र था। यह हमे खासतौर पर अच्छा लगा।

युवक-दिवस के दिन सुबह प्रारम्भ मे तो कुछ बूदा-बादी होती रही, किन्तु शीघ्र ही आकाश साफ और मौसम सुहावना हो गया। युद्ध-काल मे युक्रेन के अन्य नगरो की तरह कीव नगर पर भी जर्मनो का अधिकार हो गया था। परिणामत शहर का मध्य भाग अत्यन्त ध्वस्त हो गया था। लेकिन पुननिर्माण के वाद अब यह नगर बडा सुदर बन गया है। उसकी रचना योजना-बद्ध है एव साफ-सफाई भी अच्छी दिखाई दी। इसकी आवादी १२ लाख की है।

सुबह युवको के विभिन्न दलो ने गत महायुद्ध के ज्ञात और अज्ञात शहीदो के स्मारको पर बडे समारोह-पूर्वक पुष्पमालाए चढाई। ऐसे स्मारक शहर मे बहुत है।

युवक-दिवस का मुख्य कार्यक्रम शाम के ४ ३० बजे से शुरू हुआ। बम्बई के 'सरदार पटेल स्टेडियम' के समान वहा एक 'ख्रुश्चोव स्टेडियम' है जिसमे ७५ हजार लोग बैठ सकते है। बडे शानदार ढग से उसे सजाया गया था। बीचोबीच लेनिन का एक भव्य चित्र था और उसके दोनो ओर रूसी सरकार के नेताओ के बडे-बडे चित्र। वोरोशिलोव और बुलगानिन के चित्र भी वहा देखने मे आये।

आधा घन्टे के भीतर ही भीतर सारा स्टेडियम भर गया। प्रस्तुत कार्यक्रम कोमसोमोल की ओर से आयोजित किया गया था। अत· स्थानीय कोमसोमोल के मन्त्री के छोटे से भाषण से समारोह का आरभ हुआ।

फिर लेनिन के चित्र के साथ परेड शुरू हुई। उद्घोषवाक्य लिखे बोर्ड जगह-जगह दीख रहे थे। मृतवीरो की गौरव-झाकिया भी थी। जुलूस मे पुरानी परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाले नमूने उपस्थित किये गये थे, जिनमे पुरानी जातिया, वश, फौज, नाविक, सेना आदि के दृश्य थे। बच्चे, औरतें और खिलाडी विभिन्न पोशाको मे जुलूस मे उपस्थित थे। पूरा जुलूस रग-बिरगे दृश्य, उत्साह और आनन्द से भरा हुआ था। जगह-जगह झण्डे और पताकायें लहरा रही थी। बहुत से खिलाडी भी जुलूस मे शामिल थे, जिनकी बाद मे प्रतियोगिताए हुई। आठ से दस साल की उम्र के बच्चो के बीच भी प्रतियोगिताए हो रही थी। इतनी बड़ी भीड की उपस्थिति मे बिना किसी सकोच के ये बच्चे अपने करतब दिखाते रहे। इसके बाद कुछ नृत्य भी दिखाये गये, जो बहुत सुदर थे। लेकिन छोटे बच्चो के नृत्य बहुत कमाल के थे। कमल-नृत्य तो बहुत ही अप्रतिम रहा।

इसीके बाद 'पुशबॉल मैच' खेला गया, जो हमारे लिए, और हमने

देखा कि वहा के लोगो के लिए भी, नई चीज थी। इसे एक वहुत बडे रवड के गेंद के साथ खेला जाता है। गेंद इतनी वडी होती है मानो कोई हाथी का बच्चा ही हो। इसका उद्देश्य विशेषत जनता का मनोरजन करना होता है। फुटबॉल मैच के साथ उत्सव समाप्त हुआ। सारा कार्यक्रम अत्यन्त सुसगठित और प्रभावकारी था।

इसके वाद हमे एक वगीचे मे ले जाया गया। युवक-समिति ने वहा एक सभा का आयोजन किया था। वहा करीब ५००० लोग उपस्थित थे। हम सबको मच पर ले जाया गया। बडी हर्ष-ध्वनि के साथ हमारा स्वागत हुआ।

एक युवा फिल्म अभिनेत्री ने अध्यक्षता ग्रहण की। एक वृद्धा ने, जो कम्युनिस्ट पार्टी की वडी पुरानी सदस्या है, पहला भाषण दिया। फिर उस स्त्री का भाषण हुआ, जिसे सबसे ज्यादा बच्चो की कुशल माता बनने के उपलक्ष मे पुरस्कृत किया गया था। जो युवती सबसे अधिक बच्चो की मा होती है और जो उनकी सवसे अच्छी सम्भाल करती है, उसे वहा नायिका के रूप मे गौरवान्वित किया जाता है। उसके बाद हमसे कुछ शब्द कहने के लिए कहा गया। हमें सिर्फ तीन मिनट दिये गये थे, स्वभावत मुझे बहुत सक्षेप मे बोलना पडा। मैंने हिन्दी मे कहा, "हम हिन्दुस्तान से आये है। उस हिन्दुस्तान से, जो गाधीजी और जवाहरलाल नेहरू का देश है। हम आपके और आपके देश के लिए हमारे युवक सगठन और हमारे देश की ओर से सद्‌भावना और शुभ-कामना लाये है। हमारे नेताओ ने हमे यही सिखाया है कि शाति के लिए कार्य करो। हमे वहुत खुशी है कि रूसी युवक भी शाति के लिए काम करते हैं। सोवियत सघ और हिन्दुस्तान के युवको के वीच दोस्ती हमेशा कायम रहे।"

उपस्थित समुदाय ने ये शब्द वहुत ही हर्ष के साथ ग्रहण किये। हर वाक्य का अनुवाद पूरा होते ही तालियो की गडगडाहट होती थी। हमने देखा कि यह सारा उत्साह और प्यार हार्दिक

था। उसके वाद हमने उन्हे एक कासे और चादी की तश्तरी पर खुदी ताडव मुद्रा मे नटराज की मूर्ति भेंट की। लोगो ने उसे वहुत अधिक पसन्द किया। अपनी तरफ से हम सवको फूल और लम्वी डवलरोटी भेंट की जो ऐसे प्रसगो पर खासतौर पर वनाई जाती है। उन्होने कहा कि हमारे यहा अपने मेहमानो को ये चीजें भेंट देने की प्रथा है। हमारे देश की और वहा की प्रथाओ मे यह समानता देख कर हमें आश्चर्य भी हुआ और आनन्द भी। फूल और रोटी सुदरता और उपयोगिता का सुदर समागम है। इन दोनो चीजो के प्रति दोनो जगह समान आदर है और इसके प्रकाशन के प्रतीक भी समान ही है।

इसके वाद हमने हमारा प्रसिद्ध राष्ट्रीय-गीत, 'कदम-कदम वढाये जा' सामूहिक रूप में गाया, जिसका नेतृत्व प्रतिमा मुकर्जी ने किया। हमारा रूसी मित्र और हिन्दी दुभाषिया मिशा भी गाधी टोपी पहन कर इस समूह-गान मे शामिल हुआ। लोगो ने जोर से और देर तक हर्ष-ध्वनि करके इस गायन का स्वागत किया। उन्होंने आग्रह किया कि हम और भी कुछ गाए। तव हमने रूस का अत्यन्त प्रसिद्ध समूह गीत 'कच्यूशा' रूसी भाषा मे ही व उन्ही की राग मे गाया। प्रतिमा ने, जिसने यह गीत सीख लिया था, फिर हमारा नेतृत्व किया। उसे भी लोगों ने पहले जैसे उत्साह के साथ ही ग्रहण किया। वक्त थोडा सा वचा था परन्तु उपस्थित लोगो के आग्रहवश अध्यक्ष को प्रतिमा से हिंदी व वंगाली गीत गाने के लिए कहना पडा। हमें तीन मिनिट दिये गए थे, पर हो गए तीस मिनट। वडा ही सुखद और मधुर अनुभव रहा। जनता का सत्कार कल्पनातीत था।

अव हम नदी की ओर गये। जलराशि को विजली की तेज रोशनी से नहला सा दिया था। सुन्दर रोशनी से सजाई गई किश्तियां हमारे सामने से गुजरने लगीं। किनारे पर खडे लोग प्रत्येक किश्ती का हर्ष-ध्वनि के साथ स्वागत करते जाते थे। सारे शहर में

श्रानद उमड रहा था। हर श्रादमी, श्रौरत श्रौर बच्चा बाहर निकल पडा था। सडको पर श्रपार भीड थी। बैठ कर देखने के स्थान लोगो से ठसाठस भरे हुए थे। कही एक इच भी जगह खाली नही थी। श्रन्त मे नदी के दूसरे किनारे पर बडी मनमोहक श्रातिशबाजी शुरू हुई। वह सारा दृश्य बडा भव्य था।

साढे ग्यारह बज गये। होटल पर लौटने का समय हो गया। इस बीच हममे से हरएक को बीसियो जने घेर लेते श्रौर हमसे बातचीत करना चाहते। उत्सुकता श्रौर प्रेम उनके चेहरो पर झलकता था। एक नजर भर हमे देखने श्रौर हमारे साथ हाथ मिलाने या नमस्कार करने के लिए हर श्रादमी मानो बेचैन था। कई हमारे पास श्राते श्रौर सिर्फ 'हिन्दी-रूसी भाई-भाई' कहकर दोस्ती का परिचय देकर चले जाते। भाषा की कठिनाई के कारण श्रौर कुछ तो बोल नही सकते थे।

बच्चे श्रौर श्रौरतें भी श्रानदविह्वल हो रही थी। प्रतिमा श्रौर साफाधारी सरदार पूरणसिह 'श्राजाद' सबसे श्रधिक कुतूहल के पात्र बने हुए थे। पैदल वापस लौटना हमारे लिए श्रसभव हो गया। लोग हमसे झूम पडते। एक-एक इच भी श्रागे बढना कठिन हो रहा था। बच्चे हमारे हाथ पकड लेते श्रौर श्रागे बढने ही नही देते। इस तरह भीड द्वारा घेरे जाने का श्रनुभव हमे श्रपनी जिदगी मे पहले कभी नही हुश्रा था। हा, हमने श्रपने नेताश्रो को जरूर इस तरह घेरा था। पर तब तो हम घेरने वालो मे थे। इस बार हम घिरने वाले थे, सो भी विदेशियो द्वारा उन्ही के देश मे। बडा श्रद्भुत श्रौर रोमाचकारी श्रनुभव था।

हमारे मार्गदर्शक साथी घबरा गये। हममे से हरएक की बाह पकड-पकड कर लगभग खीच-खीचकर वे हमे भीड से बाहर ले जाने लगे। उन्हे भय हो गया कि भारत से श्राए उनके मेहमान किसी दुर्घटना मे नही फस जाय। जब हम भीड से बाहर एक बगल की सडक

पर पहुच गये तब जाकर उनके जी-मे-जी श्राया। उस समय उनकी मुद्रा देखने लायक थी। परन्तु मैं श्रौर हमारे दूसरे साथी तो इस सारे श्रनुभव का पूरा मजा लूट रहे थे।

वाद मे मैंने उनसे पूछा कि वे इतने चिंतित क्यो हो गए थे ? हमे तो भीड मे धक्के खाकर चलने श्रौर कधे रगडने मे मजा श्रा रहा था। इसी को तो सच्चा श्रनुभव कहते है। हमे तो उस दिन सचमुच वहुत श्रानद श्राया। उस पूरे युवक दिवस का वडा शानदार श्रत था वह। पर वे वोले, "श्राप हमारे सम्माननीय मेहमान हैं, श्राप इतने खतरे मे श्रा गये थे, श्राप को इतना कष्ट हुश्रा श्रौर पैदल चलना पडा, इसी का हमे दुख हो रहा था। इतनी भीड़ हो जायगी श्रौर श्राप लोगो को प्रेम से घेर लेगी, इसका स्थानीय कार्यकर्त्ताश्रो को श्रदाज नही था। यह उनकी वडी गलती रही। उनको पहले से श्रदाज लगाकर इसके वारे मे कुछ इन्तजाम कर लेना चाहिए था।"

दरश्रसल हमारी खुशी को वे ठीक से नही समझ सके। हमारे प्रति जनता के तत्काल प्रकट होने वाले प्रेम श्रौर लगाव की श्रभिव्यक्ति भी वे ग्रहण न कर सके। हमने यदि यह प्रसग खोया होता, तो वैसा श्रनुभव हमे जिन्दगी भर मिलने वाला नही था। इस तरह मौके पर प्रकट होने वाला प्रेम श्रौर लगाव निश्चय ही किसी पूर्व योजना द्वारा सभव नही था, यह हमे स्पष्ट दिखाई दिया। लेकिन हम इस ख्याल को भी नही रोक सके कि जनता को श्रामतौर पर इस तरह प्रशिक्षित किया जाता है कि वे विशिष्ट परिस्थिति तथा खास-खास श्रवसर पर, श्रमुक तरह से ही व्यवहार करे।

हाँ, उस रोज शरीर से हम जरूर वहुत थक गये थे, परन्तु यो हम वहुत खुश श्रौर प्रसन्न थे। जनता की इस प्रेम-पूजा से हम श्रपने श्रन्दर एक प्रकार का श्रात्म-गौरव श्रनुभव करने लग गये थे। वह नशा जव कुछ शात हुश्रा तव मैं सोचने लगा कि श्राखिर हम हैं कौन ? इतने प्रेम के लायक हमने क्या किया है ? वहुत छोटे श्रादमी हैं हम।

हमने बहुत कम काम किया है। फिर भी हम इतने महत्वपूर्ण क्यो बन गये ? इसलिए कि हम भारत के प्रतिनिधि थे, जो सतो की और महात्मा गाधी की भूमि है और जिसके वर्तमान नेता जवाहरलाल नेहरू है, जिनका आदर सारा ससार करता है। हम उस देश के प्रतिनिधि है जिसने सदा प्रेम और शाति मे विश्वास किया है। ये लोग हमारा नही हमारे महान देश का सम्मान कर रहे थे। प्रेम की कैसी वर्षा थी यह ! हम तो एकदम अभिभूत हो गये। एक महान देश का प्रतिनिधि बनकर किसी महान देश मे जाना कितने गौरव की बात है !

मैंने पूछताछ की कि रूस मे भारत और भारत के लोगो के प्रति इतना प्रेम-भाव क्यो है, तो मालूम हुआ कि इसके कई कारण हैं। एक मुख्य कारण पडित नेहरू की पिछली रूस-यात्रा थी। उन्होने हर आदमी पर जादू कर दिया था। वे उनके पीछे पागल से हो गये थे। फिर रूस के नेता ख्रुश्चोव और बुलगानिन जब भारत आये थे और सारे देश ने उनका यहाँ जितने प्रेम से स्वागत किया था, उसका भी असर उनके दिलो पर था। पिछले पाच-छह वर्षों से भारत के समाचारो को बहुत सहानुभूति के साथ रूसी पत्रो मे स्थान दिया जा रहा है। रूस की जनता हृदय से शाति चाहती है और उसे निश्चय हो गया है कि भारत भी सच्चे दिल से शाति चाहता है तथा उसके लिए पूरा प्रयत्न भी कर रहा है। फिर भारत एक लबे सघर्ष के बाद विदेशियो की गुलामी से मुक्त हुआ है, इसलिए भी उसके प्रति उनके दिल में प्रेम, सहानुभूति और आदर है।

वैसे तो एशिया और अफ्रीका के सभी देशो के लोगो को वे चाहते हैं और उनसे प्रेम करते है, परन्तु सबसे अधिक प्रेम वे चीनियो से करते है और उनके बाद भारतीयो से।

: ८ :

चांदनी रात में फुटबाल-मैच

जून की २३ तारीख को हम लेनिनग्राद में थे। वर्ष का यह सबसे लबा दिन होता है। इन दिनो यहापर रात नही के बराबर होती है। सूर्य लगभग बीस घण्टे तक क्षितिज के ऊपर ही रहता है। शेष समय, अगले अरुणोदय तक, इतना प्रकाश रहता है कि आप खुले मे बगैर बत्ती के आराम से पढ सकते है। इन दिनो यहा सडको पर रात मे बत्तिया नही जलती। वर्ष के ये दिन यहापर 'धवल रजनी के दिन' कहलाते है।

इस समय वहा शाम को देर तक लोग खेल-कूद आदि मे व्यस्त रहते है। इनके लिए बत्तिया लगाने की जरूरत नही पडती। लेनिनग्राद के उस विशाल स्टेडियम पर हम जब फुटबाल-मैच देखने के लिए पहुचे, तब शाम के साढे सात बज चुके थे। साढे नौ बजे तक मैच चलता रहा। परन्तु उस समय भी वहा इतना प्रकाश था, जितना शाम के पाच बजे बम्बई मे होता है। यही अपने-आपमे एक बहुत अद्भुत अनुभव था।

स्टेडियम में ८५,००० दर्शको के बैठने का प्रबन्ध है। बम्बई के ब्रेबोर्न स्टेडियम की भाति यह ऊपर से ढका हुआ नही है। मैच वहा की दो स्थानीय टीमो के बीच ही था। फिर भी देखनेवालों मे बेहद उत्साह था। जब हम पहुचे उस समय तक ६०,००० लोग वहा पहुंच चुके थे।

सोवियत सघ मे खेलो के प्रति दिलचस्पी बराबर बढ़ रही है।

फुटवाल उनका सवसे प्रिय खेल है। यो टेनिस भी खूव लोकप्रिय है । जिन दिनो हम वहा थे, स्वीडन मे फुटवाल के अतर्राष्ट्रीय मैच चल रहे थे । रूस के नवयुवको मे उसके वारे मे इतनी दिलचस्पी और उत्तेजना थी कि वे हर मिनट जानना चाहते थे कि वहा कौन किस प्रकार खेल रहा है । रूसियो को विश्वास था कि उनकी टीम जीतेगी । कम-से-कम अन्तिम मुकावले मे तो जरूर पहुच जायगी । किन्तु जव समाचार पहुचे कि वह इगलैंड के साथ १-३ गोल से हार गई तो वहा लोगो को वडी निराशा हुई ।

हमे कुछ देर हो गई थी और हम अपनी एक मुख्य मेजवान सेनिया सातेकोवा के साथ वडी तेजी से मोटर द्वारा स्टेडियम पहुचे। साधारणतौर पर स्टेडियम के पास मोटर नही ले जाई जा सकती । इसलिए पुलिस ने हमारी गाड़ी रोक दी । परन्तु सेनिया ने उससे कुछ वात की, एक कागज दिखाया और उसने हमे आगे वढने की इजाजत दे दी । मुख्य फाटक पर भी ऐसा ही हुआ । उसने वहा भी यही किया । तुरन्त हमें अदर जाने की अनुमति मिल गई । टिकट तक नही खरीदना पडा । हमे सवसे अच्छी जगह पर ले जाया गया, जो विशेष अतिथियो के लिए सुरक्षित था । केवल एक इशारे से वे समझ गये कि हम मेहमान हैं और भारत से प्रतिनिधि-मण्डल के रूप मे आये है । मालूम होता है कि ऐसे सव स्थानो और प्रसगो पर मेहमानो और प्रतिनिधियो के साथ एक विशेष प्रकार का व्यवहार होता है तथा उनके लिए विशेष स्थान पहले ही खाली छोड दिया जाता है । अव तो वहा यह एक नियम-सा वन गया है । देश-देश से आनेवाले प्रतिनिधियो का ताता लगा ही रहता है ।

मैच 'ज़ेनेट व्यू' और 'एडमिरल्टी' वालो के वीच था । ज़ेनेट वाले सदा 'ए' वर्ग मे रहे हैं और एडमिरल्टी वालो को हाल ही मे 'वी' वर्ग से 'ए' वर्ग मे चढाया गया था और किसी 'ए' टीम के साथ उनका यह पहला ही सामना था । इसी कारण शायद लोगो मे

इतनी उत्सुकता और उत्तेजना भी थी। अधिकतर लोग और खासकर नौजवान नवीन और प्रगतिशील टीम के समर्थक थे।

पहला गोल 'एडमिरल्टी' ने किया। इसपर गजब की तालिया बजी और उत्तेजना हुई! पुरानी टीम अधिक अच्छा खेल रही थी। परन्तु आज तो 'एडमिरल्टी' की किस्मत ही सिकन्दर नजर आ रही थी। नई टीम में आत्म-विश्वास की कमी के कारण कुछ घब-राहट-सी थी। कितने ही अच्छे मौके उसने खो दिये। ऐसा लगता था मानो नौसिखिए खिलाडी हो। गेंद को 'पास' करने की बजाय अनेक बार वे दूर से ही सीधे गोल की तरफ 'किक' लगा देते। यह देखकर स्वभावत उन्हीके साथी-खिलाडी चिढ जाते। कभी-कभी धक्कम-धक्का भी कर जाते। इसपर रेफरी ने उनके एक खिलाडी को डाटा भी। परन्तु इसपर उसने बुरा नही माना। एक 'खिलाडी' की तरह ही उस डाट को ग्रहण किया।

खेल का स्तर कोई बहुत ऊचा नही था। फिर भी लोगो को उसमें मजा आ रहा था, क्योकि उनमे काफी जोश था। हमारी साथिन सेनिया वॉलीवॉल की खिलाडी थी और अपने क्लब की चैम्पियन भी थीं। इसलिए वह इस खेल को गहरी दिलचस्पी के साथ देख रही थी। चूकि उसकी सहानुभूति शुरू से 'एडमिरल्टी' के साथ थी, इसलिए उन्होने जब पहला गोल किया तो वह मारे खुशी के उछल पड़ी।

रूस मे मैच डेढ घटे तक खेला जाता है। बीच में पद्रह मिनट का विश्राम होता है। खेल खतम होने मे दस मिनट रह गये थे और 'एडमिरल्टी' का फिर एक गोल हो गया। परतु इसके तुरत बाद जेनेट वालों को एक 'पेनल्टी' का लाभ मिल गया और उन्होंने भी एक गोल कर दिया। बस, यह अन्तिम गोल था। खेल के बीच मे एक खिलाडी को चोट आ गई, इसलिए उसे खेल छोडकर जाना पडा। उसके स्थान पर एक नया खिलाडी आ गया। बाद मे मुझे बताया गया कि टूर्नामेन्ट के खेलो मे भी ऐसी परिस्थितियो

मे नये खिलाडी ले लिये जाते है । परन्तु अतर्राष्ट्रीय मैचो मे यह रियायत नही दी जाती ।

खेल शुरू होने से पहले पचास आदमियो का एक बैण्ड दो-एक मिनट तक बजता रहा । हिन्दुस्तान की भाति बीच की छुट्टी मे बैण्ड नही बजा ।

सारे खेल की योजना और सचालन कोमसोमोल की तरफ से हुआ था । लेनिनग्राद कोमसोमोल के प्रथम सचिव ने ही प्रारभ मे सारी घोषणाए की । खेल के मैदान मे भी वह अपने दो साथियो को लेकर बडी शान से इधर-उधर आ-जा रहे थे ।

सबसे पहले उन्होने यह घोषणा की कि खेल के बाद मे लाटरी खुलेगी । यहा लाटरी खुलने का यह पहला ही मौका था । इतनी बडी भीड के आने का कारण भी शायद यही था । लाटरी मे बारह इनाम रखे गए थे । ये सब साधारण, कम कीमत की चीजें थी, जैसे खिलाडियो की पोशाकें आदि । दो स्कूटर भी रखखे गए थे । परन्तु कार्य बहुत धीमी गति से हो रहा था । सारे इनामो के खुलने मे लगभग पैंतालीस मिनट लग गये । परन्तु इनाम पाने की उत्सुकता हर व्यक्ति को थी । हम तो थक गये । अत समारोह की समाप्ति के कुछ पहले ही हम वहा से चल दिये ।

मास्को के लेनिन स्टेडियम मे हमने एक और जोरदार फुटबाल-मैच देखा । यह एक फ्रेंच टीम और मास्को की एक स्थानीय टीम के बीच खेला गया था । दोनो ही टीमे औपचारिक रूप से अपने देशो का प्रतिनिधित्व नही कर रही थी । फिर भी प्रेक्षको मे गजब का उत्साह था । इसका कारण शायद यही रहा हो कि सोवियत सघ मे बाहर से बहुत अधिक टीमे नही आती । जैसा कि मैं पहले बता चुका हू, सोवियत सघ मे खेल-कूद की रुचि बढ रही है और हर बडे शहर मे, कीव तथा ताशकन्द मे भी, स्टेडियम बन रहे हैं ।

: ९ :

सामूहिक खेत

१ जुलाई का पूरा दिन हमने ल्यूबरत्से के एक सामूहिक खेत (कोलखोज़) मे बिताया। ल्यूबरत्से कीव से लगभग ३६ मील है। इस खेत का नाम था 'स्लाहेत दो कोम्यूनिज़्म', अर्थात् 'साम्यवाद की ओर'। सामूहिक खेत के अध्यक्ष ने हमारा स्वागत किया और फार्म की सारी प्रवृत्तियो की विस्तृत जानकारी दी। हमेशा की तरह उन्होने कई आकडे पेश किये, जो काफी प्रभावोत्पादक थे।

इस फार्म पर १२०० मकान है, जिनकी जनसख्या लगभग ४००० है। सपूर्ण फार्म लगभग १५००० एकड भूमि पर स्थित है, जिसमें से १०००० एकड ज़मीन पर खेती की जाती है। ५०० आदमी और ११०० स्त्रिया खेत मे काम करते है। फार्म पर एक माध्यमिक स्कूल, एक छोटा-सा दवाखाना, एक बच्चो का बगीचा, नौ सहकारी दुकाने और एक उपभोक्ता-सहकारी समिति है। एक क्लब भी उस समय बन रहा था। साथ ही फार्म के पास दस कम्बाइन मशीनें, २३ ट्रैक्टर, जानवरो का चारा मिलानेवाली तीन मशीनें, २३ ट्रकें और मोटरे, चुकदर काटने की चार मशीनें आदि भी है। ३७१ हार्सपावर की ७९ बिजली की मोटरें, घोडे, बैल आदि है सो अलग।

कुल काम का लगभग ९५ प्रतिशत काम मशीनो द्वारा ही किया जाता है। अनाज की खेती के अलावा वे पशु-पालन, सब्जी व हरी घास भी पैदा करते है।

कुल कृषियोग्य भूमि में से ९०० एकड़ भूमि चुकदर की खेती के

लिए सुरक्षित है। चुकदर से वे चीनी बनाते है। शेष मे से २००० एकड पर वे गेहू की खेती करते है और बाकी बची जमीन अन्य खाद्यान्नो तथा आलू आदि सब्जियो के लिए है। उनका प्रति एकड उत्पादन इस प्रकार है—गेहू ५० सेर, मक्का १७ सेर, चुकदर १२५०० सेर, और आलू ७००० सेर।

पशुओ मे उनके पास २००० गायें थी, जिनमे से ६०० उस समय दूध देती थी। २००० सूअर, १००० भेड़ें, १०००० वत्तखें और मुर्गाबिया तथा ५०० छत्ते शहद की मक्खियो के थे।

प्रत्येक गाय औसतन १५-१६ सेर दूध प्रतिदिन देती थी। साल-भर मे उसका औसत दूध ३७०० सेर बैठता था। उनका विचार था कि वे यह औसत ४००० सेर तक बढा लेंगे। पूरे फार्म की डेयरी का कुल वार्षिक उत्पादन इस प्रकार था—२० लाख सेर दूध, २७ लाख सेर मास और १,३६,००० अण्डे।

फार्म के सपूर्ण उत्पादन को तीन भागो मे बाट दिया जाता है। एक भाग तो सरकार को सौप दिया जाता है, दूसरा भाग फार्म के लिए रख लिया जाता है और तीसरा भाग फार्म पर काम करनेवाले परिवारो मे बाट दिया जाता है। ज्वार और बाजरा मुख्यत पशुओ को खिला दिया जाता है। गायो को थोडा गेहू भी खिलाया जाता है। घटिया किस्म का चुकदर और तरबूज भी पशुओ के काम आता है।

किसान अपने उत्पादन का कुछ भाग खुले बाजार मे बेच सकते हैं। शेष उत्पादन सरकार की मडी-समिति के द्वारा ही बेचा जाता है। स्वय अपनी जमीन के उत्पादन पर किसान का ही स्वामित्व होता है। साथ ही सामूहिक खेत के उत्पादन मे से भी उसे कुछ भाग मिलता है।

सोवियत कानून के अनुसार सारी जमीन राष्ट्र की, अर्थात् जनता की होती है। जमीन का कुछ भाग लोगो को दे दिया जाता है, लेकिन केवल सामूहिक खेतो के उपयोग के लिए। सामूहिक खेत पर रहने-वाले प्रत्येक परिवार को एक एकड जमीन दी जाती है, भले ही परि-

वार मे कितने ही सदस्य हो। यदि किसान फार्म छोडकर शहर में अन्य धधा करने जाना चाहता है, तो उसकी जमीन सामूहिक खेत मे शामिल कर ली जाती है। लेकिन यदि उस किसान का परिवार फार्म पर ही रहना चाहता है तो वह जमीन परिवार के पास ही रहती है। इस प्रकार मिली जमीन पर यदि किसान मकान बनवा लेता है, तो उस मकान पर किसान का ही स्वामित्व रहेगा। यदि किसान पास के शहर मे अन्य धधा करता है और उस मकान मे रहना चाहता है तो वह रह सकता है।

यदि किसान व्यक्तिगत खेत पर अधिक मेहनत करे तो उसकी आय बढ जाती है। आमतौर पर रूसी किसान है भी मेहनती। खेती में सामूहिक फार्म से उन्हे घोडो, ट्रैक्टरो और अन्य मशीनो की सहायता मिल जाती है। किसान की मृत्यु के बाद उसकी सपत्ति पर उसके परिवार का अधिकार हो जाता है और उसकी पत्नी परिवार की मुखिया बनती है। जब कोई युवक किसान विवाह करता है तो उसे नई जमीन मिलती है और वह अपने नये परिवार के साथ नया घर बसाता है।

सामूहिक खेत की कुल आय का ६० प्रतिशत सदस्यो मे बाट दिया जाता है। प्रत्येक परिवार ने कुल कितने घटे और कितना काम किया, इस आधार पर यह वितरण किया जाता है। अलग-अलग प्रकार के कार्यों के लिए अलग-अलग दरे निश्चित है। सामूहिक फार्म से प्रत्येक परिवार को औसतन १८००० से २०००० रूबल[1] वार्षिक की आय हो जाती है। इसमे वस्तुओ की शक्ल मे जो आय होती है, वह भी सम्मिलित है। इसके अलावा उसकी निजी आय होती है सो अलग। अधिक आय के लिए अतिरिक्त काम करने के लिए वे स्वतत्र है। इसका एक ठोस उदाहरण हमारे देखने में आया। तीन जनो का एक परिवार था, जिसमें एक लड़की और उसके माता-पिता थे। वे तीनो जने काम करते थे और उनकी कुल आय ३७००० रूबल

[1] एक रूबल आजकल लगभग ५.२५ रु. के बराबर होता

थी। प्रत्येक व्यक्ति के लिए सप्ताह मे छ दिन और प्रतिदिन आठ घटे काम करना अनिवार्य है।

खेत की कुल आय का ६० प्रतिशत सदस्यो के बीच बटने के बाद शेष ४० प्रतिशत मे से २० प्रतिशत टूट-फूट की मरम्मत व नये निवेश (इनवेस्टमेट) के लिए सुरक्षित रहता है। यह राशि मुख्यत भवन-निर्माण, मशीन, पशु, आदि पर खर्च की जाती है।

१२ प्रतिशत एक विशेष कोष मे चला जाता है। यह कोष सामूहिक खेत के वृद्ध सदस्यो की सहायता के लिए इकट्ठा किया जाता है और इसकी राशि वृद्ध सदस्यो को पेंशन के रूप मे मिलती है।

६ प्रतिशत राशि रासायनिक पदार्थों, पेट्रोल, तेल आदि पर खर्च हो जाती है और शेष २ प्रतिशत सास्कृतिक कोष मे जमा हो जाती है।

सामूहिक फार्म सरकार को ८ प्रतिशत आय-कर देता है। यह कर 'जनता की जमीन' का उपयोग करने के मुआवजे के रूप मे दिया जाता है। अन्य कोई भूमि-कर उन्हे नही देना पडता। प्रत्येक किसान अपना निजी आय-कर देता है। जिस वर्ष हम वहा थे, उस वर्ष और उसके एक वर्ष पहले का मिलाकर, सामूहिक फार्म ने सब प्रकार के करो के ९,८५,००० रूबल शासन को दिये, जिसमे ७,००,००० रूबल कृषि-कर और २,८५,००० रूबल स्वेच्छा से दिया गया सुरक्षा-कर व बीमा-राशि थी।

फार्म के सब सदस्यो को मिलाकर एक सामान्य समिति बनती है, जो सपूर्ण फार्म की प्रधान होती है। अपनी बैठक मे यह समिति अपना सभापति, व्यवस्थापक-मडल, और नियत्रण आयोग (कट्रोल कमीशन) का सभापति चुनती है। आनेवाले वर्ष का उत्पादन-कार्यक्रम भी यही समिति अतिम रूप से स्वीकार करती है। वर्ष मे तीन-चार बार इस समिति की बैठक होती है और वह चाहे तो फार्म के विधान मे परिवर्तन कर सकती है। नियत्रण-आयोग इस समिति के सामने अपनी रिपोर्ट पेश करता है। व्यवस्थापक-मडल और नियत्रण-आयोग

की बैठके महीने मे कम-से-कम दो बार होती है। उत्पादन के सुनियत्रण के उद्देश्य से नियत्रण-आयोग कई छोटे-छोटे विभागो में बटा होता है और प्रत्येक विभाग के आधीन पाच ब्रिगेड होती है।

इस आयोग के सभापति, उपसभापति तथा अन्य विशेषज्ञ फार्म के वैतनिक कार्यकर्त्ता होते है। व्यवस्थापक-मडल में इक्कीस सदस्य है, लेकिन वास्तव मे इनमे से कुल छ सदस्य ही व्यवस्था आदि का काम करते है। इन छ सदस्यो को खेतो मे काम नही करना पड़ता और इन्हे फार्म से वेतन मिलता है। लेकिन नियत्रण-आयोग के सदस्यो को स्वय खेती का काम करना पड़ता है।

तथ्यो और आकडो की जानकारी प्राप्त करके हम खेत को प्रत्यक्ष देखने के लिए निकले। इसका विस्तार बहुत विशाल था। हर जगह हमे मोटरो मे बैठकर ही जाना पडा। फार्म को चार या पाच मुख्य केन्द्रो मे बाट दिया गया है। प्रत्येक केन्द्र पर कर्मचारियो के रहने के मकान, मशीनें और काम करने के शेड और पशुशालाए है। हर केन्द्र अपने आस-पास के क्षेत्र का काम सभालता है।

हम सामूहिक खेत के एक-दो सदस्यो के मकानो में भी गये। घर मामूली थे, जैसे हमारे यहा किसानो के खेतो पर होते है। आबो-हवा और रहन-सहन के कारण जो अन्तर होता है, बस उतना ही अन्तर था। साधारण कच्चे मकान थे, पड़ौस के कमरे मे जानवरों के बाधने की जगह थी और घर मे आस-पास खेत के औजार वगैरह पडे थे।

दूसरी जगहो की भाति यहा के किसान भी भले थे और उन्होंने हमारा हार्दिक स्वागत किया। भोजन के समय तक हम इतना घूमे कि काफी थक गये थे। भोजन फार्म के अध्यक्ष के साथ ही किया। फार्म पर कुछ बूदा-बादी हो रही थी, इसलिए अन्दर बैठकर ही डटकर खाना खाया। अगर बाहर बैठ सके होते तो अधिक मजा आता। अध्यक्ष और अन्य किसान बड़े परिश्रमी, हट्टे-कट्टे और ताकतवर मालूम हुए। उनका खाना-पीना भी अच्छा था। हंसी-मजाक खूब

पसन्द करते थे। बात-बात पर ठहाके लगाते थे। युक्रेन के निवासियो की खुश-मिजाजी और विनोदप्रियता प्रसिद्ध है। वे सदा प्रसन्न रहते है।

मै तो कुछ आवश्यक कार्यो के कारण जल्दी भारत वापस आ गया था। हमारे प्रतिनिधि-मडल के अन्य सदस्य वही रह गये थे। कुछ दिनो बाद जब वे वापस लौटे तो उन्होने अपनी रिपोर्ट मुझे दी। उन्होने बताया कि मेरे रवाना होने के बाद दोपहर को उन्हे उज़बेकिस्तान के उनीज़ाबाद का कार्ल मार्क्स सामूहिक फार्म दिखाने ले जाया गया। यह फार्म ताशकन्द से कुछ ही मील की दूरी पर कालीनिन जिले मे है। इस फार्म पर खासकर सब्जी पैदा की जाती है। सन १९५७ मे यहापर १७,००० टन सब्जी पैदा हुई थी। यह फार्म कुल ३६८८ एकड भूमि पर फैला हुआ है। यहापर १००० व्यक्ति काम करते है—५६० परिवारो के ६०० पुरुष और ४०० स्त्रिया। इनमे से ७५ प्रतिशत परिवारो ने अपने निजी मकान बना लिये है। सन १९५७ मे इस फार्म मे एक करोड रूबल का लाभ हुआ। हर किसान को काम के प्रत्येक दिन की मजदूरी २१ रूबल के हिसाब से मिली। इसके अलावा प्रतिदिन नौ किलोग्राम आलू और तीन किलोग्राम चावल मिलते थे। फार्म की इस आय मे से ६० प्रतिशत किसानो को बाट दिया गया, १० प्रतिशत सरकारी करो मे चला गया, और १५-२० प्रतिशत के खेती के नये औजार खरीदे गए।

इसके दो दिन बाद प्रतिनिधि-मण्डल यानगिओल कालेनिन-सामूहिक फार्म देखने गया। यहा कपास पैदा होती है। छ खेतो को मिलाकर सन् १९२८ मे इसकी स्थापना की गई थी। इसका क्षेत्रफल लगभग ५००० हेक्टर[1] है, जिसमे से ३००० हेक्टर पर केवल कपास की खेती होती है। सन् १९५६ मे यहापर ७,३०० टन कपास पैदा हुई थी, जिससे २७० लाख रूबल की निवल आय हुई। इस फार्म मे ४००० लोग काम करते है। हर व्यक्ति को प्रत्येक दिन के काम के लिए तीन किलोग्राम चावल तथा २२ रूबल मजदूरी दी जाती है।

[1] एक हेक्टर लगभग २.४७१एकड़ का होता है।

: १० :

दर्शनीय स्थान

मास्को पहुचने के दूसरे ही दिन हम मास्को विश्वविद्यालय देखने गये। इसका निर्माण रूस के महान वैज्ञानिक लामानोज़ोव ने किया था। अत उनके नाम पर इसे लामानोज़ोव विश्वविद्यालय भी कहते है। इसकी स्थापना सन् १७५५ मे हुई। यह उसका २०४वा वर्ष था। बीच की मुख्य इमारत २३९ मीटर ऊची है, इसमे तेरह विषयो की पढाई होती है—विज्ञान के छ और कला के सात विभाग है।

विश्वविद्यालय मे २२,००० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे है। इनमें से १५,५०० दिन मे विधिवत् पढाई करते है। २००० शाम के वर्गो मे आते है। शेष ४५०० विद्यार्थी पत्र-व्यवहार द्वारा अपनी पढाई करते है। नियमित पढाई करनेवाले विद्यार्थियो मे से ८० प्रतिशत को राज्य से छात्रवृत्तिया दी जाती है।

छात्रालयो मे ६००० विद्यार्थी रहते हैं। छात्रालयो का शुल्क नाम-मात्र का है। शाम के वर्गों मे जानेवाले अधिकाश विद्यार्थी दिन मे काम करके अपनी रोजी कमाते है। उन्हे कोई छात्रवृत्ति नही दी जाती।

पत्र-व्यवहार का पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए है, जो प्रायः मास्को से बाहर रहते है। घर पर किया गया लेखनकार्य जाच के लिए वे डाक द्वारा विश्वविद्यालय को भेजते रहते हैं। वर्ष में दो बार वहां परीक्षा के लिए आ जाते है।

परीक्षा में जो विद्यार्थी पहली बार मे उत्तीर्ण नही होते, उनका

नाम रजिस्टर से हटा दिया जाता है। उन्हें फिर दूसरी बार परीक्षा मे नही बैठने दिया जाता। कालेज की पढाई साधारणतया साढे पाच वर्ष की होती है। इसके बाद विद्यार्थी या तो आगे पढ सकते है या किसी काम मे लग जाते है। विश्वविद्यालय मे उच्च शिक्षा के लिए केवल अच्छे और योग्य विद्यार्थियो को ही इजाजत मिलती है—वह भी रिक्त स्थानो के अनुसार। इसलिए विद्यार्थियो मे बडी कडी होड रहती है। उन्हे खूब मेहनत करनी पडती है। इस कारण शिक्षा का सामान्य स्तर बहुत ऊचा रहता है। जिन्होने किसी उद्योग मे दो वर्ष काम कर लिया है, उनको प्राथमिकता दी जाती है।

विद्यार्थियो मे ४६ प्रतिशत लडके है, शेष लडकिया है। इनमे से १५०० विदेशी है। भारत सरकार से हाल ही मे हुए एक समझौते के अनुसार कुछ भारतीय विद्यार्थी भी वहा आये हुए थे।

विश्वविद्यालय का नया भवन बहुत ही भव्य और विशाल है। उसमे हजारो कमरे है। हमे कहा गया कि यदि हम हर कमरे मे केवल एक मिनट भी रुकें तो सारे विश्वविद्यालय के कमरो की सैर करने मे हमे तीन महीने लग जायगे। युवक-समिति के लोगो ने पहले कहा था कि यदि हम हर कमरे मे दस मिनिट रुकें तो अपने पूरे जीवन मे भी विश्वविद्यालय को पूरी तरह से नही देख सकते। जाहिर है कि यह तो अत्युक्ति है, जो केवल बाहरवालो को प्रभावित करने के लिए की जाती होगी। इस विश्वविद्यालय मे केवल पढाई के लिए १५० हाल है। इसके अलावा व्यायामशालाए, रगभूमि, नृत्यशालाए, सगीतगृह, खेल के मैदान, वगैरह है सो अलग। सहायक विषय के रूप मे खगोलशास्त्र भी पढाया जाता है, जिसके लिए एक महान वेधशाला मास्को शहर के बाहर बनाई गई है। विश्वविद्यालय के अधिकारी भूगोल और भूगर्भ-विषयक शोध के लिए विश्वविद्यालय से ५८ अभियान दूसरे देशो को भेजने की योजना बना रहे थे, क्योकि वह अतर्राष्ट्रीय भू-भौतिक (जियोफिजिकल) वर्ष था।

विश्वविद्यालय के. स्नातकोत्तर वर्गों मे १५०० विद्यार्थी पढ रहे है। इनमे से १० प्रतिशत विदेशी है। विश्वविद्यालय में ४५० प्रोफेसर, ६०० लेक्चरर, ५५० वैज्ञानिक और १२०० प्रयोगशाला मे सहायक है। पुस्तकालय मे दस लाख से अधिक पुस्तकें हैं।

सोवियत सघ की योजना है कि देश मे ३९ विश्वविद्यालय बनाये जाय, जिनसे सैकडो सस्थाएं सम्बद्ध हो। इन विश्वविद्यालयो के स्नातको को यहा से निकलने पर काम की कमी नहीं होती। सरकार उन्हे तुरन्त काम देती है। आकडो से ज्ञात होता है कि परीक्षाओ मे करीब ९० प्रतिशत विद्यार्थी सफल होते है। जो १० प्रतिशत रह जाते है, उनका भविष्य तो अन्धकारमय ही समझना चाहिए। उनके आगे बढने की आशा बहुत कम होती है। किस विषय की पढाई के लिए कितने विद्यार्थी लिये जाय, इसकी सख्या देश की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा-मत्रालय पहले से ही निश्चित कर देता है। इसके अलावा जिन्हे अधिक समय मिलता है, ऐसे विद्यार्थियो के लिए प्रत्येक कालेज मे खास-खास विषयो के अलग वर्ग भी होते है। उन्हे हर तरह की सहूलियतें दी जाती है।

हमारी यात्रा से पहले वर्ष मास्को विश्वविद्यालय का आनुमानिक व्यय-बजट २८ करोड रूबल था। इस वर्ष बजट को बढाकर दस लाख रूबल प्रतिदिन के हिसाब से रखा गया है। विशेष शोध-कार्यों आदि के लिए विश्वविद्यालय को शासन की तरफ से तीस लाख रूबल की सहायता अलग से मिलती है।

विश्वविद्यालय की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद एक सरकारी आयोग विद्यार्थी की फिर परीक्षा लेता है और उसकी योग्यता के अनुरूप उसे काम देता है। इसमें उसकी निजी रुचि और वह कहा रहना पसद करेगा, इसका भी ध्यान रक्खा जाता है।

विश्वविद्यालय के अध्यक्ष ने हमे ये सारी बातें बताई और कहा कि हम उनकी तथा उनके साथी प्रोफेसर और विद्यार्थियो की शुभेच्छाए

भारत के प्रोफेसर तथा विद्यार्थियो तक पहुचायें।

बातचीत के बाद हमे विश्वविद्यालय की मुख्य इमारत, सभा-भवन और विभिन्न विभाग दिखाये गए। मुख्य भवन की नवी मजिल से पूरे शहर का विहगम दृश्य हमने देखा। हमे विश्वविद्यालय का म्यूज़ियम, पुस्तकालय, स्वीमिंग-पूल, लेक्चर हाल, कसरत करने का स्थान आदि भी दिखाये गए।

विश्वविद्यालय को देखने के बाद हम छात्रालयो मे गये। यहापर हमे विद्यार्थी-सघ के मत्री मिले। उन्होने हमारा स्वागत किया और भारत तथा उसके महान नेता श्री जवाहरलाल नेहरू और भारत के विद्यार्थियो के प्रति सोवियत सघ की शुभकामनाए प्रकट की। उन्होने हमे बताया कि मास्को विश्वविद्यालय मे विद्यार्थियो के बहुत से सगठन है, जैसे 'यग कम्यूनिस्ट लीग' (कोमसोमोल), 'यग ट्रेड यूनियनिस्ट्स', 'साइटिफिक स्टुडेण्ट्स सोसाइटी', 'स्पोर्ट्स सोसाइटी', और 'टूरिस्ट्स सोसाइटी'। इनके अलावा साम्यवादी दल की भी एक शाखा है। कुछ विद्यार्थी इसके भी सदस्य है। २२००० विद्यार्थियो मे से १६००० विद्यार्थी 'यग कम्यूनिस्ट लीग' (कोमसोमोल) के सदस्य है। फुरसत के समय के खेलो के प्रबन्ध के लिए प्रत्येक छात्रावास मे विद्यार्थी कौंसिलें है। इसके अलावा विद्यार्थियो के क्लब भी है, जो नये, उदीयमान कलाकारो को प्रोत्साहन देने के लिए चित्रकला, नृत्य-सगीत, नाट्य आदि प्रवृत्तिया चलाते रहते हैं।

हर कालेज की एक प्रबन्धक समिति होती है। इसमे कोमसोमोल के द्वारा चुना हुआ एक विद्यार्थी-प्रतिनिधि भी होता है। उसे मत देने का अधिकार है। दूसरी बातो के साथ-साथ छात्रवृत्तिया किसे दी जाय, इसका भी विचार यह प्रबन्धक समिति करती है।

हमे बताया गया कि कोमसोमोल तो एक राजनैतिक सस्था है, परन्तु ट्रेड यूनियनें राजनीतिक सस्थाए नही है। प्रोफेसर, शिक्षक और बडी उम्र के विद्यार्थी ट्रेड यूनियनो के सदस्य हो सकते है।

विद्यार्थी-सघ ने हमारे सम्मान मे एक छोटा-सा 'समारोह' किया। इसमे प्रतिमा ने दो गीत गाये, जिनमे से एक टैगोर का भी था। विद्यार्थियो ने इन्हे बहुत पसन्द किया।

'मीत्रो', अर्थात् जमीन के अन्दर चलनेवाली रेल मास्को का एक विशेष आकर्षण है। जब हम यह रेल देखने गये तो रेलवे के डायरेक्टर ने हमारा स्वागत किया और इसका सारा इतिहास सुनाया। सन् १९३५ मे इसके निर्माण का काम शुरू हुआ। अब इस ४३ मील लम्बी रेल पर ४७ स्टेशन है। १०,००० व्यक्ति इसमे काम करते है। हमे बताया गया कि जमीन के अन्दर चलनेवाली इन गाडियो मे लगभग २७ लाख लोग प्रतिदिन यात्रा करते है। मास्को की जनसख्या ५० लाख है, इसे देखते हुए मुझे ये आकडे कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण लगे। मैंने उनसे पूछा कि किस आधार पर यह गणना उन्होने की है। स्वय वे लोग भी चक्कर मे पड गये कि ये आकडे किस आधार पर इकट्ठे किये गए है। जब मैंने अपना सदेह प्रकट किया तब स्वय उन्होने महसूस किया कि जो आकडे उन्होने हमे बताये थे, व्यवहार मे उन्हे प्राप्त करना बहुत कठिन था। मैने उनका ध्यान इस ओर खीचा कि यह हो सकता है कि एक व्यक्ति दिन मे कई बार सफर करता है और गणना करते समय एक ही व्यक्ति की अलग-अलग यात्रा को विभिन्न व्यक्तियो की यात्राए मान लिया गया हो।

इस ट्रेन मे बैठकर हमने चारो तरफ चक्कर भी लगाया। हर बडे स्टेशन पर हम उतरते, उसे अच्छी तरह देखते, और फिर आगे जाने के लिए अगली गाडी मे चढ जाते। हर तीन या चार मिनट मे एक गाडी आती-जाती थी।

नि सन्देह मास्को की जमीन के अन्दर चलनेवाली रेल एक बहुत बडी चीज है। इसका सचालन भी बहुत व्यवस्थित है। मुसाफिरो को ऊपर-नीचे लाने-ले जाने के लिए चलती हुई सीढिया है। स्टेशनो पर बत्तियो के बहुत बडे झूमर लटकते है, जिनसे अन्दर का सारा

भाग सदा जगमगाता रहता है। स्टेशन बहुत सुन्दर दिखते है, क्योकि उनमे से अधिकाश के फर्श सगमरमर के है। हमे कहा गया कि पहले तो सगमरमर केवल ज़ार और अमीरो के महलो के काम मे आता था, किन्तु अब वह सार्वजनिक उपयोग के स्थानो मे लगाया जा रहा है। स्टेशनो पर बडी-बडी पेंटिंग और मोज़ेक से बनाये गए सुन्दर-सुन्दर चित्र बने हुए है। इस रेलवे की अपनी सामान्य उपयोगिता तो है ही, परन्तु मुझे लगता है कि युद्ध-काल मे हवाई हमले से बचाव के लिए भी यह बहुत अच्छी जगह हो सकती है। इसके स्टेशनो मे से एक तो कोमसोमोल के युवको ने बनाया है। अत उसका नाम 'कोमसोमोल' रख दिया गया है।

उसी दिन दोपहर को १२-३० बजे हम 'इन्स्टिट्यूट ऑव ओरियण्टल स्टडीज' देखने के लिए गये। सस्था के अध्यक्ष ने अपने साथी अध्यापको और विद्यार्थियो की तरफ से हमारा स्वागत किया। सस्था की प्रवृत्तियो और खासतौर पर भारत से सम्बन्धित प्रवृत्तियो का उन्होने विस्तृत परिचय दिया। इन दिनो हमारे दो देशो के बीच मित्रता के सम्बन्ध होने के कारण भारत-विषयक अध्ययन पर यहा अधिक ध्यान दिया जा रहा है। बहुत-से रूसी विद्यार्थी हिन्दी सीख रहे हैं। कुछ बगला, उर्दू, मराठी, और मलयालम भी सीख रहे हैं। उन दिनो वहा रवीन्द्रनाथ ठाकुर, भारती, बकिमचन्द्र, प्रेमचन्द, निराला आदि की कृतियों के रूसी अनुवाद हो रहे थे। पाठ्यक्रम मे भारतीय दर्शनशास्त्र को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीय अर्थशास्त्र, खासतौर पर भारत मे विदेशी उद्योगो की स्थिति, भारत की कृषि-पद्धति मे क्या-क्या सुधार और परिवर्तन हो रहे है और सार्वजनिक उद्योग वगैरह का अध्ययन भी गहराई से हो रहा है।

प्रोफेसर गोलबर्ग ने भारत-रूस सम्बन्धो का अच्छा अध्ययन किया है। इन दोनो देशो के इतिहास तथा अन्य पुराने दस्तावेजो के अध्ययन के आधार पर उन्होने बताया है कि सत्रहवी और अठारहवी

सदी से हमारे दोनो देशो के बीच मित्रता के सम्बन्ध चले आ रहे है। यो तो शोध-कार्य करनेवालो ने यहातक भी पता लगाया है कि ठेठ दसवी सदी से हम दोनो देशो का पारस्परिक सम्बन्ध है। यह सस्था भारत का प्राचीन और आधुनिक इतिहास, जिसमे सन १८५७ का इतिहास भी शामिल होगा, शीघ्र ही प्रकाशित करने जा रही है।

यहापर एक वात मुझे बड़ी अजीव लगी। यद्यपि ये लोग यहापर अध्ययन करते है, वडे-वडे प्रवन्ध लिखते है और भारत के प्रसिद्ध लेखको, कवियो और राजनैतिक विचारको पर समाचार-पत्र व पत्रिकाओ के लिए लेख वगैरह तैयार करते है, फिर भी उन्होने महात्मा गाधी का कही नामोल्लेख तक नही किया। उन्होने तिलक और उनके विचारो का वडे आदर के साथ वर्णन किया है । परन्तु गाधीजी के वारे मे वे एकदम चुप रहे। भारत के जिन लोगो को स्वय हम भी वहुत कम जानते है, उनके नामो का उल्लेख है, पर गाधीजी का नाम कही नही।

जव मैं उन्हे धन्यवाद देने के लिए उठा तो मैंने उनका ध्यान इस तरफ खीचा। मैंने कहा, "यदि आप भारत की वर्तमान पीढी और खासकर युवको के दिलो को जानना चाहते है, तो जवतक आप गाधीजी का अध्ययन नही करेंगे तवतक आप इनको नही जान सकेंगे।" मैंने तो, चूकि यह वात ध्यान मे आई, इसलिए साफ-साफ कह दी थी। यह उम्मीद नही थी कि वे इसका जवाव देगे। परन्तु उनपर मेरी वात का गहरा असर पड़ा। उनके अध्यक्ष तथा इस विभाग के विशेषज्ञ ने वडे विस्तार से कहा कि उनकी सरकार और पार्टी गाधीजी के सिद्धान्तो और विचारो से मतभेद रखती है। वे तिलक के विचारो को पसन्द करते है। फिर भी मुझे वरावर अश्चर्य होता रहा कि इस प्रकार की विशुद्ध अध्ययन की सस्था मे भी महज मतभेद के कारण गांधीजी के विचारो और सिद्धान्तो के अध्ययन की उपेक्षा क्यो की जा रही है।

प्रतिनिधि-मडल के अन्य सदस्य टालसटाय की जायदाद 'यास्नाया

पोल्याना' देखने भी गये। यह जगह मास्को से कोई १२५ मील की दूरी पर है। दूसरे काम मे व्यस्त रहने के कारण मैं नही जा पाया। शाम को लौटकर सदस्यो ने बताया कि ग्राम्य प्रदेश की यह यात्रा बहुत आनन्ददायक रही। उन्हे खुशी थी कि उन्हे टाल्सटाय का निवास-स्थान देखने का अवसर मिला। टाल्सटाय को हमारे यहा बहुत आदर की दृष्टि से देखा जाता है। गाधीजी के साथ उनके सम्बन्ध तथा गाधीजी पर उनके प्रभाव को हम कैसे भूल सकते है। यास्नाया पोल्याना शहर की भीड-भाड और व्यस्त जीवन से दूर शात वातावरण मे 'वर्च' के वृक्षो के झुरमुट के बीच स्थित है। मौसम दिनभर खराब रहा। बूदाबादी होती रही। टाल्सटाय म्यूज़ियम के डिप्टी डायरेक्टर और कामरेड अलेग्ज़ेन्डर दिमियिव ने प्रतिनिधि-मडल के सदस्यो का सौजन्य-पूर्ण स्वागत किया। यह तमाम जायदाद टाल्सटाय के नाना की थी। टाल्सटाय ने पचास वर्ष से भी अधिक इसी स्थान मे बिताये थे और उनकी अधिकतर श्रेष्ठ कृतिया यही लिखी गईं थी। सन १९०६ मे गाधीजी ने टाल्सटाय को जो पत्र लिखा था, वह मास्को म्यूज़ियम मे सुरक्षित रखा हुआ है। टाल्सटाय का मकान अब भी उसी तरह जमा हुआ है जैसा टालसटाय के समय मे था—फर्नीचर आदि सब उसी तरह रखे हुए है,। निवास-स्थान के पास ही एक म्यूज़ियम बनाया गया है, जिसमे टाल्सटाय की पुस्तको की मूल पाण्डुलिपिया आदि सहेजकर रखी गई है।

एक दिन सुबह हम मास्को का प्रख्यात लेनिन स्टेडियम देखने गये। यह एक बहुत विशाल स्टेडियम है। अपने-आपमे यह एक स्वतत्र सस्था ही है। उसके डायरेक्टर जनरल श्री नापासनीकोव ने हमारे साथ घूमकर सारा स्टेडियम दिखाया। एम्फी थियेटर की तर्ज की उसमे तिहत्तर कतार है, जिनमे एक लाख से ऊपर आदमी बैठकर खेल देख सकते है। उसके अन्दर जाने-आने के रास्ते इस खूबी के साथ बनाये गए है कि इतने सारे लोग सिर्फ सात मिनट के अन्दर बाहर चले जा

सकते हैं। हमें बताया गया कि इस स्टेडियम के बनाने में लगभग ४५ करोड़ रूबल लगे।

मुख्य स्टेडियम के साथ बच्चो का एक छोटा स्टेडियम भी है, जिसमे केवल सात से सत्रह साल की उम्र के बच्चे खेलते हैं। इसमे प्रतिदिन २५०० बच्चो को शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अलावा एक छतदार स्टेडियम भी है, जिसे क्रीडा-महल (पैलेस ऑव स्पोर्ट्स) कहते है। इसमे १७० प्रेक्षक बैठ सकते है। बॉक्सिंग के मैच, वाद्यवृन्द, नाटक आदि इसीमें होते है। पडौस मे ही एक तैरने का तालाब भी है, जिसके चारों ओर १३,२०० व्यक्ति बैठकर देख सकते हैं। प्रत्येक दिन इसमे लगभग १५०० मनुष्य तैरने का अभ्यास करने के लिए आते हैं।

यहापर एक स्पोटर्स म्यूजियम अर्थात खेल-कूद के साधनो का सग्रहालय भी है। इसमे हमे पिछले युवकोत्सव की एक छोटी फिल्म दिखाई गई। इस सग्रहालय मे एक आलमारी भारतीय चीजो की थी। रूस की वालीवाल और फुटवाल की टीमे भारत मे आई थी, तब उन्हे जो इनाम मिले थे, उनको इसमें सग्रहीत करके रखा गया है।

शाम के समय हम मास्को की उद्योग और कृषि-प्रदर्शनी देखने गये। यह एक स्थायी प्रदर्शनी है, जो विशाल इमारतो मे सजाई गई है। कई बडे-बडे मडप हैं। परन्तु इनके अलावा हर राज्य ने अपने-अपने स्थापत्य और कला के अनुरूप स्वतन्त्र भवन भी बनाये है। उनमें अपने-अपने राज्य के उद्योगो की तथा खेती की चीजें सजाकर रक्खी है। यह पूरा क्षेत्र, उसके उद्यान, फव्वारे और सारी सजावट अत्यन्त आकर्षक और मनोहर है। अगर इस सारे सग्रहालय को ध्यान से देखने लगें तो कई दिन लग जाय। हमारे पास तो कुछ ही घण्टे थे। अत हम सारे मडपो मे जल्दी-जल्दी घूम लिये और सारी चीजो पर एक दौड़ती हुई नज़र मात्र डाल ली। इनमे एक 'स्पुतनिक मडप' भी था। उसकी तरफ हमारा ध्यान खासतौर पर गया। इसमें रूस के स्पुतनिक

का पूरे आकार का एक नमूना रक्खा था। विशेषज्ञो ने पहले और दूसरे स्पुतनिक की सारी विशेषताए हमे समझाई। ज्यार्जिया का मडप मुख्यतया फलो और सब्जियो से भरा था। इसीके पास एक काच का मकान था, जिसके अन्दर ज्यार्जिया के फल सचमुच उगाये जाते है। एक और मडप था, जिसमे शान्ति के लिए अणु-शक्ति का उपयोग बताया गया है। इसने भी हमारा ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया।

अगले दिन सुबह हम जगत-प्रसिद्ध क्रेमलिन देखने गए। अन्दर पुराने ढग के बहुत-से गिरजाघर है। क्रेमलिन के सामने इस्पात का बना एक बहुत बडा घण्टा है, जिसका वजन २०० टन से भी ऊपर होगा। ४० टन की एक बहुत बडी तोप भी है—'तोप, जो कभी दागी नही गई और घटा, जो कभी बजाया नही गया।' घटा वास्तव मे ढले हुए इस्पात का एक बहुत बडा ढेर-सा है। क्रेमलिन पर ले जाते समय यह कुछ टूट गया था।

क्रेमलिन को देखकर स्वभावत हमारे दिल पर बडा असर हुआ। समस्त ससार को प्रभावित करनेवाले कितने ही निर्णय वहा लिये गए है और अब भी लिये जा रहे है। दुर्भाग्य से मुख्य इमारतो की मरम्मत चल रही थी, जहा उनकी ससद की बैठकें होती है। हमारे रूसी मित्रो ने इन्हे हमे दिखाने की इजाज़त लेने की बहुत कोशिश की, परन्तु वह नही मिल सकी।

फाटक के पासवाला सग्रहालय भी हमे बताया गया। यहापर उन्होने ज़ारो की बहुत-सी चीजो का सग्रह करके रक्खा है। अब तो शोभा की ये कीमती चीजें महज ऐतिहासिक महत्व की होकर रह गई है। अनेक प्रकार के कीमती व सुन्दर मुकुट, सिहासन, जेवरात, पहनने के बहुमूल्य वस्त्र, जिरह-बख्तर और रथ वगैरह यहापर रक्खे है।

महान लेनिन-ग्रन्थालय को भी हमने जल्दी मे एक नज़र डालकर देख लिया। हमे बताया गया कि इस ग्रन्थालय मे १६० भाषाओ की दो करोड पुस्तकें है। इसमे बडे-बड़े बीस हाल है, पचासो वाचना-

लय हैं और छोटी-छोटी 'माइक्रो फिल्में' पढने के यन्त्रो के बीस सेट है।

• हम मास्को की आर्ट गैलेरी भी देखने गये। इसे भी अच्छी तरह देखने के लिए हमारे पास पूरा समय नही था। हमे कहा गया कि लेनिनग्राद का चित्र-सग्रहालय इससे भी बडा और प्रसिद्ध है और उसे देखने के लिए हमे अधिक समय मिल सकेगा।

रूस के अन्य स्थानो की सैर करके जब हम वापस मास्को आये, तब एक दिन शाम को हम गोर्की पार्क मे टहलने चले गए, जिसे यहा 'सास्कृतिक उद्यान' कहा जाता है। मास्कवा नदी के किनारे यह एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। इसके अन्दर बहुत-से नाटकगृह, उपहारगृह, खेल के मैदान आदि हैं। यहा बहुत बडी सख्या मे लोग आकर अपना फुरसत का समय बिताते है।

मास्को से बारह घटे की रेल-यात्रा के बाद सुबह नौ बजे हम ऐतिहासिक और सुन्दर नगर लेनिनग्राद पहुचे। स्थानीय युवक-समिति के सदस्यो ने स्टेशन पर हमारा स्वागत किया। सामान आदि होटल मे जमाकर हम घूमने निकले। जिस होटल मे हमे ठहराया गया था, वह कोई बहुत अच्छा होटल नही था। ऐसा लगा कि लेनिनग्राद मे होटलो की बहुत कमी है, बल्कि बढिया होटल तो एक ही था, जो पूरी तरह भर चुका था। हमारे मेजबानो ने वढिया होटल मे हमारी व्यवस्था करने का भरपूर प्रयत्न किया, किन्तु वे भी वेचारे क्या करते!

लेनिनग्राद शहर मास्को की अपेक्षा अधिक सुन्दर और अच्छा लगा। मास्को जितनी भीड-भाड़ और व्यस्तता भी यहा नही थी। लोगो के काम करने और चलने-फिरने मे यहा अधिक शाति थी। वे अधिक खुशहाल और मैत्रीपूर्ण लगे। महिलाओ मे नारी-सुलभ लावण्य व माधुर्य अपेक्षाकृत अधिक है, ऐसा भी हमें लगा। उनके चेहरे पर सहज-स्वाभाविक कोमलता और व्यवहार मे सौजन्य का अनुभव हमे हुआ। सुन्दर चेहरे भी यहा कही-कही दिखाई दे जाते थे। लेनिनग्राद मे हम जहा भी गये, लोग हमसे स्नेह और मित्रतापूर्वक मिले। वे जिस तरह

हमारा स्वागत करते थे, वह हमे वहुत अच्छा लगा।

नगर के चारो ओर अच्छी-खासी हरियाली है। सैकडो बगीचे शहर मे हैं। नदी के दोनो किनारो पर वसी वस्तिया काफी विकसित हैं।

गत महायुद्ध मे जर्मन सेनाए नगर के वहुत करीव तक आ गई थी और शहर के चारो तरफ उन्होने घेरा डाल दिया था। अत लेनिनग्राद और उसके आसपास के इलाको को वहुत विपदाए सहनी पडी। तमाम शहर युद्ध की यादगारो से भरा पडा है। 'मार्स' (युद्ध देवता) के वगीचे मे सतत जलनेवाली अग्नि-ज्वाला है, जो युद्ध के शहीदो की स्मृति मे जलाई गई थी। ज़ार पीटर प्रथम के शीतकालीन प्रासाद के सामने एक ४७ मीटर ऊचा विजय-स्तम्भ है, जिसे नेपोलियन के समय के रूसी-फ्रेंच युद्ध मे हुई रूसी विजय की स्मृति मे वनाया गया था।

हमे लेनिनग्राद म्यूनिसिपल-भवन भी ले जाया गया। उपप्रधान, कामरेड स्त्रज्लकोवस्की ने हमारा स्वागत किया और लेनिनग्राद-सोवियत का पूरा विवरण दिया। स्थानीय नगर-प्रशासन के विभिन्न पहलुओ को उन्होंने विस्तार से हमे वताया।

लेनिनग्राद-गणतन्त्र की सामान्य-परिषद् मे ५५१ सदस्य हैं, जिनमे से ३४५ पुरुष है और २०६ महिलाए। ये सदस्य स्थानीय नागरिको द्वारा चुने जाते हैं। प्रत्येक ६००० लोगो के पीछे एक सदस्य होता है। सामान्य परिषद् की कार्यकारिणी समिति मे २५ सदस्य होते है, जिनमे से दस 'प्रीसीडियम' के सदस्य होते है। सभापति व मन्त्री के अतिरिक्त 'प्रीसीडियम' मे आठ सदस्य ऐसे होते हैं, जो सभापति को रोज़मर्रा के कार्यो मे सहायता देते हैं। सामान्य परिषद अपने सभापति और अन्य समितियो का चुनाव करती है। विभागाध्यक्ष चुने भी जा सकते है और, यदि आवश्यकता हो तो, उनकी पद-वृद्धि भी की जा सकती है।

हमे वताया गया कि सामान्य परिषद् के ५५१ सदस्यो मे से २९३ सदस्य उच्च शिक्षा-प्राप्त हैं, ४८ सदस्य स्कूली-शिक्षा प्राप्त हैं और

२१० सदस्य फैक्टरियो आदि मे काम करते है ।

सामान्य परिषद् की बैठक वर्ष मे तीन-चार बार होती है। बैठक मे वे नगर का बजट, भवन-निर्माण का कार्यक्रम, शिक्षा आदि की नीति निर्धारित करते है। सामान्य परिषद् की १५ स्थायी उपसमितिया है । कार्यकारिणी-समिति की बैठक प्रत्येक सोमवार को होती है । 'प्रीसीडियम' की बैठक प्रत्येक मगलवार को होती है और आवश्यकता होने पर अधिक बैठके भी हो सकती है । जिस वर्ष हम वहा थे, उस वर्ष उनका वार्षिक खर्च ३२,५४० लाख रूबल का था, और आय ३२,४५० लाख रूबल। आय का मुख्य साधन औद्योगिक उत्पादन-कर है । प्रत्येक नागरिक अपनी आय का एक निश्चित्त हिस्सा आय-कर के रूप मे देता है, जिसका कुछ भाग तो राज्य के पास चला जाता है और शेष नगर-निगम के पास ।

कुल खर्च का लगभग ४८ प्रतिशत निर्माण-कार्यों मे चला जाता है, जिसमें नहरें आदि बनाना और उनकी देखभाल भी है। लगभग इतनी ही राशि शिक्षा, सफाई, स्वास्थ्य-सेवा, बगीचे, पुस्तकालय, थियेटर, सग्रहालय तथा अन्य सास्कृतिक कार्यों पर खर्च की जाती है । २ प्रतिशत प्रशासन पर और २ प्रतिशत विविध मदो पर खर्च किया जाता है ।

लेनिनग्राद की जनसख्या ३२ लाख है । १७ वर्ष की उम्र से मताधिकार प्राप्त हो जाता है । स्थानीय पुलिस नगर-निगम के ही आधीन है ।

नगर-निगम के सदस्यो को निगम से कोई तनख्वाह नही मिलती । जिन फैक्टरियो अथवा सस्थाओ का वे प्रतिनिधित्व करते है, वहा से उन्हे तनख्वाह मिलती है। 'प्रीसीडियम' के दस सदस्यो को निगम तनख्वाह देता है । शहर की उपसमितियो मे २५२ लोग और क्षेत्रीय उपसमितियो मे १०६२ लोग नौकरी करते हैं। हमे बताया गया कि निगम-सदस्यो को केवल साम्यवादी दल ही खडा नही करता, वल्कि उन्हे अलग-अलग सस्थाए अथवा जनता खड़ा करती है। साथ ही उन्होने इस बात को भी माना कि चुनाव मे प्रतिद्वंदी खड़ा करने की

व्यवस्था तो है, लेकिन ऐसा बहुत कम होता है। सदस्य निर्विरोध ही चुनकर आ जाते हैं।

हमे बताया गया कि व्यक्तिगत आय पर ८ प्रतिशत तक आय-कर वसूल किया जाता है। नौकरी-पेशा लोग ६ प्रतिशत आय-कर देते हैं। लेकिन हमे ये आकडे सदेहजनक लगे, क्योकि दूसरी जगह से हमे जो आकडे प्राप्त हुए, वे इनसे सर्वथा भिन्न थे।

हमे लगा कि हमारे यहा नगर-निगम के सामने जो समस्याए और कार्यक्रम है, वे वहा भी है। अतर केवल इतना है कि उनका वजट हमारे यहा के वजट से काफी वडा है। मकान की समस्या तो उनके सामने भी उतनी ही विकट है जितनी हमारे यहा।

जब हमने कामरेड स्त्रज्लकोवस्की से पूछा कि आपके आधीन कुल कितने आदमी काम करते है, तो उन्होने मजाक मे हमसे पूछा कि आपका मतलब शरारत करनेवाले लोगो से ही है न ! श्री स्त्रज्लकोवस्की लगभग दो वर्ष पूर्व भारत आये थे और भारत-यात्रा के कई सुन्दर सस्मरण उन्होने हमे सुनाये।

हमने 'लेनिनग्राद युवक क्लब' भी देखा। क्लब के सभापति काम-रेड दिमत्री गिम्रानकिन ने हमारा स्वागत किया। सगीत-कार्यक्रम मे जाने से पहले हमने उनके कुछ सक्रिय कार्यकर्त्ताओ के साथ कुछ देर मुलाकात की। सास्कृतिक कार्यक्रमो के लिए उनके पास एक विशाल भवन है, जिसके एक हाल मे एक हजार लोग आराम से बैठ सकते हैं। हमे लगा कि हम जो कार्यक्रम देखने गये थे, वह बहुत लोकप्रिय था, क्योकि पूरा हाल दर्शको से खचाखच भरा था और टिकट मिलना कठिन था। सब कलाकार पेशेवर कलाकार नही थे। उनमे से कुछ तो अध्यापक थे, कुछ मजदूर और वढई थे। कलाकारो मे एक रसोइया नौजवान भी था। अपने खाली समय मे ये लोग मन-वहलाव के लिए क्लब मे आते हैं और इस तरह के कार्यक्रम तैयार करते है। इससे न केवल उन्हे ही लाभ होता है, वल्कि जनता का भी मन-वहलाव हो जाता है।

जो कार्यक्रम हमने देखा वह वास्तव मे बहुत सुन्दर था और उसका सगीत ऊचे दर्जे का था। उन्होंने कई देशो के गीत गाए, प्रत्येक देश का गीत उसी देश की भाषा और तर्ज मे गाया गया। ग्यारह-बारह वर्ष के एक बच्चे ने अत्यन्त आत्म-विश्वास और शानदार तरीके से एक गीत सुनाया।

हम लोग तो केवल कार्यक्रम देखने गये थे, किन्तु ऐन समय पर कार्यक्रम के प्रबन्धको ने सोचा कि उपस्थित दर्शको से हमारा परिचय कराया जाय तो अच्छा हो। हमे मच पर ले जाया गया और एक-एक करके हम सबका परिचय दर्शको से कराया गया। यह जानने पर कि हम लोग भारतवर्ष से आये है, उपस्थित लोगो ने भारी करतल-ध्वनि से हमारा स्वागत किया।

कोई लम्बा भाषण देने का अवसर तो वह था नही। अतः जब मुझसे बोलने को कहा गया, तो स्नेहपूर्ण स्वागत के लिए आभार प्रदर्शन कर मैंने शिष्टमडल की ओर से उन्हे ताजमहल की एक प्रतिकृति भेट मे दी और कहा, "यह इमारत प्रेम की प्रतीक है। लेकिन वह प्रेम एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के लिए था। किन्तु यह प्रतिकृति मैं भारत के नवयुवको की ओर से लेनिनग्राद के नवयुवको को प्यार और स्नेह के प्रतीक के रूप में भेंट कर रहा हू। यह व्यक्ति विशेष के प्रेम का नही, बल्कि सामूहिक प्रेम का प्रतीक है।" उपस्थित लोगो को ये भाव बहुत पसन्द आये। मेरे बोलने के बाद एक मिनट तक तालियो की गडगडाहट से हाल गूजता रहा।

जब हमने उन्हे ताजमहल की प्रतिकृति भेंट में दी तो प्रबन्धको को लगा कि हमे भी कुछ देना चाहिए। अत. शीघ्र ही उन्होंने टाल्स्टाय की एक मूर्ति मगवाई और हमें भेंट में दी।

इस प्रकार का हार्दिक और शानदार स्वागत वास्तव में हमारे लिए एक निराला अनुभव था। रात को लगभग १२.३० बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ और क्लब के सदस्य हमे हमारी बस तक पहुचाने आये।

लडके-लडकिय ने लोकप्रिय रूसी गाने गाये और हार्दिक विदाई दी। सोवियत सघ में आने के बाद आज पहली बार ही हमारा ऐसा स्वयस्फूर्त व हृदयस्पर्शी स्वागत हुआ था। लोगो से मिलना-जुलना आदि तो इसके पहले भी चल रहा था। लेकिन वे मुलाकातें बहुत औपचारिक थी। यह प्रेम और स्नेह देखकर तो एक वार यह भूल गये कि हम विदेश में है।

लेनिनग्राद विश्वविद्यालय की 'ओरियन्टल फैकल्टी' देखने का भी अवसर मिला। यह विश्वविद्यालय १४० वर्ष पुराना है और रूस का दूसरा सवसे वडा विश्वविद्यालय है। यहा २०,००० से भी अधिक विद्यार्थी शिक्षा पाते है, जिनमे से १२,००० नियमित कक्षाओ के विद्यार्थी है, ४००० शाम की कक्षाओ के और ३००० विद्यार्थी पत्र-व्यवहार के द्वारा शिक्षा पाते है। छात्रालय मे ६००० विद्यार्थी रहते है। केवल पूर्वी यूरोपीय देशो के ही लगभग ८०० विद्यार्थी यहा है। कई विद्यार्थी हिन्दी सीखते हैं, कुछ तो वगला और तमिल तक का अध्ययन कर रहे हैं। पुस्तकालय मे ३० लाख से भी अधिक पुस्तकें है।

दोपहर को हमने 'हरमिताज' देखा। यह रूस के पुराने जारो का शीतकालीन प्रासाद था और अव यह ससार की सवसे वडी कलादीर्घाओ (आर्ट गैलेरी) मे से एक है। लगभग ७५०० कलाकृतिया यहा एकत्रित की गई है, जिनमे से कुछ लियोनार्डो द'विंची और रेम्ब्रा जैसे महान् कलाकारो की मौलिक कृतिया है। समय की कमी के कारण इस महान् कला-भवन को हम जल्दी-जल्दी मे ही देख पाये।

शिष्टमडल के अन्य सदस्य लेनिनग्राद का 'पायनियर-प्रासाद' देखने भी गये। यह बच्चो की प्रवृत्तियो का एक वडा केन्द्र है तथा उस महल मे स्थित है, जहा पहले रूसि वश के लोग रहते थे। इसमे ३०० कमरे हैं। एक पुस्तकालय भी है, जिसमे लगभग एक लाख पुस्तकें है। यहा वच्चे विभिन्न खेल खेल सकते हैं। वच्चो के चित्रो, खिलौनो और मॉडलो की प्रदर्शनी ने शिष्टमडल के सदस्यो को विशेपरूप से आकर्पित किया। वाद मे वच्चो ने स्वय एक सगीत-कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

मैत्रीपूर्ण घरेलू वातावरण और बच्चो के सौजन्यपूर्ण व्यवहार ने हमारे साथियो को बहुत प्रभावित किया।

लेनिनग्राद से हवाई जहाज द्वारा हम क्रीमिया पहुचे और क्रीमिया हवाई अड्डे से मोटरो द्वारा काले-समुद्र के तट पर स्थित याल्टा। याल्टा क्रीमिया का प्रसिद्ध स्वास्थ्य-केन्द्र है। एक दिन शाम को वनस्पति-बाग (बोटेनिकल गार्डन) में गये। यह बगीचा जारो के जमाने का है। बहुत सुन्दर है। देश-विदेश से पेड-पौधे लाकर यहा लगाये गए है। इससे स्थानीय लोगो को कल्पना होती है कि भिन्न-भिन्न देशो मे कैसे-कैसे वृक्ष और वनस्पतिया होती है।

बगीचे मे हमे लगभग तीस रूसी लडकियो का झुड मिला। ये लड़किया भ्रमण के लिए लेनिनग्राद से आई थी। उनमे से एक लडकी ने, जो थोडी-बहुत अग्रेजी जानती थी, हमारे एक साथी से मजाक में पूछा कि हमारे प्रतिनिधि-मडल मे केवल एक ही महिला क्यो है। हमारा साथी कुछ असमजस मे पड गया और उत्तर के लिए मेरी तरफ इशारा कर दिया। उस लडकी के प्रश्न का कोई सही उत्तर तो मेरे पास भी नही था। अत उत्तर देने की अपेक्षा मैंने उसीसे एक प्रश्न पूछा, "तुम लोग इतनी लडकिया हो, तुम्हारे साथ पुरुप कितने है?" चूकि उनके साथ एक भी पुरुष नही था, उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया और सब लोग मुक्त हँसी हँस पडे। थोडी ही देर मे हम सब आपस मे खूब घुलमिल गये। उन्होने हमारे शिष्टमडल के बारे में कई प्रश्न पूछे। प्रतिमा के बारे मे भी उन्होने जानना चाहा कि वह किसान है या फैक्टरी मे काम करनेवाली। जब हमने उन्हे बताया कि वह गाना जानती है तो उन्होने सडक पर खडे-खडे ही उससे गाना सुनने की ज़िद की। बाद मे उन्होने भी एक रूसी गीत गाकर हमे सुनाया।

शाम को हमे एक शानदार जहाज में समुद्र की सैर कराई गई। इस जहाज का नाम 'रोसिया' था और इसमे १५०० यात्रियो के बैठने की व्यवस्था थी। यह थोड़ी देर पहले ही बन्दरगाह पर आया था।

उसके बाद हम समुद्र के किनारे-किनारे सडक पर टहलते हुए चले। दरअसल यह याल्टा की एकमात्र मुख्य सडक है। सारी सडक पर्यटको से भरी पडी थी। कई रोगी भी थे, जो देश के विभिन्न भागो से स्वास्थ्य-सुधार के लिए यहा आये हुए थे।

शाम को यह सडक लोगो से भर जाती है और काफी भीड-भाड हो जाती है। उस समय सवारियो का आवागमन बिलकुल बन्द कर दिया जाता है, जिससे लोगो को चलने-फिरने मे बहुत सुविधा हो जाती है।

सडक पर टहलते समय हमने डेढ-दो वर्ष का एक बच्चा देखा, जो सडक के बीचो बीच नन्ही-सी घोडागाडी हाककर ले जा रहा था। हमारा एक साथी उसके पास गया और घोडे की लगाम पकडकर हमारे पास ले आया। बच्चा जरा भी नही रोया, उलटे उसने हाथ मिलाने के लिए अपना दायां हाथ आगे बढा दिया। उसके माता-पिता पास ही एक बेंच पर बैठे हुए थे। यह देखकर कि उनके नन्हे बच्चे ने नये-नये दोस्त बनाये हैं, वे भी हमारे पास आये और कुछ ही देर मे हमारे मित्र बन गये।

रास्तो से गुजरनेवाले लोग तथा दूसरे भी हमारे साथ बहुत प्रेम से व्यवहार करते। उनको भारतीय अच्छे लगते हैं। वे हमारे प्रधान-मन्त्री की खूब तारीफ करते। जहा-जहा भी हम गये, हमारा बडे हर्ष के साथ स्वागत किया गया। उसमे कही कोई कृत्रिमता नही थी।

भाषा की कठिनाई के बावजूद लोग हमसे बोलने और बातचीत करने को उत्सुक थे। अगरेजी जाननेवाले बहुत कम थे, इसलिए दुभाषिये की सर्वत्र माग रहती। जहा-कही कोई थोडी भी अगरेजी जाननेवाला मिल जाता, लोग उसे लेकर हमारे पास आते और उसके जरिए दुनियाभर के प्रश्न उत्सुकतापूर्वक हमसे पूछते।

स्वदेश के अतिरिक्त उन्हे अपने शहर पर भी गर्व था। हर बात-चीत के अन्त मे 'हमारा शहर आपको कैसा लगा?' जरूर पूछ लिया जाता। लेनिनग्राद मे भी लोग इसी तरह पूछते थे।

रूस मे हमने जबसे कदम रक्खा, हमारा सारा समय बडा व्यस्त रहा। याल्टा मे पहली बार हमें सही माने मे आराम और चैन मिला। 'काले-समुद्र' के सुन्दर तटो और पास-पडोस के स्वास्थ्यप्रद स्थानो पर हम खूब मौज से घूमे। समुद्र के पानी का गहरा नीला रग बडा मन-मोहक लगता था। नाश्ता करके मोटर-बोट मे हम मिशोव के लिए रवाना हुए। रास्ते मे हमारी नाव कुछ स्टेशनों पर रुकी। हम किनारे-किनारे ही जा रहे थे। तटो पर सैकडो लोग आनन्द से घूमते हुए दिखाई दे रहे थे। कोई बालू पर लेटा है तो कोई सूर्य-स्नान कर रहा है, कोई नहा रहा है तो कोई नौका-विहार कर रहा है। लगभग सारे समुद्र-तट को लोगो के विश्राम-विहार के लायक़ सजा-बना दिया गया है और इसका लाभ उठाने के लिए यहा हजारो-लाखो की सख्या मे लोग आते रहते हैं। जैसे ही हम मिशोव पहुचे, हम सीधे समुद्र मे कूद पडे और खूब मौज से स्नान किया, तैरे, किश्तियो पर घूमे और खेले। पानी काफी ठण्डा था, फिर भी बहुत मज़ा आया। बिल्कुल तरोताजा हो गये।

भोजन के बाद हम फिर नये-नये स्थान और चीजें देखने के लिए निकल पडे। अेनसोसकी महल हमे बडा अच्छा लगा। इसमे यूरोप और आटोमन के स्थापत्यकला का मेल है। मुगल तरीके के गुम्बद थे और खिडकिया गोथिक ढग की थी।

ल्यानो और मिशा तो हमारे साथ मास्को से ही आये थे। इनके अलावा दो स्थानीय मित्र, एरिक और नाझा भी इस तरफ की सारी यात्रा मे हमारे साथ रहे। हमने यहा भी मित्र बनाना शुरू कर दिया था। नाझा एक वयस्क और बडी मुस्तैद महिला है। इन्होने सगी बडी बहन की भांति हमारी सभाल की। वह बडी चिन्ता के साथ हमारे लिए शाकाहारी भोजन बनवाती और भोजन मे रोज नई-नई चीजे देती। जहा-जहा भी हमे जाना होता, वह हमसे पहले एक अलग कार में पहुच जाती। जब हम पहुचते तो सारी चीजें तरतीब से सजी-सजाई हमें मिलती। उनकी

शलीनता और कार्यकुशलता ने हमे बडा प्रभावित किया।

जब हम नाव मे मिशोव से लौटने लगे तो मुसाफिरो ने आकर हमे घेर लिया। उनके लिए और हमारे लिए भी वह एक उत्सव-सा बन गया। हम भी उनमे घुल-मिल गये और खूब गाते-खेलते रहे। उनमे एक आठ वर्ष का बालक ब्लादिशिव शेको भी था। उसने हाव-भाव समेत एक कहानी सुनानी शुरू कर दी। वह बहुत ही अलमस्त प्रकृति का लडका था। जो कहानी उसने सुनाई, उसका भाव यही था कि एक बार एक भेडिया एक गाव मे आया। लोग उसे मार डालना चाहते थे। वह एक बिल्ले के पास गया और पूछा कि गाव मे कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है, जो उसकी जान बचाये? बिल्ले ने तीन-चार लोगो के नाम बताये। भेडिया बोला, "नही, वे मेरी मदद नही करेंगे, क्योकि मैंने उनके जानवर खा लिये थे।" बिल्ले ने उत्तर दिया, "जब तुमने सब लोगो के जानवर खा डाले, तो तुम्हारी जान कौन बचायगा?"

कहानी समाप्त होने के बाद जब मैंने उससे पूछा कि हमारे साथ भारत चलोगे, तो उसने कहा, "हा-हा, क्यो नही! लेकिन थोडे ही समय के लिए चलूगा। और वह भी अकेला नही, अपने परिवार के साथ आऊगा। मुझे अपना पता दे दीजिये। मै आपको पत्र लिखूगा।" अपनी उम्र के हिसाब से उसकी बुद्धि बहुत प्रखर थी। उसके बोलने-चालने और व्यवहार मे काफी आत्मविश्वास था।

शाम को हमे अलूपका दिखाने ले जाया गया। यह वही प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है, जहा सन् १९४५ मे लडाई के अन्त मे स्तालिन, चर्चिल और रूजवेल्ट ने युद्ध और शान्ति के बारे मे महत्वपूर्ण निर्णय लिये थे। हमे वह स्थान भी दिखाया गया जहा इनकी बैठकें हुईं और जहा वे तीनो प्रमुख ठहरे थे। जिस इमारत मे चर्चिल ठहरे थे, वह सुन्दर है। सन् १९५५ मे जब प्रधानमत्री नेहरू यहा आये थे, तब उन्हे भी इसीमे ठहराया गया था। अब तो इसे सेनीटोरियम बना दिया गया है। समुद्र

के किनारे चारो ओर पहाड़िया है । अधिकतर इन पहाडियो की ढाल पर ही मकान वनाये जाते है । चारो तरफ पेड़-पौधे और हरियाली होने के कारण सबकुछ बहुत सुन्दर लग रहा था । समुद्र के किनारे पर हमारे यहा जैसी रेत नही होती, बल्कि ककड-पत्थर होते है ।

दूसरे दिन सुबह नाश्ते के फौरन बाद हम इपलसी पर्वत पर गये । इस पहाड की ऊचाई १२५३ मीटर है । पहाड की चोटी पर महायुद्ध मे मारे गए शहीदो का स्मारक है । ऐसे पहाडो पर सडक बनाना बहुत ही कठिन और खर्चीला है । इस क्षेत्र में एक किलोमीटर सड़क बनाने-मे लगभग १५० लाख रूबल खर्च आता है । प्रशासन ने सडक बनानेवाले मजदूरो के लिए तीन-चार मकान बनवा दिये हैं । हमें एक मकान भी दिखाया गया, जो साइबेरिया और टुड्रा से आनेवाले पर्यटको के लिए सुरक्षित है । रेलवे कर्मचारियो और खदान मे काम करनेवाले मजदूरो के लिए भी अलग-अलग मकान सुरक्षित हैं ।

शाम को हम युक्रेन सेनीटोरियम मे गये । वहा के लोगो ने हमारा हार्दिक स्वागत किया और हमारी सुख-सुविधा का बहुत ख्याल रखा । सेनीटोरियम की देखभाल एक ७२ वर्ष की वृद्धा करती है । हर माने में वह अद्भुत महिला थी । सब काम वह अपने हाथो से करती थी । हम जिस मेज पर खाना खानेवाले थे, उसे उसने स्वय विशेष रूप से सजाया था । वह कमाल की मेजबान थी । इतने आग्रह के साथ उसने हमें खाना खिलाया कि हमने अपनी सामान्य खुराक से लगभग दुगुना खाना खाया । उस महिला का अपना निराला व्यक्तित्व था और पूरे सेनी-टोरियम के लोग उसे 'मा' कहकर बुलाते थे । वह वास्तव मे उन सबकी मा ही थी । भले ही कोई आदमी थोडी देर के लिए ही क्यो न आये, वापस जाते समय वह उनकी मधुर स्मृति लेकर ही जायगा । उसके हृदय मे प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्नेह और ममता थी ।

क्रीमिया को अन्तिम नमस्कार कर हम हवाई जहाज से शाम को युक्रेन की राजधानी कीव पहुचे । अगला दिन शहर के पर्यटन से ही शुरू

हुआ। युद्ध के वीरो की मूर्तिया और अज्ञात योद्धाओ के स्मारक हमने देखे। शहर का चक्कर लगाकर हम एक टेकडी पर गये और वहा से एक तरफ कीवशहर का और दूसरी तरफ नीपर नदी का दृश्य देखा। उरीदोल गोर्की का मकबरा भी हमने देखा। मासकवा शहर की स्थापना उन्होने ही की थी। ग्यारहवी सदी मे निर्मित अन्य गिरजे तथा और भी कई स्थान हमने देखे। स्थानीय कोमसोमोल का दफ्तर एक विशाल और सुन्दर चारमजिले भवन मे है।

दोपहर मे हमने वच्चो की रेल देखी। वाद मे ४ ३० बजे विशाल ख्रुश्चोव स्टेडियम देखने गये। ख्रुश्चोव इसी प्रदेश के मूल निवासी हैं। उनके सोवियत रूस के प्रधानमत्री वनने से पहले ही इस स्टेडियम का नाम उनके नाम पर रखा गया था। आज उत्सव का दिन था। पहली वार सोवियत युवक-दिवस मनाया जा रहा था। समारोह अत्यत प्रभावोत्पादक था। वाद मे सहृदयता और प्रेम से लोगो की भीड ने हमे इतनी बुरी तरह घेर लिया कि जिसको हम कभी नही भुला सकते।

दूसरे दिन सुवह हम छोटे वच्चो की कृषि-सस्था देखने गये। हमे इस सस्था के सभी विभागो मे घुमाया गया और इसके कामकाज के बारे मे सारी वातें विस्तारपूर्वक वताई गई। वच्चे खेती के अनुसन्धान का काम यहा सीख रहे थे। प्रत्यक्ष अनुभव और प्रयोग के लिए सस्था के पास एक खेत भी है।

शिष्टमंडल की श्री ख्रुश्चोव से भेंट
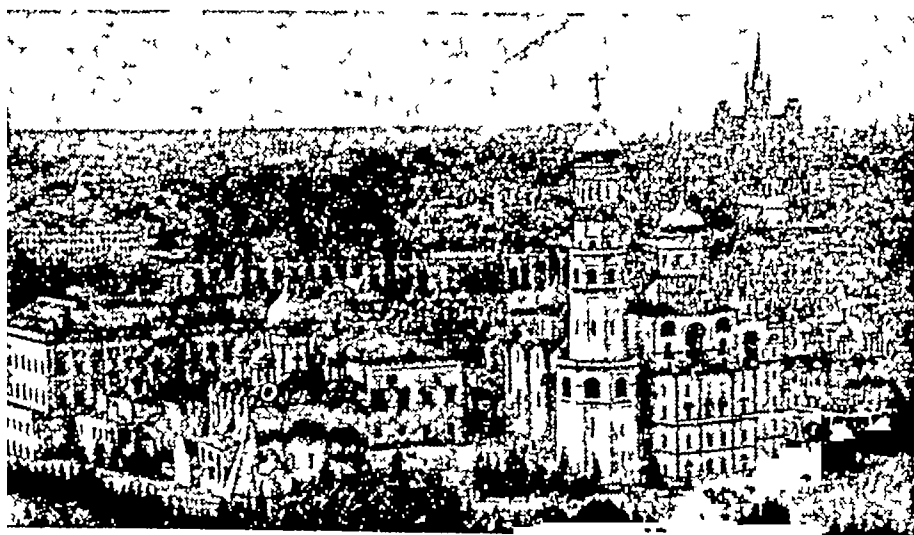
वायर, मास्को
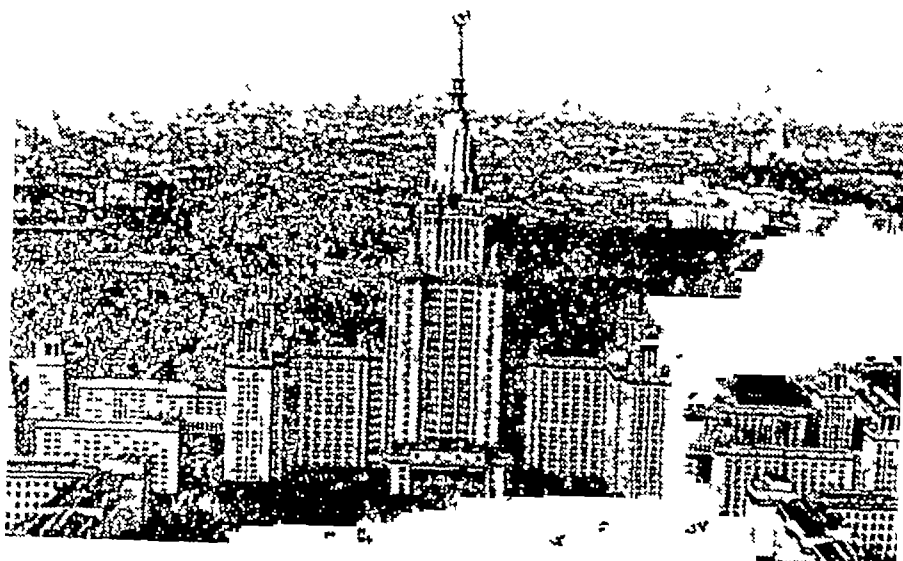
मास्को विश्वविद्यालय

मास्को का लेनिन स्टेडियम
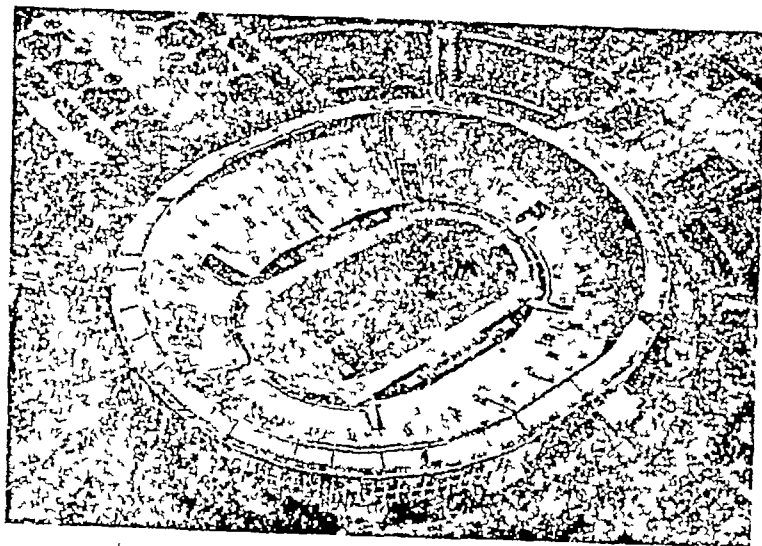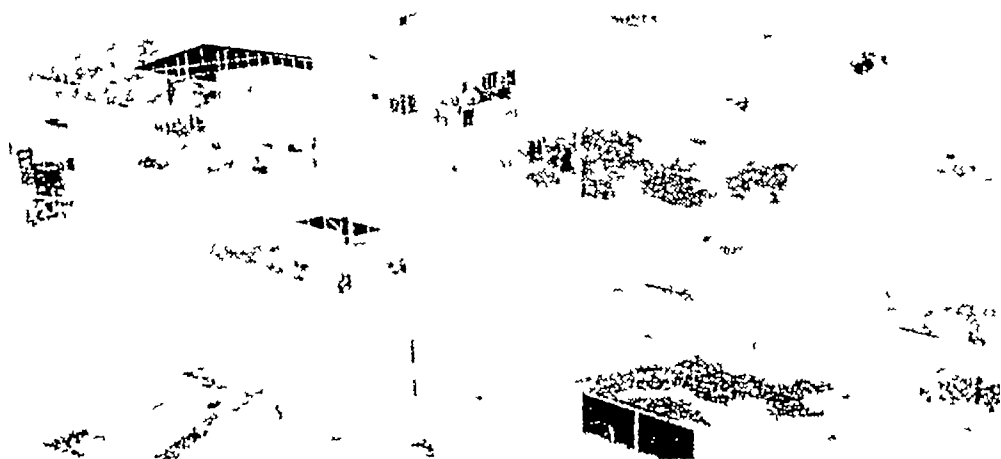
स्थायी कृषि व उद्योग-प्रदर्शनी

।त्रि में क्रमलिन
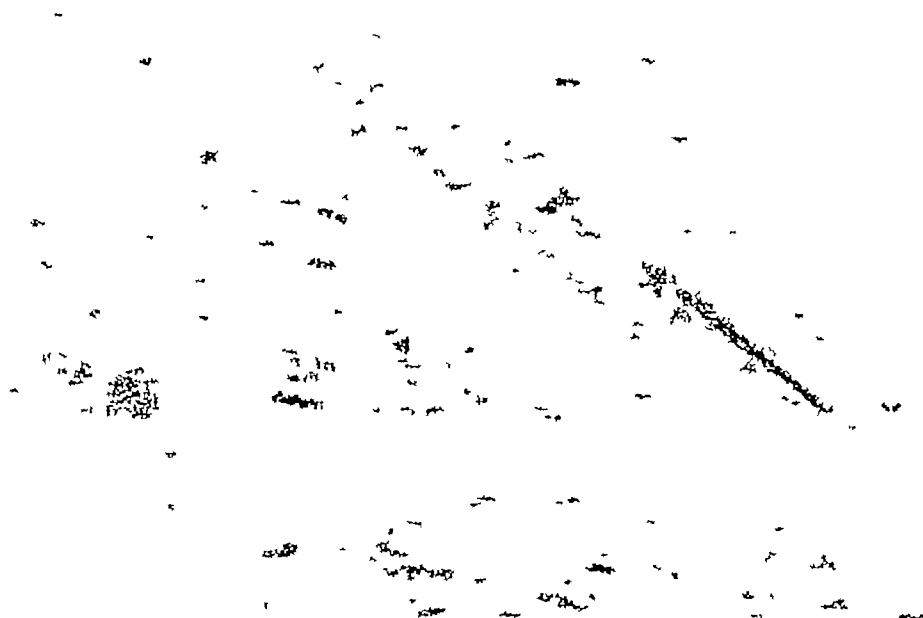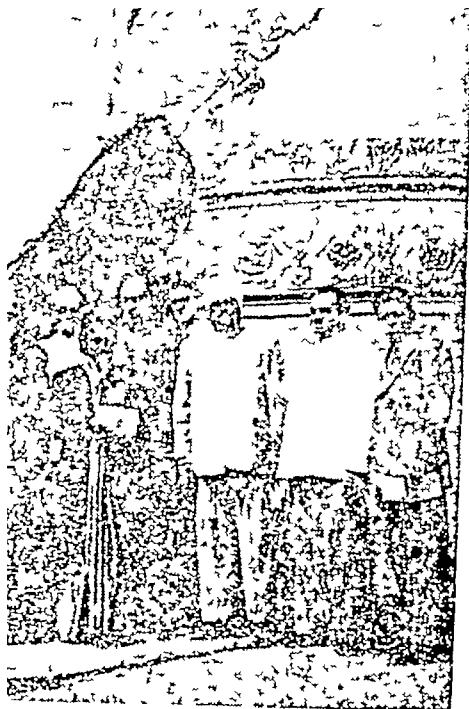
क्रेमलिन का

घंटा

जो कभी बजाया नहीं गया

और

तोप जो कभी दागी नहीं गई

क्रॅसनोडॉन में
'यंग-गार्ड'
का
स्मारक
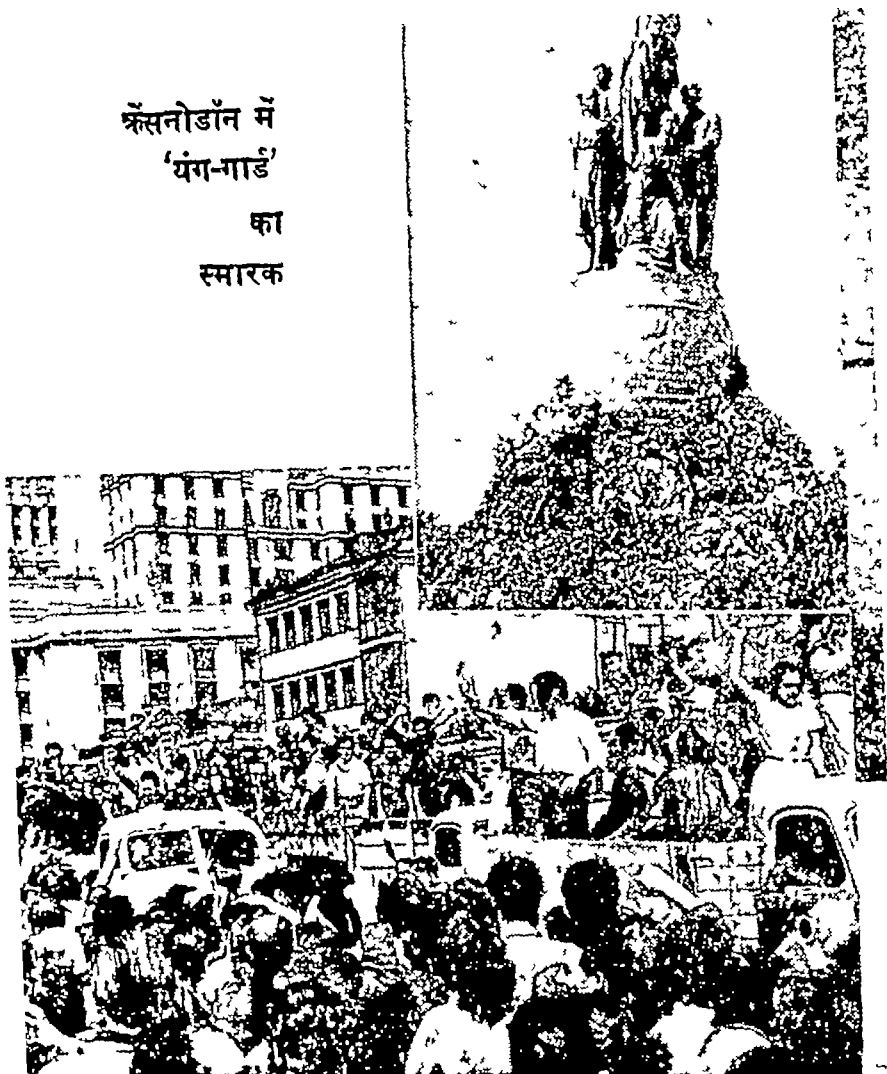
भाग लेनेवाले अतिथियो का स्वागत
नवासी
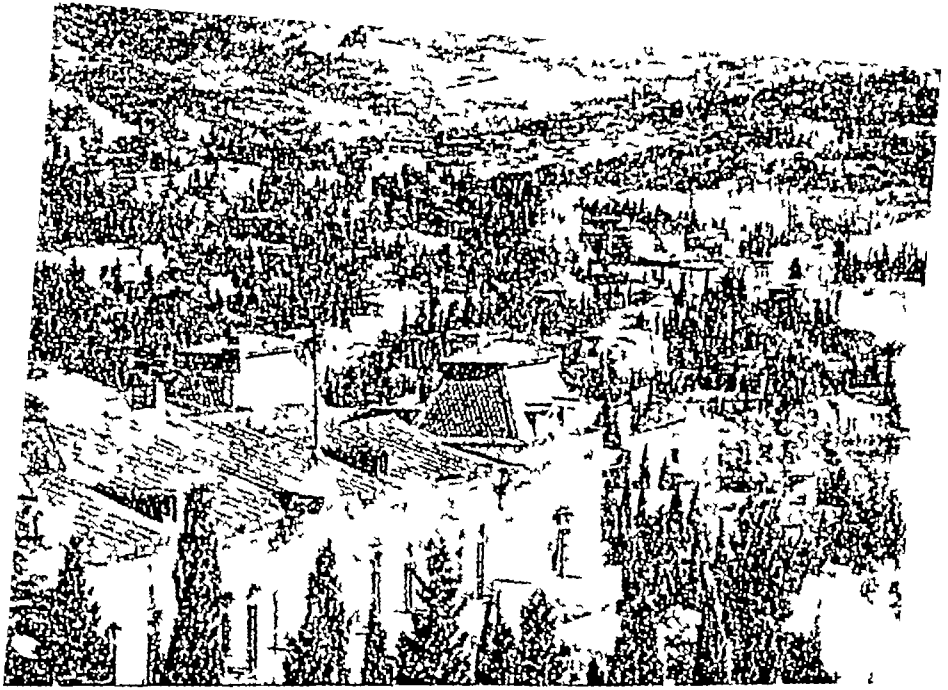
क्रीमिया

जार का शीतकालीन प्रासाद
बीच में अलेग्जेंडर-स्तंभ है

शिष्ट-मह

ण्टा

पर के साथ

फिनिश रेलवे स्टेशन पर
लेनिन का स्मारक

जार के ग्रीष्मकालीन उपवन में शिष्ट-मडल की एक सदस्या
रूसी लडकियो के साथ

उजबेकिस्तान के निवासी

सामूहिक खेत और खेती
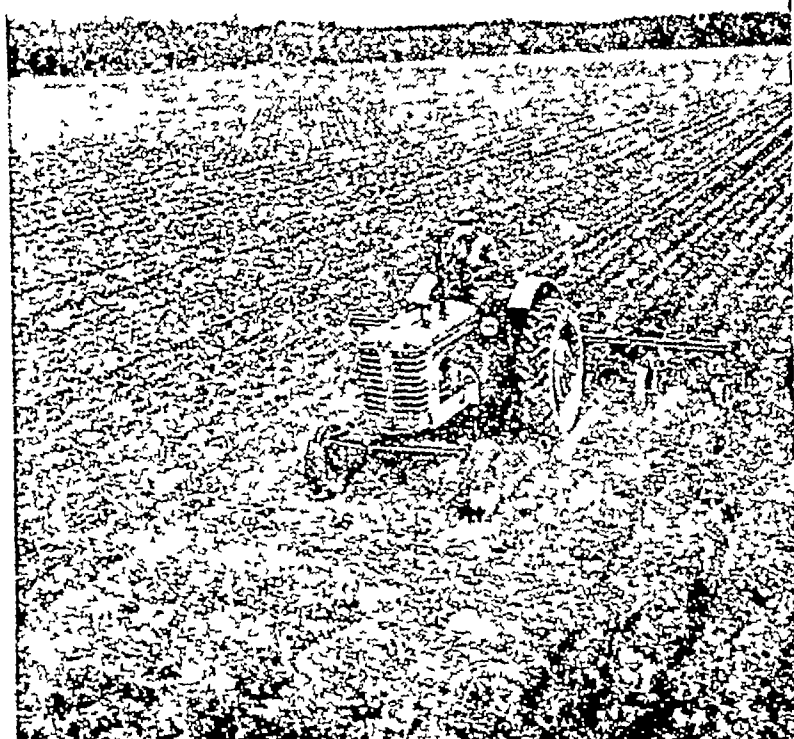
ाया पोलियाना में टालसटाय म्यूजियम

मीत्रो (भूगर्भ-स्थित रेलवे) का प्लेट

: ११ :
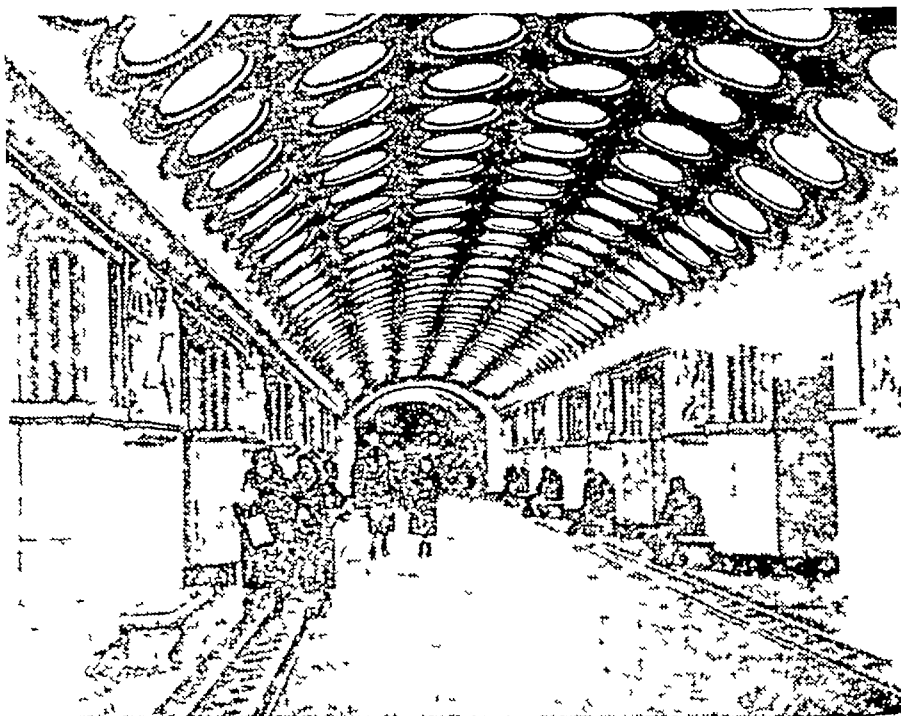
डायरी के पृष्ठ

मास्को, १२ जून, १९५८

हेलसिंकी से हवाई जहाज द्वारा मास्को पहुचा। तीन घण्टे से भी कम समय लगा। रात के ग्यारह बजे थे, परन्तु ऐसा लगता था मानो अभी शाम ही है। बडा सुहावना लग रहा था। सोवियत भूमि पर कदम रखते ही एक प्रकार की कृतार्थता-सी अनुभव हुई। यहा आने के सपने मैं कितने दिनो से देख रहा था। हमारे शिष्टमडल के अन्य सदस्य भारत से सीधे यहा आनेवाले थे। यहा उतरते ही मुझे यह खुशखबरी मिली कि वे भी पन्द्रह मिनट के अन्दर ही यहा पहुच रहे हैं।

ठीक समय पर वे आये। परिचय के बाद मुझसे कहा गया कि रूस की जनता के लिए दो शब्द कहू ताकि वे उसे मास्को रेडियो द्वारा प्रसारित कर सकें। अपने प्रतिनिधि-मडल की तरफ से मैंने हिन्दी मे कहा, "अभी-अभी हम भारत से मास्को पहुचे हैं। भारतीय-युवक-काग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में हम यहा आये हैं। आपके बीच आकर हमे बहुत खुशी हो रही है। लगभग एक महीना हम आपके देश मे रहेंगे। हम यहा नवयुवको से मिलेंगे और बहुत-सी नई-नई बातें देखेंगे और सीखेंगे। हम कोई भी पूर्व-धारणा बनाकर यहा नही आये हैं। हम तो खुला दिल और दिमाग लेकर आये हैं। हर चीज को हम उसके वास्तविक रूप मे देखना और समझना चाहते हैं। यहा ने

लौटकर अपने देश के युवक-युवतियो को उसके सही रूप का वर्णन करना हमारा उद्देश्य है। हम आशा करते है कि हमारी इस यात्रा से रूस और भारत के नवयुवको के बीच मित्रता और भी दृढ होगी।"

प्रारम्भिक शिष्टाचार के बाद बडी-बडी मोटरो मे हम होटल पीकिंग गये, जो शहर के बीच मे है। इसमे काफी देर लगी। रास्ते मे नई-नई चीजें, नये-नये दृश्य, और नये-नये लोगो को देखकर हमे आनन्द हुआ। होटल के कमरे बहुत अच्छे और आरामदेह है।

मास्को, १३ जून

डटकर नाश्ता करने के फौरन बाद हम भारतीय दूतावास गये। हमारे राजदूत[1] श्री के० पी० एस० मेनन साइबेरिया के दौरे पर थे। प्रथम सचिव श्री आहूजा ने बडे प्रेम से हमारा स्वागत किया। कुशल-क्षेम पूछने के बाद हमने उनसे अपनी रूस-यात्रा के कार्यक्रम पर चर्चा की। हमे कहा-कहा जाना चाहिए और अपने कार्यक्रम मे अन्य किन-किन बातो को हमे और शामिल करना चाहिए, इसके बारे मे हमने उनकी सलाह ली।

१२ १५ बजे सोवियत युवक-सगठन-समिति के मुख्य कार्यालय पर हमे ले जाया गया। यह एक बहुत बडी इमारत है, जिसमे अनेक कमरे हैं। सारी इमारत इन्हीके सुपुर्द है। दफ्तर मे काम करनेवाले भी बहुत है। यहापर कामरेड शेवचेन्को के साथ अपनी एक महीने की इस यात्रा के बारे मे हमारी प्रारभिक बातचीत हुई। उन्होने हम-से हमारी विशेष अभिरुचि के बारे मे पूछा और जानना चाहा कि हम कहा-कहा जाना पसन्द करेंगे। हमने उनसे कहा कि मास्को, लेनिनग्राद और स्तालिनग्राद तो हैं ही। इनके अलावा युक्रेन, क्रीमिया और उज़्बेकिस्तान मे भी हम कुछ स्थान देखना चाहेगे। फिर यदि सभव हो तो स्वरद्लोवस्क या मगनीतोगोरस्क प्रदेश के सामूहिक फार्म और

१ आजकल श्री सुविमल दत्त रूस में भारतीय राजदूत हैं।

इस्पात के कारखाने भी देखने की हमारी इच्छा है। हमें पता चला था कि यहा काफी बेकार पडी जमीन को कृषियोग्य बनाया गया है। अलताई और कज्जाकिस्तान में एकदम नई जमीनो के बहुत बडे-बडे चक तोडे गए हैं। इन्हे भी हम देखना चाहते थे। उन लोगो ने भी हमे अपनी तरफ से सुझाया कि उनकी दृष्टि से कहा-कहा जाना और क्या-क्या देखना उपयुक्त और लाभदायक होगा। फिर हमारी जरूरतो और अपेक्षाओ को नोट कर लिया। कार्यक्रम की अतिम तफसीलें तय करने के लिए कल फिर मिलने का निश्चय करके हम रवाना हुए।

दोपहर को खाने के बाद मास्को विश्वविद्यालय देखने गये। यह एक बहुत विशाल सस्था है। बहुत बारीकी से हमने इसकी प्रवृत्तिया देखी। विद्यार्थी-सघ ने हमारे स्वागत मे एक छोटा-सा समारोह आयोजित किया था।

मास्को, १४ जून

सुबह जमीन के अदर चलनेवाली रेल 'मीत्रो' देखने गये। यह वास्तव मे रूस की एक शानदार उपलब्धि है। रेलवे के डायरेक्टर ने हमे 'मीत्रो' की विस्तृत जानकारी दी।

१२ ३० बजे हम 'इस्टीट्यूट ऑव ओरिएटल स्टडीज़' देखने गये। भारतीय साहित्यिको व राजनैतिक विचारो पर यहा अच्छा काम हो रहा है। किन्तु गाधीजी के विचारो के प्रति उपेक्षा का भाव देखकर आश्चर्य होता है।

४ २० पर अपनी यात्रा के कार्यक्रम को अतिम रूप देने के लिए हम फिर युवक-समिति के दफ्तर मे गये। उन्होने एक कार्यक्रम तैयार कर लिया था। कुल मिलाकर वह अच्छा था, यद्यपि ऐसे कुछ स्थान उसमे नही थे, जहा हम जाना चाहते थे। उन्होने यह भी स्पष्ट कर दिया कि हम जहा-जहां भी जाना चाहे, बिना किसी प्रतिबध के जा सकते हैं। उसमें कोई रुकावट नही है।

हर जगह का कार्यक्रम निश्चित करते समय उन्होने स्थानीय लोगो को सूचना दे दी कि हमे युवको की प्रवृत्तिया खासतौर पर दिखाई जाय, युवक-नेताओ से मिलाया जाय, स्कूलो और छात्रालयो मे ले जाया जाय, उनके खेल वगैरह दिखाये जाय और यह भी दिखाया जाय कि युवक अपनी फुरसत के समय का उपयोग किस तरह करते हैं। सुन्दर प्राकृतिक स्थानो की सैर तथा नृत्य, नाटक आदि का प्रदर्शन भी हमारे कार्यक्रम मे जोडा गया है।

मास्को, १५ जून

सुवह साढे दस वजे शिष्टमडल के अन्य सदस्य यास्नाया पोल्याना देखने गये। दूसरे काम मे व्यस्त रहने के कारण मैं नही जा पाया। लौटकर उन्होने वताया कि टाल्सटाय के निवास-स्थान को देखकर वे वहुत प्रभावित हुए।

शाम को हमारे भारतीय मित्र श्री जायसवाल आ गये। वह मास्को रेडियो के हिन्दी-विभाग मे काम करते है। उनके साथ मैं मास्को के सबसे बडे वस्तु-भडार 'गूम' पर गया।

नि सन्देह यह भडार वहुत वडा है। लोगो की भीड लगी हुई थी। परन्तु यहा अधिकाशत केवल डबल रोटी, मक्खन, दूध, मछली, गोश्त जैसी रोजमर्रा की जरूरी चीजें ही थी। दूसरे कामकाज की चीजें भी थी, परन्तु बहुत अधिक नही। इनकी किस्में भी अधिक नहीं थी। कीमतें ऊची मालूम हुई। विजली का सामान अपेक्षाकृत सस्ता है। मैंने एक विजली का ग्रामोफोन १६५ रुपये मे खरीदा, जिसके अन्दर लाउडस्पीकर भी लगा है। आवाज को कम-ज्यादा करने की भी सुविधा उसमे है। कीमत को देखते हुए अच्छी चीज है। टेलीविजन सेट भी ८०० रूवल मे सस्ता ही है। ग्रामोफोन के रेकार्ड भी महगे नही हैं। हमे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि देर तक वजनेवाले जो रेकार्ड भारत मे ३५ से ४० रुपये मे मिलते हैं, वे यहा पाच रूवल

में मिल रहे है। मामूली रेकार्ड की कीमत भी उतनी ही है। "टके सेर भाजी टके सेर खाजा" वाला हाल है।

रात को भोजन हमने हमारे प्रसिद्ध नाटककार व कवि श्री रामकुमार वर्मा के यहा किया। फिलहाल भारत सरकार ने इनकी सेवाए सोवियत विश्वविद्यालय को दे रक्खी है। यहापर वह एक ऊचे पद पर है और इनका बहुत ख्याल रखा जाता है।

भोजन के समय वहा मास्को मे रहनेवाले कुछ और भारतीय भी थे। इनमे से कुछ विश्वविद्यालय मे पढ रहे हैं। हम तो अभी-अभी रूस आये हैं, इसलिए हमें यहा के जीवन के बारे मे अधिक-से-अधिक जानने की उत्सुकता है। परन्तु हमारे ये मित्र सोवियत जीवन के बारे मे वास्तविक जानकारी देने की बजाय उसके विषय मे अपने-अपने विचार हमे आग्रहपूर्वक सुनाते जा रहे थे। डा० वर्मा को भी यह अच्छा नही लगा। इसलिए उन्होने तो आगे चलकर इस बातचीत मे भाग ही नही लिया।

मास्को, १६ जून

सुबह हम यहा का प्रख्यात लेनिन-स्टेडियम देखने गये। बहुत बड़ी जगह है। एक लाख आदमियो के बैठने की यहा व्यवस्था है। दिन मे कुछ दुकानो पर गये। दोपहर बाद कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति के दफ्तर पर गये और रात को एक नृत्य-समारोह देखा।

मास्को, १७ जून

सुबह भारत-रूस-मैत्री-सघ ने हमारे लिए एक स्वागत-समारोह का आयोजन किया था। लोग बहुत नही थे, परन्तु भारत के सास्कृतिक जीवन मे दिलचस्पी रखनेवाले, प्रमुख वैज्ञानिक, शिक्षा-शास्त्री, डाक्टर, खेती और खेलो मे रुचि रखनेवाले खास-खास लोग उनमें थे। भारत-सोवियत फिल्म 'परदेसी' के निर्माता और सचालक, मास्को

फिल्म के उपसचालक, टाल्सटाय म्यूज़ियम के डायरेक्टर कामरेड पोपावकिन भी थे।

इस सस्था की स्थापना इसी वर्ष हुई है। इसका उद्देश्य है हमारे दोनो देशो के बीच मैत्री सम्बन्धो को दृढ करना। इसकी मुख्य प्रवृत्ति है सोवियत रूस के बुद्धिजीवियो और मास्को मे रहनेवाले अथवा भारत से रूस की यात्रा पर आनेवाले भारतीयो के बीच सभाओ के द्वारा सपर्क और मेल-जोल का प्रवन्ध करना।

कुशल-क्षेम पूछने के शिष्टाचार के बाद हम छोटे-छोटे समूहो मे बट गये, ताकि आपस मे व्यक्तिगत तौर पर नि सकोच बातचीत हो सके। इस मित्रता और आजादी के वातावरण मे खुले दिल से बातचीत करने मे सबको बडा आनन्द आया। हमने अपने मेजबानो को विनोबाजी के भूदान-आन्दोलन का साहित्य भेंट किया। भारत से पुस्तकें तथा अन्य प्रकार के साहित्य पढने की उनमे बडी उत्सुकता है। शाम को हम उद्योग व कृषि-प्रदर्शनी देखने गये। 'स्पुतनिक-मडप' और शाति के लिए अणु-शक्ति का उपयोग दिखानेवाले मडप ने हमें विशेष तौर पर आकर्षित किया।

मास्को, १८ जून

सुबह क्रेमलिन देखने गये। कितनी महत्वपूर्ण जगह है यह! हम तो रोमाचित हो उठे।

शाम को हमे कठपुतलियो का एक सुन्दर खेल दिखाया गया। बडा मनोरजक था। खेल को वास्तविक बनाने के लिए बडी कल्पना और परिश्रम से काम लिया गया था।

मास्को, १९ जून

सुबह हमे 'यग पायनियर्स' के केन्द्रीय कार्यालय पर ले जाया गया। भारत का यह पहला प्रतिनिधि-मडल था, जो इस दफ्तर को देख रहा था।

लेनिन पुस्तकालय और आर्ट गैलेरी भी हमने जल्दी-जल्दी मे

देखे।

आज रात को हमे मास्को छोडकर अन्य स्थानो की अपनी यात्रा के लिए प्रस्थान करना है। मास्को के पीकिंग होटल का हमारा निवास बड़ा अच्छा रहा। यहा सब तरह का आराम है। आठ दिन रहे। इस इमारत मे बारह मजिलें हैं, जिनमे २१० कमरे है। दो आदमियो के रहने के कमरो का किराया ४० से लेकर ७५ रूबल प्रतिदिन है। इसमे भोजन-खर्च शामिल नही है, जो साधारणत ८० से १०० रूबल दैनिक हो जाता है। एक बात खास तौर पर देखी गई कि होटल के सारे 'लिफ्ट' स्त्रिया ही चलाती हैं।

होटल मे कई सुविधाए व सेवाए उपलब्ध तो है, किन्तु सतोष-जनक नही है। दरअसल यहा जूते पालिश करनेवाले से लेकर मैनेजर तक सब लोग सरकारी मुलाजिम है। इसलिए वे कुछ लापरवाह है और उनसे अधिक सहायता की अपेक्षा नही रखी जा सकती। लिफ्ट चलानेवाली स्त्रिया कठोर और हृष्ट-पुष्ट है। एक बार जब हम ऊपर की मजिल पर जाने के लिए लिफ्ट पर चढे तो मैने अपनी मजिल का बटन दबाना चाहा, क्योकि लिफ्टवाली महिला अग्रेजी नही जानती थी और हम अपनी मजिल की सख्या उसे नही बता सकते थे। इसपर उसने असभ्यता से मेरे हाथ को झटककर बटन से अलग हटा दिया, मानो मै कोई अनुचित कार्य करने जा रहा था अथवा बटन छूने से मुझे बिजली का झटका लग जाता। पर झटका तो मुझे उसके छूने से लग ही गया।

वर्दी पहने पुलिस के सिपाही हमेशा होटल पर रहते हैं। सादे कपडो मे खुफिया पुलिसवाले भी यहापर है। बल्कि हमे तो बताय गया कि होटल मे जितने स्त्री-पुरुष काम करते है, सब यहा ठहरने-वालो के विषय मे पुलिस को सूचना देते रहते है। अत अपने व्यवहार व बातचीत के सम्बन्ध मे हमे सतर्क कर दिया गया था। मैं नही कह सकता कि यह बात कहातक सच है। हा, एक दिन शाम को हमने

देखा कि दो व्यक्ति लिफ्ट के द्वारा ऊपर जाना चाहते थे। पता नही क्यो, लिफ्टवाली महिला ने पुलिसवालो को बुलाया और उन दोनो को लिफ्ट मे से जबर्दस्ती उतरवाकर होटल के बाहर निकलवा दिया।

होटल मे एक किताबो का स्टाल भी है, लेकिन उसमे अधिक पुस्तकें नही हैं और जो है भी, वे अधिक आकर्षक नही है। उनमे से कुछ तो घटिया कागज़ पर छपी हुई है। पत्रिकाए जरूर अच्छी लगी। जो स्त्री उस स्टाल पर थी,उसे यह परवाह ही नही थी कि कोई पुस्तकें खरीदता है या नही। उसका व्यवहार भी बहुत रूखा और उदासीनता का था।

एक जगह बैरा को मैंने आधा रूबल की 'टिप' दी। वह अकड गया कि लेगा तो दो रूबल ही लेगा। उसी समय कुछ व्यक्ति अन्दर आये और बैरा ने फुर्ती से 'टिप' छिपाली। एक दिन पहले एक साथी ने अन्य बैरा को एक रूबल की 'टिप' दी थी, जो उसने बडी खुशी से लेली थी।

होटल मे एक महिला बहुत सहायक व सहृदय सिद्ध हुई। उसे पता था कि प्रतिनिधि-मडल मे हम तीन सदस्य कट्टर शाकाहारी हैं। अत जब भी हम खाना खाने जाते, वह इस बात का विशेष ध्यान रखती है कि हमे अपनी रुचि की चीजें ही मिलें। लेकिन यह महिला तो इस होटल मे एक अपवाद ही है।

लेनिनग्राद, २० जून

कल रात को हमारा प्रतिनिधि-मण्डल मास्को-हेलसिंकी एक्सप्रेस द्वारा लेनिनग्राद के लिए रवाना हुआ। गाडी अच्छी और आरामदेह थी। कितना अच्छा होता यदि यह यात्रा हमने दिन मे की होती ताकि ग्राम्य प्रदेश की भी कुछ झाकी देखने को मिल जाती।

हमारे इस पूरे दौरे का प्रबन्ध कामरेड ग्यानो शिल्याएव के अधीन है। कामरेड मिशा हमारे हिन्दी दुभाषिया हैं।

आज सुबह ९ बजे हम लेनिनग्राद पहुचे। मास्को की अपेक्षा यह शहर अच्छा लगता है। दोपहर को हम लेनिनग्राद-सोवियत-भवन मे गये। लेनिनग्राद-सोवियत को हम लेनिनग्राद-नगर-निगम भी कह सकते हैं। इस नगर की कार्य-प्रणाली का हमने खासा अध्ययन किया और काफी जानकारी इकट्ठी की। हमारे स्वागत मे आयोजित एक समारोह में मैंने भारत के नवयुवको के स्नेह के प्रतीक के रूप में लेनिन-ग्राद के नवयुवको को ताजमहल की एक प्रतिकृति भेंट की। लोगो ने उसे बहुत पसद किया।

लेनिनग्राद, २१ जून

आज सुबह हमने लेनिनग्राद विश्वविद्यालय की 'ओरिएटल प्राविधि' देखी और दोपहर को पुराने जारो का शीतकालीन प्रासाद 'हरमिताज' देखा।

रात को हम एक आपेरा देखने गये, लेकिन चूकि हमें जल्दी ही लौटना था, हम उसे पूरा नही देख पाये।

लेनिनग्राद, २२ जून

हम रारजिफ से लौट रहे थे। रास्ते में जगलो में तथा समुद्र के किनारे हमे बहुत-से छोटे-छोटे मकान दिखे। पूछने पर हमे बताया गया कि वे खास-खास लोगो के व्यक्तिगत ग्रीष्म-कालीन आवास है। अक्सर वे हफ्ते के अन्त मे यहा आकर छुट्टी बिताते है। आस-पास सब्जी, और फल-फूल आदि उगाने के लिए थोडी-थोडी जमीन भी है। कुछ लोग तो यहा हमेशा ही रहते है। इजीनियर, वैज्ञानिक, साहित्यिक और दूसरे लोग, जिनको ऊचे वेतन मिलते है, वे ही ऐसे मकान बनवा सकते है। ऐसे व्यक्ति बने-बनाये मकान खरीद भी सकते है। इसके लिए सरकार उन्हे कर्ज भी देती है।

लेनिनग्राद का जीवन मास्को की अपेक्षा अधिक सास्कृतिक और

आराम का मालूम हुआ। मैंने जानना चाहा कि इन दो शहरों के जीवन मे इतना फर्क क्यो है। मुझे बताया गया कि लेनिनग्राद मे अभी-तक कुछ पुराने सस्कारशील परिवार हैं। उनका असर समाज पर पडता ही है। इसीलिए लेनिनग्राद सस्कृति का केन्द्र बना हुआ है। पता नही जिन लोगो ने यह बात मुझे कही, वे अपने शब्दो का अर्थ ठीक तरह से समझकर कह रहे थे या नही। परन्तु मुझे यह जरूर लगा कि वहा के सामाजिक जीवन मे जो क्रातिकारी परिवर्तन किये गए, वे सब-के-सब अच्छे ही हैं, ऐसी धारणा अब बदलती जा रही है। अस्तोन्मुख समाज मे भी कुछ अच्छी चीजें बची रह जाती है। बेशक, समाज की प्रगति मे जो चीजें बाधक हैं, उन्हें अवश्य बदलना चाहिए। परन्तु पुरानी बातें सब खराब हैं, ऐसा समझकर उन सबको यदि अस्त-व्यस्त कर दिया जाता है और उनके स्थान पर वैसी ही अच्छी नई चीजें लाने का यत्न नही किया जाता, तो समाज मे उतनी जगह सूनी रह जाती है। पुराने रस्म-रिवाज और तौर-तरीके समाज के जीवनतत्व को बनाये रखने मे सहायक होते है। सोवियत समाज आज भी एक ऐसे दौर से गुजर रहा है, जिसमे समाज के अधिकाश सास्कृतिक मूल्य नष्ट हो चुके है और उनके स्थान पर दूसरे उतने ही उपयोगी मूल्यो की स्थापना अभी नही हो पाई है। मैंने देखा कि इस कमी को वहा के लोग महसूस करने लगे है और उसकी पूर्ति करने का यत्न भी कर रहे है।

क्रान्ति के बाद बार-बार शुद्ध वातावरण बनाने के नाम पर कितनी ही हत्याए वहा हुई, जिसके कारण वहा की जनता का अतीत से नाता टूट-सा गया है। इसीलिए वहा का जीवन बडा रूखा, कष्टमय और कठोर हो गया है। मास्को मे यह बात साफ-साफ दिख जाती है, क्योकि वह रूस की राजधानी और पार्टी की हलचलो का केन्द्र है। शायद इसी कारण वहा के वातावरण मे केवल सुरुचि और सस्कारो की ही कमी नही है, बल्कि लोगो के चेहरो पर कोमलता और मधुरता की भी कमी दीख पड़ती है। लेनिनग्राद मे लोगो के पास

दी जाती है। फैक्टरी की ओर से शिक्षा भी मु.. दी जाती है। मजदूर और उनके बच्चे अलग-अलग ग्रीष्मकालीन शिविरो मे जा सकते है। आठ वर्ष तक के बच्चे किंडरगार्टन विद्यालयो में जाते है। एक छोटा क्रीडागन भी उनके पास है और वे अब एक नये भवन का निर्माण करने जा रहे है, जिसका नाम होगा 'सस्कृति-भवन'। इस भवन पर लगभग १२० लाख रूबल लागत आयगी। युवक मजदूर अपने खाली समय मे इस भवन के निर्माण मे सहायता करेंगे।

फैक्टरी की ओर से रहने की जो सुविधा दी जाती है, वह सारे मजदूरो को उपलब्ध नही है। लेकिन उनके लिए अधिकाधिक मकान बनाये जा रहे है। हमे बताया गया कि गत महायुद्ध मे लेनिनग्राद मे रहने की लगभग ४० प्रतिशत जगह नष्ट हो गई थी और इसीलिए वहा मकानो की इतनी कमी है। लगभग एक-तिहाई मजदूरो को फैक्टरी की ओर से मकान मिल रहे है। काम करनेवाले श्रमिको मे लगभग आधी स्त्रिया थी।

जब हमने यह कारखाना भीतर से देखा तो सच पूछिये तो मुझपर कोई बहुत अच्छा असर नही पडा। प्रबन्ध अच्छा नही था, तमाम चीजे अस्त-व्यस्त पडी थी। गन्दगी और कचरा भी काफी था। जब मैंने सुना कि इस कारखाने को उत्पादन-कुशलता पर 'आर्डर ऑव लेनिन' पुरस्कार मिला है तो मुझे आश्चर्य हुआ। मुझे लगा कि कुल मिलाकर कारखाने का सचालन-प्रबन्ध अच्छी तरह नही हो रहा है और उसमे जरूरत से अधिक मजदूर तथा कर्मचारी काम कर रहे है।

हममे से अधिकाश तो होटल लौट गये। दो सदस्य कारखाने के मजदूरो के साथ कैंटीन में खाना खाने के लिए पीछे रह गये। उन्होंने हमे बताया कि वहा उन्होंने औरतो को बहुत कठिन परिश्रम करते हुए पाया। साठ वर्ष की एक वृद्धा भी काम कर रही थी, यद्यपि हमे कहा गया था कि पुरुषो को ५६ वर्ष की उम्र मे और स्त्रियो को ५० वर्ष की उम्र मे काम से मुक्त कर दिया जाता है। मजदूर यह जानने के लिए बड़े

लेनिनग्राद, २३ जून

लेनिनग्राद मे मशीनो के पुर्जे बनाने का एक कारखाना है, जिसे लेनिन का ही नाम दिया गया है। एक दिन सुबह-ही-सुबह हम उसे देखने गये। यह सौ वर्ष पुराना है और सोवियत-सघ के सबसे पुराने कार-खानो मे से एक है। शुरू-शुरू मे इसमे कच्चा लोहा वनता था। उसके बाद यहा जहाज बनने लगे और अब रेलो के इजिन, टरबाइन और रासायनिक तथा धातुओ-सम्बन्धी कारखानो के लिए और निर्यात के लिए दूसरी मशीनें भी बनती हैं। हमारे भिलाई के कारखानो के लिए २३ 'कम्प्रेसर' और 'टरबाइन' बनाने के लिए इसे आर्डर दिया गया है, जिनमे से २१ तो बनाकर भेज भी दिये गए है। शेष दो तैयार हो रहे हैं।

जब हमने उस फैक्टरी के 'कोमसोमोल' के मत्री से कुछ प्रश्न पूछे तो वह कोई सतोषजनक उत्तर नही दे सके। यह देखकर हमे बहुत आश्चर्य हुआ। उनकी ओर से व्यवस्थापको ने ही उत्तर दिये। फैक्टरी मे कुल मिलाकर ६००० मजदूर काम करते थे। उनमे से लगभग ४० प्रतिशत लोग ३० वर्ष से कम उम्र के थे। पारिश्रमिक वरिष्ठता अथवा उम्र के अनुसार नही, बल्कि कार्य करने की क्षमता के अनुसार दिया जाता था। हमे बताया गया कि फैक्टरी मे काम करनेवालो का पारिश्रमिक औसतन ११८० रूबल था। न्यूनतम मजदूरी ६०० से ६५० रूबल थी, अधिकतम मजदूरी की सही दर हमे नही बताई गई। मजदूरो को पहले दो वर्ष प्रशिक्षण-सस्थाओ मे बिताने पडते हैं। ये प्रशिक्षण-सस्थाए फैक्टरी के ही अतर्गत चलती है और यहा मजदूरो को मुफ्त खाना-कपडा दिया जाता है। सामान्यत १६ वर्ष की उम्र से ही लडके इन प्रशिक्षण-विद्यालयो मे भर्ती हो जाते हैं। उच्च तकनीकी शिक्षा पाने के लिए वे शाम की कक्षाओ मे जाते है। जो विद्यार्थी काम करते हुए अपनी पढाई जारी रखना चाहते है, उन्हे छुट्टी आदि की सब सुविधाए

दी जाती है। फैक्टरी की ओर से शिक्षा भी [illegible] दी जाती है। मजदूर और उनके बच्चे अलग-अलग ग्रीष्मकालीन शिविरो में जा सकते है। आठ वर्ष तक के बच्चे किंडरगार्टन विद्यालयो मे जाते है। एक छोटा क्रीडागन भी उनके पास है और वे अब एक नये भवन का निर्माण करने जा रहे है, जिसका नाम होगा 'सस्कृति-भवन'। इस भवन पर लगभग १२० लाख रूबल लागत आयगी। युवक मजदूर अपने खाली समय मे इस भवन के निर्माण में सहायता करेंगे।

फैक्टरी की ओर से रहने की जो सुविधा दी जाती है, वह सारे मजदूरो को उपलब्ध नही है। लेकिन उनके लिए अधिकाधिक मकान बनाये जा रहे है। हमे बताया गया कि गत महायुद्ध मे लेनिनग्राद मे रहने की लगभग ४० प्रतिशत जगह नष्ट हो गई थी और इसीलिए वहा मकानो की इतनी कमी है। लगभग एक-तिहाई मजदूरो को फैक्टरी की ओर से मकान मिल रहे हैं। काम करनेवाले श्रमिको मे लगभग आधी स्त्रिया थी।

जब हमने यह कारखाना भीतर से देखा तो सच पूछिये तो मुझ-पर कोई बहुत अच्छा असर नही पडा। प्रबन्ध अच्छा नही था, तमाम चीजें अस्त-व्यस्त पडी थी। गन्दगी और कचरा भी काफी था। जब मैंने सुना कि इस कारखाने को उत्पादन-कुशलता पर 'आर्डर ऑव लेनिन' पुरस्कार मिला है तो मुझे आश्चर्य हुआ। मुझे लगा कि कुल मिला-कर कारखाने का सचालन-प्रबन्ध अच्छी तरह नही हो रहा है और उसमे जरूरत से अधिक मजदूर तथा कर्मचारी काम कर रहे है।

हममे से अधिकाश तो होटल लौट गये। दो सदस्य कारखाने के मजदूरो के साथ कैंटीन मे खाना खाने के लिए पीछे रह गये। उन्होने हमे बताया कि वहा उन्होने औरतो का बहुत कठिन परिश्रम करते हुए पाया। साठ वर्ष की एक वृद्धा भी काम कर रही थी, यद्यपि हमे कहा गया था कि पुरुषो को ५६ वर्ष की उम्र मे और स्त्रियो को ५० वर्ष की उम्र में काम से मुक्त कर दिया जाता है। मजदूर यह जानने के लिए बड़े

उत्सुक थे कि भारत मे मजदूरो की स्थिति क्या है तथा उन्हे क्या मजदूरी दी जाती है ? उन्होने यह भी पूछा कि क्या स्त्रिया भी कारखानो मे काम करती है ? भारत मे उच्चतम और निम्नतम वेतनो मे कितना अतर है ? बढते हुए आयकर, उच्चतम आयपर लगाया गया अतिरिक्त-कर, मृत्यु-कर, व्यय-कर तथा सपत्ति-कर की कल्पना भी उन्हे अच्छी लगी ।

याल्टा, २४ जून

लेनिनग्राद मे चार दिन हमने बडे अच्छे बिताये और फिर क्रीमिया के लिए हवाई जहाज से निकले । सफर लम्बा और थकानेवाला रहा, शायद इस कारण कि हमारा हवाई जहाज मिन्स्क, कीव और नेप्रोपेत्रोवस्क रुकता हुआ गया था ।

सिफरोपोल हवाई अड्डे से हमे चार बडी-बडी कारो मे सीधे याल्टा ले जाया गया । समुद्र-तट पर यह क्रीमिया का प्रसिद्ध स्वास्थ्य-लाभ का स्थान है । रास्ते मे हम लोग आलूस्था पायनियर कैंप पर रुके । यहा पर यग पायनियर 'कैंप फायर' के लिए इकट्ठा हुए थे । इससे हमे छोटे-छोटे खुशमिजाज बच्चो के साथ मिलने और यात्रा की थकावट मिटाने का अवसर मिल गया । वहा से रवाना होकर लगभग आधी रात को हम याल्टा पहुचे ।

याल्टा, २५ जून

कल की यात्रा मे काफी थकावट आ गई थी । काले समुद्र के किनारे यह स्थान बडा सुन्दर व स्वास्थ्यकर है । हमे रात को काफी विश्रान्ति मिली । नीद बहुत अच्छी आई । नाश्ता करके लगभग ग्यारह बजे हमे आरटेक पायानियर कैंप पर लेजाया गया । यहा सब बच्चो ने हर्ष-ध्वनि के साथ हमारा स्वागत किया । फूलो और गुलदस्तो की हमपर खूब बौछारें हुईं । लगभग पूरा दिन इस कैंप मे रहे ।

शाम को 'बोटेनिकल गार्डन' देखने गये। यहा के लोग भारतीयो और हमारे प्रधानमत्री को बहुत चाहते है। वे हमसे बाते करने को बहुत उत्सुक रहते हैं। भाषा की कठिनाई उनकी इस उत्सुकता को नही दबा पाती। शाम को खाने के बाद हम एक मनोरजन कार्यक्रम देखने गये। सारा हाल झाड-फानूसो और गुब्बारो से सजा हुआ था। जैसे ही प्रबन्धको ने हमें देखा, वे हमे मच पर ले गये और एक-एक करके हमारा परिचय कराया गया। लोगो ने तालिया बजाकर, फूलो के गुलदस्ते भेंट करके हमारा स्वागत किया। उपस्थित महिलाओ ने हमसे नाच करने की ज़िद की। हममे से कोई नृत्य करना नही जानता था। लेकिन सारा वातावरण इतना खुश और आनन्दमय था कि जब महिलाओ ने हमे नाच करने के लिए विवश कर दिया तो हम एक-एक करके उठे और उनके साथ नाचने लगे। यह पूरी शाम बहुत आनन्द से बीती।

याल्टा, २७ जून

क्रीमिया मे यह हमारी अन्तिम रात्रि है। काले समुद्र के किनारे ये तमाम दिन बहुत सुन्दर बीते। मोटरबोट से मिशोव की यात्रा, ब्रनसोस्की महल, याल्टा कान्फ्रेंस का स्थान अलूपका और ग्यानो, मिशा, एरिक व नाज़ा का साथ—सबकुछ बहुत सुखद रहा। अनेक स्थानो की सैर की और खूब समुद्र-स्नान किया। अब आगे के लम्बे सफर के लिए फिर तरोताजा हो गये। सचमुच इस यात्रा की योजना बडे अच्छे समय पर की गई। दो हफ्ते के व्यस्त कार्यक्रम के बाद हम यहा आ गये। यहा खूब विश्राम मिला, जिसकी जरूरत भी थी। अब हम अपने शेष कार्यक्रम के लिए तैयार हो गये है—नये उत्साह और उमगो को लेकर।

मैंने अपने साथियो से कहा कि हमारी यात्रा का दूसरा भाग समाप्त हो गया और अब हम तीसरे भाग में प्रवेश कर रहे हैं। अबतक हमने

अपने-आपको कठोर अनुशासन और नियत्रण मे रखा है, हम बडे सयम से रहे, क्योकि हम स्थानीय परिस्थितियों का, जनता का और युवको के नेताओ का अध्ययन करना चाहते थे। हम जानना चाहते थे कि ये लोग कैसे हैं। किन्तु अब हम अधिक आजादी से रह सकते है। दिल पर का बोझ हटा दें और लोगो के साथ जितना घुल-मिल सकें मिलें और नये-नये मित्र बनावें। हम कल सुबह युक्रेन की राजधानी कीव के लिए रवाना होनेवाले हैं।

कीव, २८ जून

सुबह पडौस के एक कैंप से यग पायनियर्स हमसे मिलने और क्रीमिया से विदा देने के लिए आ गये। हमे इसकी कोई पूर्व-सूचना नही थी। नौ बजे हम अपनी लम्बी यात्रा पर रवाना हो गये। बीच मे अलूस्था मे आखिरी बार समुद्र-स्नान करने के लिए ज़रा रुके। समुद्र यही तक था। सिफरोपोल जाने के लिए यहा से चढाई शुरू होती है।

भोजन करके थोडी ही देर बाद हवाई जहाज से हमे कीव के लिए रवाना होना था। एरिक और नाजा के साथ ये चार दिन बडे अच्छे बीते। औरो की अपेक्षा ये दोनो बिल्कुल भिन्न थे। हमने इन्हे तथा दूसरे स्थानीय मित्रो को स्कार्फ और अन्य स्मृति-चिन्ह भेंट किये और क्रीमिया को अन्तिम नमस्कार किया। यह स्थान हमे बहुत अच्छा लगा। यह देखने में भी सुन्दर है और इसकी आबोहवा तथा लोग भी अच्छे है। हमारे साथ उनका बडा स्नेह हो गया था। सिफ-रोपोल से हम ३ ५५ पर हवाई जहाज से रवाना हुए और शाम को ६ ४५ पर कीव आ गये। रास्ते मे हमारा हवाई जहाज थोडी देर के लिए निकोलाई मे रुका।

कीव के हवाई अड्डे पर हमें कहा गया कि स्थानीय रेडियो के लिए हम कुछ कहें। वहापर मैंने कहा, "भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की युवक

शाखा की तरफ से हम लोग यहा आये हैं। काग्रेस हमारे लोकप्रिय नेता जवाहरलालजी की सस्था है। हम सात सदस्य देश के भिन्न-भिन्न भागो से आये हैं। आपके देश में आये हमें लगभग सत्रह दिन हो गये। हम जहा-जहा भी गये, हमने देखा कि हमारे देश और हमारे प्रधान-मत्री के प्रति यहा के लोगो में बहुत प्रेम है। कीव मे हम छ दिन रुकेंगे। युक्रेन के बारे मे हमने बहुत-कुछ सुना है। हमे खुशी है कि यह सब हम अब अपनी आखो से देखेंगे। कल पहला सोवियत युवक-दिवस है। हमे प्रसन्नता है कि इस उत्सव में हम आपके साथ सम्मिलित हो सकेंगे और भारत के युवको की शुभकामनाए सोवियत रूस के युवको को पहुचा सकेंगे। इस प्रेमपूर्ण स्वागत के लिए हम आपके कृतज्ञ है।

"खुले दिल-दिमाग से हम आपके देश के युवको की प्रवृत्तियो का अध्ययन कर रहे है। स्वदेश लौटने पर वहां के युवको को हम बतायेंगे कि सोवियत रूस के युवक अपने देश के नवनिर्माण में कितना सक्रिय भाग ले रहे है। आपके आतिथ्य के लिए एक बार पुन. धन्यवाद।"

रात्रि के भोजन के बाद हमें 'सिनेमा' दिखाने के लिए ले जाया गया। फिल्म-कला मे यह एक नया प्रयोग है।

कीव, ३० जून

कल दोपहर तक शहर के दर्शनीय स्थल देखे। फिर रूस के प्रथम युवक-दिवस में भाग लिया। यह सारा अनुभव बहुत आनन्दमय रहा। आज सुबह हम बच्चो की कृषि-सस्था देखने गये और दोपहर में हमें भूगर्भ-शास्त्र की शिक्षा पानेवाले यंग पायनियर कैंप पर ले जाया गया। वहीं हमने भोजन भी किया। शाम तक वहीं रहे। बच्चो के साथ उनकी प्रवृत्तियो को देखने में सारा दिन बहुत आनन्द के साथ बीता।

रात को मैं जरा जल्दी सो गया। अन्य मित्र सर्कस का खेल देखने चले गए। बाद में उन्होंने मुझे बताया कि सर्कस बहुत अच्छा था। सर्कस के साथ जो जादू के खेल दिखाये गए, उनकी उन्होंने बहुत प्रशंसा

की। हाथ की सफाई आश्चर्यजनक थी और यही तो इस तरह के खेलो की खूबी है। खेलो के बताने का ढग भी बडा आकर्पक था। उन्होने कहा कि मैने एक बहुत बढिया अवसर खो दिया। बडे ऊचे दर्जे का खेल था।

लोगो को यहा अपने माता-पिता के नाम या वश का अभिमान तो क्या, ख्याल तक नही है। अपने कुल का नाम लेने मे उन्हे कुछ भी गौरव नही मालूम होता। यदि एकदम साधारण कुल मे उनका जन्म हुआ है तो इसका उन्हें शर्म-सकोच भी नही है। उनके लिए असली चीज तो है स्वय अपना काम और उसमे प्राप्त की गई सफलता। मेरे लिए यह एक नई बात थी और मुझे यह अच्छी लगी। हमारे एक रूसी मित्र के उपनाम का अर्थ होता था—'घुघराले बालवाला'। सामान्य चर्चा मे बगैर किसी सकोच के सहज भाव से उसने हमे बताया कि उसका यह नाम कैसे पडा। उसके दादा एक अवैध सतान थे और हमारे इस मित्र को भी अपने माता-पिता के कुल का नाम मालूम नहीं था। एक बार जब वह किसी सरकारी दफ्तर मे नौकरी के लिए गया, तो वहा के अधिकारी ने औरो की भाति इससे भी अपने कुल का नाम पूछा। पर वह तो कुल का नाम जानता ही नही था। इसलिए उसने अधिकारी से कह दिया कि अपने जन्म के बारे मे मैं कुछ भी नही जानता। अधिकारी ने भी इसकी कोई परवा नही की और कहा कि तुम्हारे बाल बडे सुन्दर और घुघराले हैं, अत हम तुम्हें 'घुघराले बालवाला' ही कहेंगे।

सचमुच वहा के लोगो ने किसी व्यक्ति को उसके कुल के आधार पर छोटा या बडा समझना छोड दिया है। किसी भी व्यक्ति को यहा मान्यता उसी समय मिलती है जब वह स्वय अपने पराक्रम से कोई बडा काम करता है। लेकिन दूसरी तरफ बहुत छोटी-छोटी और साधारण बातो की भी वहा बडी तारीफ की जाती है। राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना का अतिरेक कर दिया गया है। छोटी-से-छोटी बातो की सार्वजनिक रूप से चर्चा होती है और वे अखबारो मे बडी-बडी सुर्खियो मे छापी

जाती है। उपाधिया दी जाती हैं। खेल-कूद, नाच, नाटक, साहित्य आदि मे भी यदि कोई कुछ नाम पैदा कर लेता है तो उसे तत्काल ही 'आदर्श व्यक्ति' बना दिया जाता है। उसकी आय भी एकाएक बेहद बढ जाती है तथा राष्ट्र मे उसकी मान्यता हो जाती है। एक नवयुवक के लिए यह बहुत बडी बात है। इससे उसे और भी बडे काम करने का प्रोत्साहन मिलता है। परन्तु दुर्भाग्य की बात यही है कि सारी सुविधा केवल उन्हीको मिलती हैं, जो साम्यवादी दल के सदस्य है। सोवियत रूस मे सर्वत्र यही होता है।

मेरा विचार है कि हमे इस विषय मे सोवियत रूस से काफी सबक लेना चाहिए। हा, उनके कमियो को छोडकर। यदि अपने युवको की सफलता पर उन्हे हम ही शाबाशी नही देगे तो और कौन देगा ?

कीव, १ जुलाई

नये महीने का पहला दिन हमने कीव से ३६ मील पर लुवरत्से के एक सामूहिक खेत पर बिताया। अध्यक्ष ने फार्म की सारी प्रवृत्तियो की जानकारी हमे विस्तार के साथ दी।

भोजन के बाद हमे तुरन्त ही शहर के लिए रवाना होना पडा, क्योकि ४ १५ बजे युक्रेन के प्रथम योजनामन्त्री श्री बोरोन्स्की से हमारी मुलाकात थी। समय पर पहुचना था। कई विवादास्पद विषयो पर उनसे हमारी बडी दिलचस्प चर्चा हुई।

सच पूछिये तो यह मुलाकात हमारे लिए खासतौर पर रक्खी गई थी, क्योकि हमारी बडी इच्छा थी कि सोवियत सघ की वर्तमान स्थिति और उसकी आर्थिक नीति के बारे मे हम किसी अधिकारी व्यक्ति से खुलकर चर्चा कर सकें। इसलिए स्वभावत हमारी यात्रा के कार्यक्रमो मे यह एक महत्व की चीज थी। हमे बड़ी खुशी हुई कि श्री बोरोन्स्की से मिलने का हमे अवसर मिला।

सबसे पहले हमने उनसे पूछा कि प्रधानमन्त्री श्री ख्रुश्चोव की

विकेन्द्रीकरण की नीति के बारे मे आपकी क्या राय है ? उन्होंने कहा, "केन्द्रीय सरकार के आधीन तीन प्रकार के उद्योग हैं। इनको छोडकर शेष सारे उद्योगो का सचालन गणराज्यो की सरकारें करती है। बडे उद्योगो का सचालन केन्द्र करता है और मध्यम श्रेणी के तथा छोटे उद्योग गणराज्या के मातहत हैं। वास्तव मे विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया शुरू से ही जारी रही है। परन्तु अब गणराज्यो ने केन्द्र से और भी अधिक अधिकार प्राप्त कर लिये है। क्रान्ति के तुरन्त बाद हमारे यहा वैज्ञानिको और इजीनियरो की बहुत कमी थी, इसलिए विवश होकर हमे हर चीज का केन्द्रीकरण करना पडा। परन्तु अब तो बहुत वैज्ञानिक हो गये है। इसलिए सभी राज्य अपने-अपने उद्योगो का सचालन स्वतन्त्र रूप से कर सकते हैं। प्रारम्भ मे उद्योगो के विशेषज्ञो को एक ही जगह से निदर्शन देना पडता था। विकेन्द्रीकरण के पहले हर देश को ऐसा ही करना पडता है। यह तो हम पहले ही जानते थे कि विकेन्द्रीकरण लाभदायक होता है।

"प्रारम्भ मे ४० प्रतिशत उद्योग राज्यो के मातहत थे। अब यह सख्या ६० प्रतिशत हो गई है। कौन-सा प्रदेश क्या चीज कितनी मात्रा मे पैदा करे, इसका निर्णय केन्द्रीय सरकार करती है। केन्द्र ने निश्चय किया है कि राष्ट्र के लिए आवश्यक वस्तुओ मे से ४०६ वस्तुओ का उत्पादन प्रत्येक राज्य करे। साथ ही केन्द्र ने यह भी निर्धारित कर दिया है कि कौन-सा प्रदेश कौन-सी वस्तु कितना मात्रा मे उत्पादित करेगा। ये चीजें इसलिए चुनी गईं कि इनकी जरूरत देश के सभी भागो मे होती है।

"केन्द्र के योजना-आयोग मे प्रत्येक गणराज्य के प्रतिनिधि होते हैं। वे आयोग को बताते रहते है कि उनके राज्य मे कौन-सी चीजें कितनी सस्ती बन सकती है तथा उनके राज्य की क्या आवश्यकताए हैं। प्रत्येक राज्य की आवश्यकताओ के आधार पर केन्द्र निश्चय करता है कि कौन-सी चीज कितनी मात्रा मे प्रत्येक राज्य बनावे और उसमे से वह अपने पडौसी राज्यो को कितनी दे। फिर प्रत्येक राज्य अपनी विधान-सभा

मे निश्चित करता है कि समस्त देश की आवश्यकताओ को ध्यान में रखते हुए वह अपने राज्य में उस चीज के उत्पादन का प्रबन्ध किस प्रकार करे ।

"राज्य के मन्त्री किसी कारखाने को सीधा नही कहते कि उसे किस वस्तु का कितना उत्पादन करना है । यह काम प्रत्येक राज्य के योजना-आयोग का है । योजना-आयोग भी प्रत्येक कारखाने की वस्तु-विशेष के उत्पादन की मात्रा निश्चित नही करता । वह तो केवल तमाम कारखानो को सूचना दं देता है कि राज्य के लिए वस्तु-विशेष के उत्पादन की कितनी मात्रा निर्धारित की गई है । फिर प्रत्येक कारखाने का उत्पादन क्या हो, यह कारखानो के सचालक स्वय आपस में निश्चिय कर लेते है । मन्त्रालय तो केवल सामान्य नियन्त्रण रखता है । इस विकेन्द्रीकरण के कारण यह लाभ हुआ है कि इस वर्ष के पहले छ महीनो मे पिछले वर्ष के उत्पादन की अपेक्षा ११ प्रतिशत की वृद्धि हुई ।"

विकेन्द्रीकरण के बारे मे अपने विचार की पुष्टि मे श्री वोरोन्स्की ने और भी कितने ही उदाहरण दिये ।

हमे कहा गया कि इससे पहले भी विभिन्न राज्यो पर किसी प्रकार का दवाव नही था । सोवियत सघ स्वेच्छा से बनाया गया सघ है । इसमे सब राज्य स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी खुशी से शामिल हुए है । वे जिन नीतियो को चाहे अपना सकते है ।

हमे यह स्पष्ट रूप से दिख रहा था कि शासनाधिकारी प्रधान मन्त्री ख्रुश्चोव का बडा आदर करते है । परन्तु वहा लोगो ने इस बात को बार-बार दुहराया कि विकेन्द्रीकरण केवल इसलिए नहीं जारी किया गया कि श्री ख्रुश्चोव ऐसा चाहते थे, बल्कि इसलिए कि वह देश के हित मे था । यह कोई केवल उनकी अपनी व्यक्तिगत नीति नही है, जैसाकि सारे ससार मे कहा जा रहा है । बीसवी काग्रेस मे इसपर खूब विचार हुआ और तब यह निश्चिय किया गया ।

हमारे मित्र श्री मित्तल के पूछने पर श्री वोरोन्स्की ने 'व्यक्ति-पूजा'

के सम्बन्ध मे भी अपने विचार रखे। उन्होने कहा कि व्यक्ति-पूजा का कारण यह नही था कि स्तालिन प्रधान मन्त्री और पार्टी के सचिव दोनो थे। यो तो लेनिन भी एक साथ दोनो पदो पर रहे थे। लेकिन उनसे तो देश की सेवा ही हुई। परन्तु जब स्तालिन इन दोनो पदो पर काम करने लगे तब कई अनुचित गलतिया घुस आई। गलतिया इसलिए हुई कि हर बात केवल एक व्यक्ति के हाथ मे चली गई और वह व्यक्ति थे स्तालिन। जो वह कहते थे, वही होता था। परन्तु जब ख्रुश्चोव शासन और दल के मुखिया बने तो उन्होने इस भूल को सुधारने का निश्चय किया और तेजी से काम करने लगे। वह कोई बात अकेले तय नही करते। केन्द्रीय समिति भी महत्वपूर्ण निर्णय अकेले नही करती। सारी बातो का निर्णय बहुत-से लोगो की राय लेकर लिया जाता है।

अब उन्हे अपने अनुभवो से यह विश्वास हो गया है कि यद्यपि ख्रुश्चोव दल और शासन दोनो के नेता है, फिर भी अब 'व्यक्ति-पूजा' की पुनरावृत्ति का खतरा नही है। जब किसी महत्वपूर्ण कार्यक्रम पर अमल करना होता है, उस समय एक ऐसे नेता की आवश्यकता होती है, जिसका दृष्टिकोण स्पष्ट हो और जिसपर जनता का पूरा-पूरा विश्वास हो। श्री वोरोन्स्की ने कहा कि प्रधानमन्त्री ख्रुश्चोव ऐसे ही पुरुष है। इस बात को आप लोग तो अच्छी तरह समझ सकते है, जो जानते है कि भारत मे महात्मा गाधी और श्री नेहरू का क्या स्थान है। देश के नेताओ को जनता से दूर नही पड जाना चाहिए।

श्री मनुभाई ने श्री वोरोन्स्की से पूछा कि सोवियत सघ मे अब भी इतनी असमानता क्यो है? वेतन ३००-४०० रूबल मासिक से लेकर ३०,००० रूबल प्रति माह तक है। इसके उत्तर मे वोरोन्स्की ने बताया कि २५,००० या ३०,००० रूबल पानेवाले व्यक्ति अधिक नही है। केवल कुछ वैज्ञानिको और इजीनियरो को ही इतना वेतन दिया जाता है। परन्तु वे लोग बहुत ही महत्त्वपूर्ण निर्माण के काम मे लगे हुए है। दरअसल उन्हे भी निश्चित बधा हुआ वेतन नही मिलता। यह

उनके काम के परिमाण पर निर्भर करता है। उन्होने कहा कि रूस की वर्त्तमान स्थिति मे सबको समान वेतन देना सभव नही है। व्यक्ति को उसके काम के अनुसार मजदूरी दी जानी चाहिए। जो अधिक मेहनत करता है या अधिक उत्पादन करता है, उसे अधिक ही मिलना चाहिए। फिर देश के सब भागो मे अभी औद्योगिक प्रगति समान रूप से नही हुई है। जो भाग पिछडे हुए हैं, वहा तीव्र प्रगति की आवश्यकता है। कोयले के उद्योग मे औसत मजदूरी काफी अधिक है। कुछ लोगो को ५००० या ६००० रूबल प्रति माह तक मिलता है। मतलब, मजदूरी का मान इस बात पर भी निर्भर करता है कि मजदूर किस उद्योग मे काम करता है।

उदाहरण के लिए एक बडे कारखाने के सचालक को ३००० से लेकर ४००० रूबल तक वेतन दिया जाता है। यह कारखाना इतना बडा होता है कि वह भारत के इस्पात के कुल उत्पादन का तिगुना उत्पादन करता है। साधारण मन्त्री का वेतन ५००० रूबल होता है। वेतन का स्तर नीचा है और इससे उन्हे सतोष नही है। वे इसे अधिकाधिक बढाना चाहते हैं। श्री ख्रुश्चोव कहते हैं कि कम वेतन पाने-वालो का वेतन बढाना भी उनका एक ध्येय है। श्री वोरोन्स्की ने हमे यह भी कहा कि युक्रेन की ससद का एक सदस्य एक छोटा-सा बिजली-घर खरीदकर उसे अपने गाव पर ले जाना चाहता था। वह इसके लिए एक लाख रूबल देने को तैयार था।

हमने श्री वोरोन्स्की से यह भी पूछा कि रूबल की विनिमय-दरो मे जगह-जगह इतना अतर क्यो है? शासन ने निश्चय कर लिया है कि एक भारतीय रुपये की विनिमय दर १.२ रूबल होगी। परन्तु वे विदेशी यात्रियो को एक रुपये के बदले मे दो रूबल देते हैं, जबकि अतर्राष्ट्रीय मुद्रा-बाजार मे तो एक रूबल की कीमत चार या पाच आने मात्र है। श्री वोरोन्स्की ने स्पष्ट स्वीकार कर लिया कि इस विषय में वे कुछ भी नही जानते। यह विषय केन्द्र से सम्बन्ध रखता है। वह तो केवल एक राज्य के योजनामन्त्री ही हैं। प्रारम्भ मे तो जो प्रश्न

उनके विषय से सम्वन्धित नही थे, उनका उत्तर देने मे वह हिचकिचाते थे। परन्तु वाद मे वह जरा खुल गये। कहने लगे कि हमारे सव प्रश्नो का उत्तर देने का वह यत्न करेंगे।

वातचीत लगभग सवा दो घण्टे चली। कुल मिलाकर वह वहुत दिलचस्प रही और प्रतिनिधि-मण्डल को काफी नई जानकारी मिली।

वातचीत के वाद ही हमे कीव के टेलीविजन स्टेशन पर ले जाया गया। स्टेशन दिखाने के वाद हमे टेलीविजन कार्यक्रम मे भाग लेने के लिए निमन्त्रित किया गया। पालित ने वगला मे हमारी सोवियत रूस की यात्रा के अनुभव सुनाये, जिसका रूसी मे वाक्यश अनुवाद भी साथ-ही-साथ सुना दिया गया। भारत की एक महत्वपूर्ण प्रान्तीय भाषा में और सो भी उनके सुपरिचित कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की भाषा मे वोलने की हमारी सूझपर सवको वडी प्रसन्नता हुई। होटल पर हम लौटे तव एक और कार्यक्रम हमारी राह देख रहा था। स्थानीय फिल्म यूनिट ने हमारे प्रतिनिधि-मण्डल की एक फिल्म ली और मेरी एक वार्ता को भी रेकार्ड किया।

मास्को, २ जुलाई

सुवह हम विजली के यत्र वनाने का एक कारखाना देखने गये। यहा कारखाने के सचालक कामरेड वोलिक और स्थानीय कोमसोमोल के मत्री कामरेड गार्गी स्टेव्ली ने हमारा स्वागत किया और हमे सारा कारखाना दिखाया। कारखाने के सम्वन्ध मे जो जानकारी हमे दी गई, उसके अनुसार वहा मे ३००० कर्मचारी काम करते थे, जिनमे से साठ प्रतिशत स्त्रिया थी। न्यूनतम वेतन ६५० रूवल था और अधिकतम ३५०० रूवल। इजीनियर का निम्नतम वेतन १००० रूवल और उच्चतम वेतन ३००० रूवल था। काम करनेवालो मे लगभग आधे जवान थे और तीन-चौथाई से कुछ ऊपर उच्च शिक्षा-प्राप्त थे। नये प्रकार के

यन्त्रो के उपयोग और उसकी वजह से कर्मचारियो की संख्या मे कमी करने से अब कारखाने को १० लाख रूबल का लाभ होने लगा था। इस बचत मे से वे अपने कर्मचारियो के लिए मकान बनवाने का विचार कर रहे थे। कारखाने की ओर से ४० प्रतिशत कर्मचारियो को तो यह सुविधा पहले ही से मिल चुकी है।

कारखाना भिन्न-भिन्न प्रकार के १२० औजार बनाता है। अधिकाश कर्मचारी अपने-अपने काम के विशेषज्ञ हैं। मजदूर यान्त्रिक दक्षता-प्राप्त हो, इसपर खास ध्यान रक्खा जाता है। कारखाने की ओर से एक तकनीक-प्रशिक्षण का स्कूल भी चलता है, जिसके वर्ग दिन मे और शाम को भी लगते है। दिन के वर्गों मे २०० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं और शाम के वर्गों मे १५०। कारखाने के कर्मचारियो मे से ७०० व्यक्ति या तो फैक्टरी के स्कूलो मे ही अथवा बाहर के स्कूलो में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

कारखाना साफ-सुथरा था। प्रबन्ध भी अच्छा था। यहा मुझे बिजली का एक शेवर (हजामत बनाने का यत्र) भेंट किया गया, जो इसी कारखाने मे बनाया गया है। यह यूरोप के अन्य देशो मे बने यत्रो की तुलना मे निम्न कोटि का था।

हम जब यह सब देख रहे थे, तब वही काम करनेवाली एक स्त्री ने हमे अपने मकान पर चलने के लिए निमत्रित किया। हमे ऐसा लगा कि वह स्वेच्छा से ही बुला रही है। उसने कहा कि हमारे यहा चलने से उसे तथा उसकी बूढी मा को बहुत खुशी होगी। सो हम गये। उसने और उसकी मा ने हमारा बडा अच्छा स्वागत किया। परन्तु जैसे ही हमने उसके मकान के अन्दर कदम रक्खा, हम समझ गये कि यह तो पहले से ही तय किया गया कार्यक्रम था। मकान को विशेषरूप से, बल्कि कुछ अधिक ही सजाया गया था। फल, पेय और अनेक दूसरी चीजे बडी मात्रा मे हमारे लिए तैयार रक्खी हुई थी।

कारखाने का क्लब-हाउस भी हमे दिखाया गया, जिसे वे 'सास्कृतिक-

सदन' कहते है। यह मकान अच्छा था। अनेक प्रकार के खेलो और सास्कृतिक प्रवृत्तियो की यहा सुविधाए थी।

दोपहर को ही हमे मास्को के लिए रवाना होना था।

हमारा कीव का निवास बडा अच्छा रहा। हमे यहा खूब आनद आया। कई दिलचस्प बातें हुईं, जिनकी सुखद याद हमे सदा बनी रहेगी। युवक-दिवस और हमारा उसमे शरीक होना स्वय हमारे लिए एक बडी घटना थी। दूसरे स्थानो की अपेक्षा यहा के लोग भी बहुत स्नेही लगे। इसका कारण शायद यह भी हो कि इससे पहले उन्हें भारतीयो से मिलने का अधिक अवसर नही मिला था। पूरनसिह 'आज़ाद' अपनी दाढी और साफे के कारण एक जबरदस्त आकर्षण बन गये। होटल मे खाना खाते समय भी लोग उन्हे अकेला नही छोडते। हमें तो लगा मानो वह एक फिल्मी अभिनेता ही बन गये हो। वह हरदम लोगो से घिरे रहते।

जिस होटल मे हम ठहरे थे, वह अच्छा और आरामदेह था। खाना भी सतोषजनक था। कामरेड लुदमिला, तोलाई, नश्चोली व अन्य स्थानीय मित्रो ने हमारी देखभाल खूब अच्छी तरह से की थी। लुदमिला बहुत कार्य-कुशल बहन थी और उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था। उन्होने बडी सावधानी और तत्परता से अपना काम सभाला। यह सब करते हुए भी वह सबसे अलग-सी ही रहती थी। जो भी कुछ करती, उसमे किसी प्रकार का व्यक्तिगत लगाव नज़र नही आता। हवाई जहाज पर चढने से पहले हमने उन सब मित्रो को धन्यवाद दिया, जो हमे विदा करने के लिए आये थे। भारत से हम जो स्कार्फ, रेशमी रूमाल आदि लाये थे, वे हमने उन्हे भेंट किये। उन्होने हमारी भावनाओ और इन चीजो की सराहना की। जब हमने लुदमिला को सही भारतीय ढग से अपनी बहन कहकर सबोधित किया तो उनपर भी इसका गहरा असर पडा। हमे उनसे ऐसी उम्मीद नही थी। हम तो समझ रहे थे कि वह एक रूखे मिजाज की व अपने काम से काम रखने-

वाली महिला हैं। उनपर ऐसे भावनात्मक विचारो का क्या असर होगा ?

मास्को के हवाई अड्डे पर कामरेड पोपोव और निकिलाई ने हमारा स्वागत किया। पोपोव से दुबारा मिलकर हमे खुशी हुई। वह बहुत ही सज्जन और मिलनसार व्यक्ति है। खिलाडी की-सी उनकी वृत्ति है और अपने मातहत काम करनेवालो के साथ भी वह बराबरी का सा बर्ताव करते हैं। रूस के युवक-सगठन मे इतने ऊचे पद पर पहुच जानेवाले व्यक्ति के लिए यह एक असाधारण बात ही कही जायगी।

जब हम पीकिंग होटल पहुचे तो हमे लगा कि इतनी लम्बी और थका देनेवाली यात्रा के बाद हम फिर अपनी परिचित जगह पर आ गये है।

मास्को, ३ जुलाई

सुबह सोवियत युवक-समिति के नेताओ तथा अन्य युवक नेताओ से बातचीत और विचार-विनिमय हुआ।

बैठक समाप्त होते ही हम भोजन के लिए भागे-भागे होटल पर गये, क्योकि तीन बजे सोवियत प्रधानमत्री से क्रेमलिन पर हमारी मुलाकात थी और इसलिए २-३० बजे हमे होटल से रवाना हो ही जाना था। हमें इस मुलाकात की बिलकुल भी आशा नही थी। हमारी रूसी यात्रा में यह एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना है, जिससे हमें बहुत आनन्द हुआ और वह कभी भुलाई नही जा सकेगी।

शाम को हमने विशाल लेनिन स्टेडियम में एक बड़ा अच्छा फुटबाल का मैच देखा। यह एक स्थानीय टीम और एक फ्रैंच टीम के बीच हुआ था, जो खासतौर पर इसीके लिए रूस आई थी।

मास्को, ४ जुलाई

आज अपेक्षाकृत कुछ कम काम था, इसलिए हम बाजार के लिए

निकल गये। प्रतिनिधियो को घूमने के लिए अकेले छोड दिया गया, ताकि वे जहा चाहें घूमे-घामे।

हमारे राजदूत श्री के० पी० एस० मेनन ने हमे आज भोजन के लिए निमन्त्रित किया था। उनसे मिलने का यह पहला ही मौका था, क्योकि पिछली बार जब हम मास्को मे थे तब वह यहा नही थे। उनसे मिलने पर हमे ऐसा लगा जैसे हम अपने ही घर पर हैं। उनके दफ्तर मे काम करनेवाले अन्य लोगो से मिलकर भी हमे बहुत खुशी हुई। इनमे से कुछ भोजन करते समय भी हमारे साथ थे। चूकि श्रीमती मेनन यहा नही थी, इसलिए मेजबान के तौर पर हमारा अतिथ्य भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव की पत्नी श्रीमती आहूजा ने किया। उनका व्यवहार मधुर और शानदार था।

आज इतने दिनो बाद भारतीय भोजन पाकर हमे बड़ा सन्तोष हुआ। परन्तु उससे भी अधिक सन्तोष हमे अपने देश के राजदूत के विचार जानकर हुआ। हमारा शिष्टमण्डल यहापर जिस प्रकार रहा, उससे उन्हें काफी प्रसन्नता थी। खासतौर पर इसलिए कि पिछले युवक-उत्सव के अवसर पर भारत से जो लोग आये थे, उनका बर्ताव इतना शोभाजनक नही रहा। हमारे राजदूत के ज्ञान और विचारो को देखकर हमे गर्व हुआ कि ससार की एक सबसे महत्वपूर्ण राजधानी मे उनके जैसे व्यक्ति भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे है। मास्को मे अन्य दूतावासो के अन्य प्रतिनिधियो मे उनके प्रति जो इतना आदर है, वह स्वाभाविक ही है।

विदा मागने से पहले हमने उनसे कहा कि हम भारतीय दूतावास को टालसटाय की एक प्रतिमा भेंट करना चाहते है, जो लेनिनग्राद के युवको ने हमे हमारी रूस की इस यात्रा की यादगार के रूप मे भेंट मे दी थी। उन्होने इस कल्पना का स्वागत किया। उन्होने हमारे इस सुझाव को भी मान लिया कि दूतावास के औपचारिक समारोहों मे सोवियत रूस के युवक-सगठनो के नेताओ को भी वह निमन्त्रित करते

रहेगे ।[1]

शाम को यहा के सस्कृतिक उद्यान 'गोर्की पार्क' में टहलने चले गए । वहा से लौटने के बाद कामरेड यूरापावलोव आ गये । यह युवको के समाचार-पत्र 'सोवियत लैंड' के प्रतिनिधि है । अपने साथ वह एक 'टेप रेकार्डर' भी ले आये । हमारे प्रतिनिधि-मण्डल के साथ अपनी बातचीत को वह रेकार्ड करना चाहते थे । उन्होने दस प्रश्न पूछे, जिनके हमारे शिष्टमण्डल के भिन्न-भिन्न सदस्यो ने उपयुक्त उत्तर दिये । प्रश्न ये थे—

१ सोवियत युवक-सगठनो का अध्ययन करने में आपका क्या उद्देश्य है ?

२. इस हेतु आप किन-किन स्थानो पर गये और अब कहा-कहा और जानेवाले है ?

३. आपने रूस के किन-किन युवक-सगठनो की प्रवृत्तियो का अध्ययन किया ?

४. सोवियत रूस में इतने दिन के अपने प्रवास के सम्बन्ध मे आपके क्या विचार हैं ? सबसे अधिक किस बात का आपके मन पर असर हुआ ? सोवियत रूस की किन-किन विशेष बातो से आप आकर्षित हुए ?

५ युवक-सगठनो का अध्ययन करसे के अलावा क्या आपने सोवि-

---

[1] हमारे भारत लौटने के बाद श्री मेनन का एक पत्र हमें मिला, जिसमें वह लिखते हैं—"ता० १७ जुलाई के आपके पत्र के लिए धन्यवाद । आपसे यहा मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई थी । दु ख केवल इसी बात का है कि हम यहा एक दूसरे के साथ अधिक समय नहीं बिता सके । आपका प्रतिनिधि-मण्डल यहांपर बहुत अच्छा असर छोड़ गया है ।

"रूस के युवक-नेताओं को बुलानेवाला आपका सुझाव बहुत अच्छा रहा । कल शाम को हमने उन्हें एक पार्टी में बुलाया था । वे आये भी थे और उनसे मिलकर मुझे बहुत आनन्द हुआ ।"

यत रूस की शिक्षा-पद्धति का भी कुछ अध्ययन किया ? उस बारे मे आपकी क्या राय है ?

६ श्री बजाज ने कहा है कि आपके प्रतिनिधि-मण्डल ने रूस की अपनी इस यात्रा में बहुत-सी उपयोगी बातें सीखी। ये उपयोगी बातें कौन-सी हैं ?

७ मास्को मे हुए युवक-समारोह मे भारत के प्रतिनिधि-मण्डल ने कहा था कि वह अपने देश लौटने पर वहा युवक-समारोह की कल्पना का प्रचार करेगा। तो भारत मे आप युवक-महोत्सव कैसे मनाते है ? भारत के युवक आगामी युवक-महोत्सव के लिए क्या-क्या तैयारिया कर रहे है ? क्या श्री नेहरू ऐसे उत्सबो को पसन्द करते है ?

८ कल आप हमारे प्रधानमन्त्री से मिले थे। उनसे आपने क्या-क्या बात-चीत की ? इस बात-चीत का आपपर क्या असर हुआ ?

९. क्या आपकी इस रूस-यात्रा से रूस और भारत के युवको के बीच सहयोग और मैत्री-सम्बन्ध बढेगे ? यदि हा, तो किस प्रकार ?

१० इस मुलाकात के अन्त मे आप और कुछ भी कहना चाहेगे ?

भारत से मुझे तीन सप्ताह से कोई पत्र नही मिला है। पत्र भेजे ही नही हो, ऐसा नहीं हो सकता, इसलिए मुझे कुछ चिंता होने लगी है।[1]

प्रतिनिधि-मडल के अन्य सदस्यो का भी यही हाल है। पत्रो के मिलने मे इतनी देरी क्यो हुई, यह मेरी समझ मे नही आया। भारत और रूस के बीच हवाई-डाक की व्यवस्था है। चिट्ठियो के आने या जाने मे चार-पाच दिन से अधिक समय नही लगना चाहिए। इसलिए इस देरी से हमे सदेह होने लगा कि हमारी डाक की जाच हो रही होगी। हमने अपने मेजबानो से इसकी शिकायत भी की तो उनपर इसका कोई असर नही हुआ। अत मे मैने टेलीफोन पर घर के लोगो से बातचीत करने का भी यत्न किया।

[1] बाद में मुझे मालूम हुआ कि मेरी ओर से कोई पत्र नहीं मिलने के कारण मेरे घर के लोग भी इसी प्रकार चिन्तित थे।

इस बीच अखिल भारतीय काग्रेस-समिति के कार्यालय से मुझे सूचना मिली कि किसी जरूरी काम की वजह से मुझे जल्दी-से-जल्दी सीधे भारत वापस लौट आना चाहिए। इसलिए युवक-समिति के मित्र इस प्रयत्न मे लगे हैं कि मुझे पहले हवाई जहाज मे जगह मिल जाय। परन्तु उन्हे पता चला है कि मुझे अभी तुरन्त जगह नही मिल सकती। हा, ऐन वक्त पर कोई मुसाफिर जाने का इरादा वदल दे तो बात दूसरी है। रात के दो बजे तक हम राह देखते रहे। परन्तु कोई लाभ नही हुआ। अन्त में मैने सीधे भारत जाने का विचार छोड दिया—प्रतिनिधि-मडल के सदस्यो से वातचीत करके अन्त मे मैंने निश्चय किया है कि मैं भी उनके साथ ताशकन्द जाऊ, वहा एक दिन रहू और उनसे तीन-चार दिन पहले कावुल के रास्ते नई दिल्ली के लिए रवाना हो जाऊ। परन्तु कठिनाई यह है कि हफ्ते मे केवल दो वार कावुल से भारत हवाई जहाज जाते हैं।

मास्को, ५ जुलाई

सुवह कोई खास काम नही था, इसलिए हमारे सदस्य वाजार मे अन्तिम खरीददारी करने, घूमने-घामने और मित्रो से मिलने के लिए चले गए। शाम को ५.४५ वजे हमे मास्को के टेलीविजन स्टेशन पर ले जाया गया।

पूरे-के-पूरे प्रतिनिधि-मंडल को श्री शेवचेनको के साथ टेली-विजन के कार्यक्रम मे भाग लेने के लिए कहा गया। उन्होने प्रेक्षको और श्रोताओं को प्रत्येक सदस्य का परिचय दिया और मुझसे कहा कि मैं हमारी रूस-यात्रा के वारे में अपने विचार सुनाऊ। मैंने अपने विचार हिन्दी मे प्रकट किये। उन्होने वार्ता की एक प्रति पहले से ही हमसे माग ली थी, ताकि उसका रूसी अनुवाद तैयार रहे।

मुझे वाद में वताया गया कि सामान्यतया वार्ता का स्वागत अच्छा हुआ। सच तो यह है कि मैंने रूस के वारे मे अपने विचार विलकुल सचाई के साथ किन्तु वहुत सक्षेप में सुनाने की कोशिश की थी। इनने कुछ

बातें उनके अनुकूल थी तो कुछ प्रतिकूल भी थीं। इसलिए उसकी प्रतिक्रिया जानकर मुझे खुशी हुई कि उन्हे मेरी स्पष्ट बातें भी अच्छी लगी और इस बात का प्रमाण भी हमको वार्ता के तुरन्त बाद मिल गया। रूस मे केवल युवको के साठ पत्र है। इनके प्रधान सम्पादक मेरे पास आये और मेरी वार्ता को अपने सब पत्रो मे छापने की अनुमति मागी। मैंने अनुमति दे दी, पर केवल एक शर्त के साथ। शर्त यह कि यदि वह मेरी वार्ता छापना चाहते हैं तो पूरी-की-पूरी छापें, अन्यथा बिल्कुल नही छापे। उसमे काटपीट नही करें; क्योकि मैं जानता था कि यदि उसमे से कुछ भाग निकाल दिया जाता है तो उसका सतुलन बिगड जायगा, बल्कि उसका गलत अर्थ भी लगाया जा सकता है।[1]

ताशकन्द, ६ जुलाई

हवाई अड्डे पर जाने के लिए हमे कल रात को एक बजे रवाना होना था, इसलिए हम तब तक सोये नही। अपने विचारो का आदान-प्रदान करते रहे, बातें करते रहे और रूसी मित्रो से विदा लेते रहे। परन्तु घना कुहरा होने के कारण हम समय पर नही निकल सके। हमारे मित्र हर आधा घटे मे हवाई जहाज के बारे मे जानकारी लेते रहे और हमसे आकर कहते कि थोडी देर और ठहरना होगा। इस तरह राह देखते-देखते सारी रात बीत गई। हममे से कोई भी नही सो सका। अत मे हमारा जहाज आज सुबह सात बजे रवाना हुआ।

२४ दिन की इस दिलचस्प और मजेदार रूस-यात्रा के बाद अब हम उजबेकिस्तान की राह से भारत के लिए रवाना हो रहे थे। सारी यात्रा का कार्यक्रम बडा व्यस्त रहा। लगातार घूमते रहे, लोगो से मिलते रहे, अनेक स्थान देखे, वार्ताए दी और नये-नये अनुभव प्राप्त

---

[1] जहातक मुझे पता है, वह वार्ता किसी भी समाचार-पत्र में नहीं छपी। इसका कारण शायद यही रहा होगा कि वे उसका केवल वही अश छापना चाहते होंगे, जो उनके अनुकूल था। इसलिए मेरी शर्त उनको अच्छी नहीं लगी।

किये । इसी प्रकार की यात्राओ पर यूरोप के दूसरे देशो मे भी मैं गया हू । परन्तु तब मुझे कोई कठिनाई नही हुई थी । एक तो भाषा की कोई दिक्कत नही थी । दूसरे, वहा के रस्मो-रिवाज समझने मे भी इतनी कठिनाई नही हुई । रूस मे हर वात अलग है । सामाजिक जीवन, रूढिया राजनैतिक विचार, नियन्त्रित समाज की पद्धतिया आदि सब चीजें ऐसी है, जो हमारे लिए एकदम नई है । यह सारा-का-सारा अनुभव नया है । कितनी ही बातें देखने और सीखने की थी । रूस मे आकर हमे बडी खुशी हुई, परन्तु इतने सारे परिश्रम और भाग-दौड के वाद वापस घर को लौट रहे थे, इससे भी मन मे कम आनन्द नही हो रहा था ।

इस समय हम जेट हवाई जहाज मे यात्रा कर रहे थे । जमीन छोडने के वाद बहुत जल्दी हम आठ-नौ मील की ऊचाई पर पहुच गये । उडान शान्त और आरामदेह थी, केवल सेवा-सुविधाए कम थी । इतने बडे हवाई जहाज मे केवल एक परिचारिका थी । वह वेचारी सब मुसाफिरो तक पहुच भी नही पाती थी । न खाना दिया गया और न कोई पेय । हाथ वगैरह धोने के कमरे मे केवल ठण्डे पानी का नल था । न साबुन का पता था न तौलिये का ।

साढे तीन घण्टे की उडान के वाद हम उजवेकिस्तान की राजधानी ताशकद पहुचे । स्थानीय समय मास्को से तीन घण्टे आगे था। इसलिए यहा ६ ३० वज गये थे । वडी गर्मी हो रही थी । हमें लगा मानो हम भारत में ही आ गये है ।

कामरेड आलिम मिर्जा, जहागीर और हसियाथ ने हवाई अड्डे पर वडे प्रेम से हमारा स्वागत किया । वही स्थानीय कोमसोमोल पत्र के प्रतिनिधि ने भी हमसे भेंट की ।

यात्रा ने हमे थका दिया था । हवाई अड्डे से हम जिस वस मे वैठकर होटल जा रहे थे, वह रास्ते मे दो-तीन वार वद हो गई । गर्मी तो वहुत थी ही । इससे हमे वडी परेशानी हुई । इस तरह का अनुभव इस यात्रा मे पहला ही था । होटल भी

वहुत अच्छा नही है। शायद हमे ठहराने लायक दूसरा कोई स्थान ही नही रहा होगा। कमरा, बिस्तर की चादर आदि भी साफ नही है। एक छोटे-से कमरे मे हम चार आदमियो को ठहरा दिया गया है। इतनी गरमी है और ऊपर से असख्य मक्खिया। वडी वेचैनी मालूम होती रही। हाथ-मुह धोने का इतजाम भी अच्छा नही है।

मुझे कल सुवह ही भारत के लिए रवाना होना है, इसलिए आराम के लिए भी समय नही है। भोजन के तुरन्त वाद दूसरे मित्र तो आराम करने लगे पर मुझे शहर दिखाने के लिए ले जाया गया। ताशकद भारत के एक छोटे शहर जैसा ही शहर है। कच्चे, धूलभरे और गन्दे रास्ते। लोगो के मकान और कपडे उत्तर भारत के गरीब कस्बो की याद दिलाते हैं। हम वाजार मे भी गये। इसके एक हिस्से मे खुला वाजार भी था। यहापर लोग अपनी निजी उपज की चीजें वेच रहे थे। इन चीजो से जो आय होती है, वह इनकी निजी होती है।

रात को हमे एक उजवेक सगीत-नाटिका दिखाई गई। नाम था 'रेवशन और जुलमोहर'। यह नाटक हमारे देश के प्रेम-नाटको से मिलता-जुलता था। सगीत भी परिचित-सा लगा। एक दृश्य मे विवाहोत्सव दिखाया गया था। वही रग-बिरगे कपडे और धूम-धाम! नाटक का कथानक एक धनिक लडकी के साथ एक गरीब कलाकार के प्रेम पर आधारित था। चूकि वह एक नेक आदमी था, इसलिए देवता और अप्सराए उसकी मदद के लिए आ गये और अत मे उसे अपनी प्रियतमा मिल गई।

काबुल, ७ जुलाई

मैं ग्यारह वजे भारत के लिए रवाना होनेवाला था। इसलिए हमने सुवह ही अपने प्रतिनिधि-मडल की बैठक रख ली थी। प्रत्येक सदस्य ने खूब काम किया था और अनुशासन का परिचय दिया था, जो प्रशसनीय था। हमारी एक खासी टीम वन गई थी। यात्रा मे सवको वडा

आनन्द आया। रूस से जितने भी प्रतिनिधि-मडल बाहर जाते है, वे बहुत सुनियोजित और अनुशासनबद्ध होते है। किंतु प्रजातत्रीय देशो से यहा आनेवाले प्रतिनिधि-मडल इतने व्यवस्थित नही होते। कई वार तो रूसी लोग सदस्यो मे भेदभाव पैदा करके कुछको अपने पक्ष मे कर लेते है। परन्तु हमारे प्रतिनिधि-मडल ने बहुत शान से और मिलजुलकर काम किया। ऐसे वहुत कम विदेशी प्रतिनिधिमडल यहा आये होगे। कभी-कभी हमे तकलीफें भी हुईं, परन्तु हमने कभी इनकी शिकायत नही की। रूसी मेजबानो ने इन दोनो वातो की सराहना की। इसका भी श्रेय शिष्टमडल के हर सदस्य को है। मैं तो कहूगा कि इतने अच्छे साथियो का साथ मिल जाना मेरे लिए वडे सौभाग्य की वात थी। उन्होने सदा खुले दिल से मेरा साथ दिया। वेशक, प्रारम्भ में जवतक हम एक दूसरे को अच्छी तरह नहीं जानने लगे थे, कुछ मामूली गलतफहमिया हुईं। परन्तु कुछ ही दिनो मे हमने सव ठीक कर लिया और हम लोग एक-दूसरे से अच्छी तरह घुलमिल गये। दिन मे हम चाहे कितने ही थक जाते, फिर भी दिनभर के कार्य-क्रम के वाद अपने अनुभवो का आदान-प्रदान करने के लिए सोने से पहले एक बार हम जरूर एकत्र हो जाते, भले ही आधी रात हो गई हो। प्रतिमा से मैंने कह दिया था कि यदि देर हो जाय और वह बैठक में न भी आये, तो कोई हर्ज नही। परन्तु वह भी वरावर आती रही, चाहे कितनी ही रात बीत गई हो। शुरू से आखिर तक हमने एक बात का निश्चय कर लिया था। हम कोई बात ऐसी नही करें या कहे जिसमे केवल व्यक्तिगत भाव प्रकट होते हो। हमारा मुख्य उद्देश्य यह था कि हम एक सगठन, बल्कि एक देश के युवको के प्रतिनिधि वनकर यहा आये है। इसलिए हमारा सारा व्यवहार और वातचीत सगठन व देश को शोभा दे, ऐसी ही हो।

यह सच है कि कभी-कभी छोटी-मोटी वातो मे कुछ कठिनाइया भी पैदा हो जाती। परन्तु कुल मिलाकर हर सदस्य ने अपना काम

बहुत अच्छी तरह किया, यद्यपि मुझे छोडकर अन्य सबका देश के बाहर जाने का यह पहला ही मौका था। इसलिए उनसे तथा रूसी मित्रो से विदा मागने का समय आया तब मेरा दिल भर आया और दुख भी हुआ।

हम जितने भी रूसियो से मिले उन सबमे हमारे हिन्दी दुभाषिये मिशा हमारे सबसे अधिक निकटस्थ हो गये थे। वह एक असाधारण व्यक्ति है। कट्टर साम्यवादी है। हमारे और उनके विचारो मे काफी अन्तर था। फिर भी हमारे प्रति उनका व्यवहार पूरा मित्रता का रहा। उन्होने अपना काम बहुत अच्छी तरह किया। वह बडे बुद्धिमान है। हर चीज की उनकी पकड गहरी है। एक दूसरे के विचारो पर प्रभाव डालने का प्रयत्न करने का तो सवाल ही नही था। फिर भी मिशा ने हमारे विचार समझना शुरू कर दिया था। हमारे प्रति उनके व्यवहार मे योग्यता, शिष्टता और राजनीतिक-कुशलता पूरी-पूरी प्रकट होती थी। कुल मिलाकर उनका-हमारा साथ अच्छा रहा और खासतौर पर मेरे लिए तो मददगार भी रहा। कुछ दिन बाद तो हम शिष्टाचार को छोडकर खुलकर भी बातें करने लग गये थे। वह सगठनकर्त्ताओ की कठिनाइया बडी स्पष्टता से बताते। मैं भी अपने विचार निसकोच बता दिया करता। औपचारिक रूप से इन बातो पर चर्चा करना सभव नही था। हिन्दी के अलावा उर्दू, फारसी आदि का भी उन्हे अच्छा ज्ञान था। बल्कि सच तो यह है कि वह हममे से कुछ लोगो से अधिक अच्छी हिन्दी जानते थे। मुहावरो की बारीकियो से वह अच्छी तरह परिचित थे। हिन्दी के कुछ गीत भी वह जानते थे और उनको ठीक स्वरो मे गा भी सकते थे। बहुत परिश्रमी थे। जब हम चले तो उनका दिल भर आया और अपने प्रेम की स्मृति के रूप मे व्यक्तिगत रूप से मुझे एक भेंट भी दी।

प्रतिनिधि-मण्डल से विदा लेने से पहले मैंने श्री सतपाल मित्तल को अपने बाद हमारे प्रतिनिधि-मण्डल का नेता नियुक्त कर दिया। वह

युवक-काग्रेस की राष्ट्रीय कौसिल के एक सदस्य है। प्रतिनिधि-मण्डल के सब सदस्यो ने उनके नेतृत्त्व मे उसी प्रकार काम करने का वचन दिया, जिस प्रकार वे मेरे साथ करते रहे।

वहा जब हम भिन्न-भिन्न सस्थाए देखने जाते और खासतौर पर 'ओरिएन्टल स्टडीज़' की सस्थाए देखने गये, तब विनोबा और भूदान-आन्दोलन के बारे मे भी अवश्य कुछ कहते। इस आन्दोलन के बारे मे हमने कुछ पुस्तिकाए भी तैयार की थी, जो हमने खूब वितरित की। एक बार हमारे प्रतिनिधि-मडल के कुछ सदस्यो को ऐसा लगा कि हमे गाधीजी और भूदान-आन्दोलन की बजाय अपने सगठन के बारे मे अधिक कहना चाहिए। मैंने उनसे कहा कि जहातक युवक-सगठन और उसके कामो का सम्बन्ध है, रूस हमसे बहुत आगे है। इस विषय मे हम उसे कोई नई बात नही दे सकते। आखिर हम रूस में अपने देश का प्रतिनिधित्व कर रहे है, इसलिए एक देश की हैसियत से हमारे पास उन्हे देने के लिए जो कुछ हो, वही हमे उनके सामने रखना चाहिए। इसीलिए मैं गाधीजी के आदर्शों और सिद्धान्तो पर अधिक जोर देता था। मेरी इस बात को सबने समझकर मजूर कर लिया।

सब भारतीय साथी और स्थानीय मित्र मुझे ताशकन्द के हवाई अड्डे पर विदाई देने के लिए आये थे। भारी दिल से मैंने उनसे बिदा ली। मैं चाहता था कि प्रतिनिधियो के साथ कुछ दिन और रुककर उज़बेकिस्तान को अधिक देखलू, परन्तु यह सभव नही था।

सोवियत सघ मे अन्तिम मुकाम तरमेज़ था। यह लगभग सीमा पर ही है। छोटा-सा हवाई अड्डा है। बुरी हालत मे पडा है। सडास भी बहुत गदा था। हमे यहा निश्चित समय से अधिक देर तक रुकना पडा। भोजन का समय था, परन्तु वहापर इसका कोई प्रबन्ध नही था। चुगी-वालो ने हमारे सामान को खोलकर उसकी पूरी-पूरी जाच की। आश्चर्य की बात कि हमारे पास जो रूबल बचे थे, उनके बदले मे हमे रुपये की बजाय अमरीकी डालर के नोट दे दिये।

हवाई जहाज काबुल मे उतरा । मैं भारतीय हू, यह देखकर हवाई अड्डे के कर्मचारी दौडकर मेरे पास आये और पूछने लगे कि क्या मैं भारत जाना चाहता हू । कहने लगे, "आइये, भारत के लिए हवाई जहाज तैयार खडा है । बैठ जाइये उसके अन्दर ।" मैंने उन्हे कहा कि मैंने कल के लिए जगह सुरक्षित करा रखी है । अभी एक रोज यहा ठहरूगा ।

काबुल, ८ जुलाई

आज जब मैं हवाई अड्डे पर गया और बहुत राह देखने के बाद जब मालूम हुआ कि हिन्दुकुश मे मौसम खराब होने के कारण उस रोज हवाई जहाज नही जायगा, तब मुझे बहुत निराशा हुई । इस तरह काबुल मे एक दिन और मिला । सौभाग्य से दो-एक अच्छे भारतीय मित्र मिल गये । उन्होने मेरे लिए अच्छा प्रबन्ध कर दिया ।

दिल्ली, ९ जुलाई

अन्त मे आज काबुल से हवाई जहाज द्वारा रवाना हुआ । मेरी खुशी की कोई सीमा नही रही जब हमारा जहाज अमृतसर मे उतरा । आखिर भारत आ ही गया । यद्यपि बहुत थोडे समय के लिए बाहर गया था, फिर भी स्वदेश लौटने पर जी बडा हल्का हो गया ।

एक प्रतिनिधि-मण्डल का नेतृत्व करने का भार तो हल्का हो गया पर अब तुरन्त ही दूसरी जिम्मेदारी की तरफ मेरा ध्यान गया । अगस्त के पहले सप्ताह मे नई दिल्ली मे 'वर्ल्ड असेंबली ऑव यूथ' का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन होने जा रहा है । उसकी तैयारी मे लग जाना है । जब मै दिल्ली के हवाई अड्डे पर उतरा तब मेरे दिमाग मे केवल वही बातें चक्कर काट रही थी ।

कुछ दिन बाद प्रतिनिधि-मण्डल के कुछ अन्य सदस्य भी दिल्ली आ पहुचे । मित्तल, आजाद और मनुभाई रूस से यूरोप की यात्रा पर

चले गए थे। जॉर्ज, पालित और प्रतिमा सीधे भारत लौट आये। मेरे आ जाने के बाद रूस मे उन्होने क्या-क्या किया, यह सब उन्होने मुझे सुनाया।

मुझे विदा करने के बाद हमारे इन मित्रो को होटल जेराफशान से सरकारी अतिथिगृह पर ले जाया गया। यह शहर से आठ मील की दूरी पर है। मेजबान स्वय अनुभव कर रहे थे कि जिस होटल पर यह प्रतिनिधि-मडल ठहराया गया था, वह हमारे लिए उपयुक्त नही था। दोपहर को वे ताशकद से कुछ दूर उनीजाबाद का कार्लमार्क्स नामक सामूहिक फार्म देखने गये।

८ जुलाई को सुबह प्रतिनिधि-मण्डल उज़बेकिस्तान के शिक्षा-मन्त्री कामरेड खादीरोव से उनके दफ्तर मे मिला। उन्होने प्रतिनिधि-मण्डल को बताया कि क्रान्ति से पहले इस राज्य मे केवल १६० पाठशालाए थी, जिनमे १३०० विद्यार्थी पढते थे। ९५ प्रतिशत लोग निरक्षर थे। सन् १९२० मे लेनिन ने एक खास कानून जारी किया कि निरक्षरता को पूरी तरह से खत्म कर दिया जाय। १९३० मे एक शासकीय आज्ञा द्वारा बच्चो के लिए सात वर्ष की पढाई अनिवार्य कर दी गई। इस समय उजबेकिस्तान मे ५८०० शालाए है, जिनमे १३,००,००० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे है। इस राज्य के बजट का ४२ प्रतिशत अर्थात् लगभग १ अरब ५० करोड रूबल केवल शिक्षा पर खर्च होता है। यहा दो विश्वविद्यालय, १२ शिक्षको के ट्रेनिंग कालेज और ३४ यन्त्र-विद्या की शालाए है। इन सबमे ८०,००० शिक्षक काम करते है। १०७ रिफ्रेशर स्कूल और १०० अनाथ बच्चो के विद्यालय हैं।

शिक्षा का माध्यम उज़बेक भाषा है, जो रूसी लिपि से कुछ ही भिन्न लिखी जाती है। माध्यमिक शालाओ मे प्रतिदिन दो घण्टे रचनात्मक श्रम की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है। ताशकन्द और समरकन्द की दो शालाओ मे हिन्दी सिखाई जाती है।

मन्त्री महोदय ने वार्तालाप के दौरान कहा कि शिक्षा-मन्त्रालय

और कोमसोमोल साथ-साथ मिलकर काम करते है । जॉर्ज ने इस कथन को अधिक स्पष्ट करने की प्रार्थना की, तब उन्होंने कहा कि प्रत्येक स्कूल मे एक पायनियर शिक्षक होता है, जिसका वेतन तो शिक्षा-मन्त्रालय से दिया जाता है, परन्तु वह काम करता है पूर्णत कोमसोमोल के मार्गदर्शन मे । मतलब, स्कूलो के काम-काज मे कोमसोमोल बहुत गहरी दिलचस्पी लेता है ।

इस बैठक के बाद प्रतिनिधि-मण्डल को एक कपडे की मिल दिखाने ले जाया गया, जो स्तालिन के नाम पर है । यह मिल सन् १९५३ में चालू हुई । आज यह ७ लाख मीटर कपडा प्रतिदिन बनाती है । १७,००० मजदूर इसमें काम करते हैं । मजदूरी काम की मात्रा के अनुसार दी जाती है । जितना काम उतना दाम । काम की मात्रा निश्चित कर दी गई है । निश्चित मात्रा से अधिक उत्पादन पर पारिश्रमिक भी बढता जाता है । मजदूर का निम्नतम वेतन ६०० रूबल और अधिकतम ८०० रूबल प्रतिमाह है । दूसरी ओर इजीनियरो को ८५० से लेकर ३,००० रूबल तक मासिक वेतन दिया जाता है ।

९ तारीख की सुबह प्रतिनिधि-मडल यानगिओल का सामूहिक फार्म देखने गया । रात को उज़बेक युवक-सगठनो ने मिलकर प्रतिनिधिमडल के स्वागत मे एक विराट समारोह किया । उज़बेक समिति के अध्यक्ष कामरेड आमिल अक्रम ने प्रतिनिधि-मडल का स्वागत किया । इन भारतीय मित्रो के स्वागत में शहर के सगठनो के मन्त्री, विद्यार्थियो के एक प्रतिनिधि, कारखानो के कार्यकर्त्ता और मिल-मज़दूरो की तरफ से एक लडकी तथा शहर के कोमसोमोल के मन्त्री ने भाषण दिये । मित्तल ने इनका समयोचित जवाब दिया । मनुभाई ने उज़बेकिस्तान पर लिखी एक गुजराती कविता पढी, जिसकी बहुत सराहना की गई । आज़ाद ने भी अपना बनाया एक शेर सुनाया । अन्त में हमारे प्रतिनिधियो ने मिलकर एक हिन्दी गीत और प्रसिद्ध रूसी गीत कच्यूशा गाया ।

१० ता० को सुबह हमारे प्रतिनिधियो को विज्ञान-अकादमी ले जाया गया। इसकी स्थापना सन् १६४३ में हुई थी। इस समय उसमे बाईस अनुसधानिक सस्थाए चलती है, जिनमें ३५०० प्रोफेसर, लेक्चरर तथा अन्य विभागीय कार्यकर्ता काम करते है। शिक्षा का माध्यम उज़बेक भाषा है।

इसके बाद उन्हे नवाई पुस्तकालय देखने ले जाया गया। नवाई प्रथम लेखक थे, जिन्होने उज़बेक भाषा मे ग्रन्थ लिखना शुरू किया। सोवियत सघ में जितनी भी किताबें प्रकाशित होती है, सरकारी आदेशानुसार उनकी एक-एक प्रति इस पुस्तकालय को भी भेजी जाती है। इस समय उसमें २० लाख पुस्तकें है।

दोपहर को प्रतिनिधियो ने ताशकद का ऐतिहासिक सग्रहालय देखा, जिसमें समरकन्द और बुखारा की प्राचीन सस्कृति के अवशेष भी हैं।

शाम को वे कामरेड राशिदिआव से मिले, जो उज़बेकिस्तान की सुप्रीम सोवियत के अध्यक्ष और सोवियत सघ के उपराष्ट्रपति है। लगभग आधा घन्टा बातचीत होती रही। सोवियत भूमि में हमारे प्रतिनिधि-मण्डल का यह अन्तिम कार्यक्रम था।

प्रतिनिधियो की बहुत इच्छा थी कि समरकन्द और बुखारा के ऐतिहासिक शहर भी देखें, जो प्राचीन इस्लामी सस्कृति के केन्द्र रहे हैं। परन्तु कुछ व्यावहारिक कठिनाइयो के कारण यह सम्भव नही हो सका।

भारत पहुचने के बाद तुरन्त ही मैंने अपने प्रधानमन्त्री से मिलने की इच्छा प्रकट की। ८ जुलाई को मैं उनसे मिला और हमारी रूस-यात्रा का कार्यक्रम तथा उसके विषय में अपने अनुभव भी मैंने उन्हे सक्षेप में बताये। ख्रुश्चोव के साथ हमारी बातचीत का सार तथा उनके लिए दिया गया संदेश भी सुनाया। कश्मीर के बारे मे श्री ख्रुश्चोव के विचार तथा बख्शी गुलाम मुहम्मद को दिया गया उनका सन्देश भी बता दिया। हमारी इस यात्रा का जो प्रतिवेदन

(रिपोर्ट) हमने काग्रेस-अध्यक्ष को दिया था, उसकी भी एक प्रति मैंने नेहरूजी को भेंट की।

नेहरूजी के साथ इस मुलाकात में श्री रवीन्द्र वर्मा भी मेरे साथ थे, जो उन्ही दिनो इसी प्रकार भारतीय युवक काग्रेस का एक प्रतिनिधि-मण्डल लेकर चीन गये थे।

: १२ :

रूस और अमरीका

सोवियत सघ से लौटकर उस यात्रा के बारे मे अपने विचार लिख लेने के बाद शीघ्र ही मुझे अमरीका जाने का भी अवसर मिला। यह बहुत अच्छा हुआ, क्योकि इससे मुझे ससार के इन दो सबसे अधिक शक्तिशाली देशो के लोगो के विचार जानने तथा उनके जीवन का निकट से अध्ययन करने का मौका मिला।

जिन परिस्थितियो मे मैं रूस और अमरीका गया, वे लगभग एक-सी ही थी। सन् १९५८ के अगस्त माह मे दिल्ली मे 'वर्ल्ड असेंबली ऑव यूथ' का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था। उसमे सयुक्त राज्य अमरीका की 'नेशनल सोशल वेलफेअर असेंबली' की यग एडल्ट कौंसिल के प्रतिनिधि भी आये थे। उन्होने हमारी भारतीय समिति को निमन्त्रण दिया कि वह अपना एक युवक प्रतिनिधि-मडल दो महीने के लिए अमरीका भेजे। तदनुसार हम वहा गये। हमारे प्रतिनिधि-मडल मे सात सदस्य थे और इसका भी नेतृत्व करने के लिए मुझे कहा गया।

रूस और अमरीका के जीवन की तुलना करना आसान भी है और कठिन भी। आसान इसलिए कि इन दोनो के ऊपरी भेद बिलकुल प्रकट व स्पष्ट है और कठिन इसलिए कि ये दोनो देश विज्ञान और तकनीकी प्रगति मे इतने आगे होने पर भी एक दूसरे के प्रति इतने अविश्वासी और अज्ञानी क्यो है, यह जानने के लिए काफी गहराई में पैठना पडता है। आवागमन के उन्नत साधनो ने ससार को इतना छोटा बना दिया है कि यह बात बहुत अजीब-सी लगती है।

पिछले पृष्ठो मे हमने देखा कि किस प्रकार रूस के एक साधारण नागरिक का जीवन चारो ओर से सीमित और वन्द कर दिया गया है। इसका कारण यह नही है कि वे लोग स्वय एकान्तप्रिय है और वाहर की बातो को जानना नहीं चाहते, वल्कि यह है कि ससार की सही-सही जानकारी उन्हे दी ही नही जाती। जो दी भी जाती है, वह एक खास प्रकार के विचारो मे रगकर। रूस की जनता मे अमरीका तथा दूसरे देशो की जनता के प्रति जो आश्चर्यजनक अज्ञान है, उसका कारण यही है। उदाहरणार्थ उन्हें यह विश्वास करने के लिए कहा जाता है कि अमरीका की जनता लडाकू है, दूसरो की स्वतन्त्रता का अपहरण करने का उसे शौक है तथा वह साम्राज्यवाद की समर्थक है। रूस के शब्दकोश मे शान्ति, स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र के अर्थ भी एकदम अलग हैं। वहा शासन द्वारा कही हुई वात का प्रतिवाद कोई कर ही नही सकता।

कोई स्वतन्त्रतापूर्वक वातचीत भी नही कर सकता। सच और झूठ की छानवीन तथा जाच वहा नही हो सकती। कुछ गिनती के लोग छिपकर रेडियो पर विदेशो की खवरें भले ही सुन लें और शासकीय घोपणाओ के वारे मे अपने मन मे शकाए करलें, परन्तु जन-साधारण का विश्वास तो वहा यही है कि अमरीका शान्ति का विरोधी है।

अमरीकी जीवन इससे विलकुल दूसरे प्रकार का है। फिर भी आश्चर्य की वात है कि वहा के लोगो ने भी रूस के वारे मे अपने विचारो को एकागी और पक्षपातपूर्ण वना लिया है। वे भी रूसियो को लग-भग उसी तरह देखते हैं, जिस तरह रूसी अमरीकियो को। प्रेस की स्थिति अमरीका मे रूस से विलकुल उल्टी है। सयुक्त राज्य अमरीका के अखवारो मे मनचाही चीज़ छापने की पूरी आजादी है। समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन और पुस्तको के द्वारा अमरीकी जनता को ससार के वारे मे सारी जानकरी मिलती रहती है। फिर भी रूस के वारे मे उनके सामने ऐसी ही सामग्री पेश की जाती है, जो साम्यवाद को वदनाम

करनेवाली होती है। प्रतिदिन उन्हे बताया जाता है कि साम्यवादी कैसे-कैसे पाशविक अत्याचार और हत्याए करते है, किस प्रकार वे अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे हैं और सारे ससार को जीतने के लिए वे कैसे-कैसे षड्यन्त्र रचते रहते है। परिणाम यह हुआ है कि अमरीका की जनता को पक्का विश्वास हो गया है कि ससार के किसी भी भाग मे साम्यवाद के फैलने का अर्थ है प्रजातत्र और स्वय अमरीका के अस्तित्व को खतरा। यह भय इतना गहरा और व्यापक हो गया है कि अब प्रत्येक अतर्राष्ट्रीय घटना को वे इसी दृष्टि से देखने के आदी हो गये है कि इससे साम्यवाद की शक्ति घटेगी या वढेगी। इस वृत्ति की जड मे केवल भय और आत्मरक्षा की सहज भावना है। सीनेटर मैकार्थी के जमाने मे रूस के वारे मे अमरीका की यह वृति एक पागलपन की सीमा तक जा पहुची थी। वह हवा तो अव नही रही, फिर भी यह वात उनके दिल मे वहुत गहरी जड पकड गई है और आज भी वे मानते हैं कि रूस स्वतन्त्र ससार और अमरीका के लिए एक स्थायी चुनौती है। इतना होते हुए भी उनमे एक वात अच्छी है। अमरीका के लोग रूस की सरकार और रूस की जनता को एक नही मानते। वे इसमे भेद करते है। वे रूसी जनता के इतने विरुद्ध नही है जितने कि साम्यवाद के सिद्धान्त और उसकी पद्धति के।

मै यह देखकर हैरान था कि दो परस्पर-विरोधी विचारधाराए एक ही नतीजे पर कैसे पहुची। परन्तु कभी-कभी दो विरुद्ध छोर भी मिलते देखे गए है। रूसियो और अमरीकियो के सर्वसाधारण रुखो मे कुछ वाते सामान्य है। जहातक रूस की जनता का सवाल है, ससार के दूसरे देशो के वारे मे उनके जो विचार हैं, उसका कारण वहा की सरकार है। परन्तु अमरीका मे अतिम निर्णायक तो मतदाता ही हैं। वहां के लोग व्यक्तिगत की स्वतन्त्रता मे दृढ विश्वास रखते हैं। चूकि साम्यवाद मे व्यक्ति की स्वतत्रता का कोई स्थान नही है, इसी कारण वे साम्यवाद के विरोधी है।

जहातक हमारे प्रतिनिधि-मडलो का प्रश्न है, हमारा स्वागत दोनो देशो मे समान स्नेह के साथ हुआ । दोनो देशो की जनता ने हमारे साथ मित्रता बढाने की अत्यधिक कोशिश की । जाहिर है कि उनके हेतु अलग-अलग रहे होगे। रूसी लोगों के दिल मे जो इतना प्रेम प्रकट हुआ, उसका कारण शायद यह रहा हो कि उन्हे गैर-रूसियो से मिलने का मौका बहुत कम मिलता है । एक कारण यह भी रहा हो कि एशिया के लोगो से मित्रता बढाना उनकी राष्ट्रीय नीति का अग है । इसके विपरीत अमरीका की जनता अपने मेहमानो का स्वागत करते समय इस बात की उतनी चिन्ता नही करती कि उसकी सरकार की विदेश-नीति क्या है । मेहमानो की मदद करने और उनका आतिथ्य करने का उन्हे दिली शौक है। बदले मे वे केवल इतना चाहते हैं कि लोग उन्हे व्यक्तिगत और राष्ट्र के रूप में भी चाहें । इसके अलावा अमरीकी लोग यह भी जानते है कि हम प्रजातन्त्र के समर्थक है और एशिया में उसकी रक्षा करने में लगे हुए है । परन्तु मैं नही मानता कि उनके मधुर स्वभाव का मुख्य कारण यह है । यदि गैर-सरकारी रूसियो का भी एक दल अमरीका पहुच जाय तो मुझे निश्चय है कि अमरीका की जनता उसका भी इतने ही मित्र-भाव के साथ स्वागत करेगी ।

इन दो देशो की जनता में दूसरी सामान्य बात है परिश्रम के प्रति उनका दृष्टिकोण। दोनो देशो के स्त्री-पुरुष लगन से और डटकर काम करनेवाले हैं। सोवियत रूस मे खेतो और कार-खानो मे स्त्रियो को भी कडी मेहनत करनी पडती है। इसका कारण शायद यह हो कि एक तो वहा के रहन-सहन का स्तर अपेक्षाकृत नीचा है और दूसरे मजदूरो की भी कमी है । परन्तु अमरीका मे तो ऐसी बात नही है। फिर भी वहा औरतें काम से जी नही चुराती। हा, एक बात है । सोवियत रूस मे जिस प्रकार स्त्रियो को कडा श्रम करना पडता है, ऐसा अमरीका मे नही । परन्तु वहापर धनाढ्य महिलाए भी प्राय

रसोई, और सफाई जैसा घर का काम-काज खुद ही करती है। इसका एक कारण यह भी है कि वहा घरो मे काम करनेवाले नौकरो की तनख्वाह इतनी ऊची है कि बहुत कम लोग नौकर रख सकते है। घर मे ड्राइवर रखने की अपेक्षा एक मोटर अधिक रखना वहा ज्यादा आसान है। दूसरे, वहा एक यह भावना भी है कि हर मनुष्य को अपना काम खुद ही करना चाहिए। यह देश जब आजाद हुआ तब यहा की स्त्रियो को घर के अन्दर-बाहर सब तरह का काम करना पडा। इसलिए यूरोप की स्त्रियो की अपेक्षा वे अधिक परिश्रमी और अपने मन के मुताबिक करने का आग्रह रखनेवाली है और यह आदत वहा अभी तक बनी हुई है।

एक अमरीकी घर छोटी-छोटी मशीनो का मानो भडार होता है। परन्तु इनसे काम लेना आसान नही है। जरा भी समय बचा कि ऐसी स्त्रिया सार्वजनिक काम मे लग जाती है। जो अधिक सम्पन्न हैं और बाहर कमाने नही जाती, वे समाज का कोई-न-कोई काम उठा लेती है। मद गति से काम करना तो वे जानती ही नही। छुट्टी के दिन भी उनके लिए विश्राम के नही, बहुत अधिक दौड-भाग के दिन हो जाते है।

हमारे जमाने की यह एक बहुत बडी गुत्थी है कि जो दो देश सैनिक दृष्टि से ससार मे सबसे अधिक शक्तिशाली है और जो हर मिनट अपनी युद्ध-शक्ति को बढा रहे हैं, वे ही लगातार शान्ति की भी बातें करते रहते हैं। इसका अर्थ शायद यही है कि यद्यपि ससार अभी कोई ऐसा गुर नही ढूढ पाया है कि जिससे युद्धो को हमेशा के लिए बन्द किया जा सके, फिर भी वह इतना तो जान गया है कि यदि कही अणु-युद्ध छिड गया तो समस्त मानव-जाति का खात्मा हो जायगा। इसी-लिए रूस और अमरीका शान्ति लाने की होड मे एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश में लगे हुए है। इन दोनो मे से प्रत्येक ससार को यह विश्वास दिलाना चाहता है कि केवल वही शान्ति का समर्थक है, दूसरा नही। परन्तु सरकारों की बात रहने दीजिये। हर देश की जनता तो

शान्ति के लिए आतुर है ही और शान्ति की पुकार मचा रही है। रूस की जनता हाल ही मे युद्ध के परिणाम देख चुकी है। उनकी अपनी धरती युद्धस्थल बनी थी। वे अब लडाई की इच्छा कैसे कर सकते है ? शान्ति और आर्थिक विकास के फल कब मिलेगे, इसकी राह वे कबसे देख रहे हैं। इसी प्रकार अमरीका की जनता ने भी युद्ध मे कम कष्ट नही सहा है। यद्यपि युद्ध प्रत्यक्ष उनकी जमीन पर नही हुआ, फिर भी ससार मे लडाई के अनेक मैदानो पर उसके नौजवानो ने अपने प्राण अर्पण किये है। आखिर ऐसा कौन-सा धनिक राष्ट्र है, जो अपने नौजवानो को कटते-मरते देख सके ? आर्थिक सहायता देना दूसरी बात है।

शान्ति के लिए इतनी इच्छा होने पर भी यह प्रकट है कि हर राष्ट्र अपनी शर्तों पर शान्ति चाहता है और दूसरे के प्रति अविश्वास रखता है। शीत-युद्ध मे अमरीका का रुख अधिक रक्षरणात्मक दिखाई देता है। जो स्थिति है वही बनी रहे तो शायद उन्हे सन्तोष होगा। उधर साम्यवादी विचार-धारावाले लोग अपना विस्तार करना चाहते है। धीरे-धीरे, परन्तु निश्चित रूपेण, वे अपना प्रभाव-क्षेत्र बढाने मे लगे हुए है। सौभाग्य की बात है कि भारत इनमे से किसी भी एक गुट का अनुयायी या साथी नही है। प्रत्येक भारतीय की यह आस्था है कि निष्पक्ष और सक्रिय तटस्थता का यह क्षेत्र उत्तरोत्तर बढता रहे तथा उसका प्रभाव रूसियो और अमरीकियो के दिलो पर पडता रहे।

सयुक्त राज्य अमरीका मे मैंने जो कुछ देखा, यहापर विस्तार से उसकी चर्चा करना नही चाहता। हमने अपनी वहा की दो माह की यात्रा मे इतनी सस्थाए देखी और इतने लोगो से हम वहा मिले कि इनको अत्यत सक्षेप मे भी लिखने बैठू तो भी काफी विस्तार हो जायगा। इसलिए वहा से लौटने के बाद सन् १९५९ के अगस्त मे मैंने अपनी अमरीका यात्रा के बारे मे एक लेख लिखा था, केवल उसीके कुछ अश यहा दे देता हू।[1]

[1] इस बीच अमरीका का यह विस्तृत यात्रा-वर्णन 'अतलातिक के उस पार' नाम से पुस्तक रूप में 'सस्ता साहित्य मण्डल' से प्रकाशित हुआ है।

"पूर्व किनारे से पश्चिम किनारे तक और उत्तर से दक्षिण तक बारह राज्यो मे हमने ८००० मील की यात्रा की। हमारे मेजबान 'यग एडल्ट कौंसिल' ने हमारे प्रतिनिधि-मडल के सदस्यो की विविध रुचि और जरूरतो का ध्यान मे रखते हुए, हमे कहा-कहा जाना चाहिए तथा किन-किन से मिलना चाहिए, इसका बडा सुनियोजित कार्यक्रम बनाया था।

"अमरीका के किसी युवक-सगठन द्वारा निमन्त्रित हमारा प्रतिनिधि-मडल अपने ढग का पहला ही था। इसके बाद 'यग एडल्ट कौंसिल' ने पश्चिमी अफ्रीका के विभिन्न देशो के आठ प्रतिनिधियो को भी इसी प्रकार बुलाया था। हमारी यात्रा के अन्त मे इनसे भी हमारी मुलाकात न्यूयार्क मे हो गई थी, जिससे हमे बडी खुशी हुई।

"अमरीका के निवासी अपेक्षाकृत सपन्न है। इसलिए हम साधारणत सोचते है कि वे आराम-पसन्द होगे। परन्तु बात ऐसी नही है। वहा के सभी धनवान स्त्री-पुरुष काफी परिश्रमी है। या तो वे कोई नौकरी कर लेते है या समाज-सेवा का कोई काम उठा लेते है। उनकी यह परिश्रम-भावना व श्रम-प्रतिष्ठा देखकर उनके लिए बडा आदर होता है। जो सपन्न लोग आसानी से नौकर रख सकते है, वे भी अपना काम खुद करना पसन्द करते है।

"हमने वहा के लोगो को बडा उदार, सहृदय, उपकारी और अतिथि-परायण पाया। वे अपने काम को छोडकर भी दूसरे की मदद करने के लिए तैयार रहते है। वहा कितनी ही अच्छी-अच्छी सस्थाए चल रही है, जिनमे लोग अवैतनिक काम करते है। इसी प्रकार समाज-सेवा के कामो के लिए वे बड़ी-बडी रकम एकत्र कर लेते है।

"जहातक युवक-सगठनो का सबध है, हमने देखा कि राजनीति की तरफ उनका अधिक झुकाव नही है। इनमे से कुछ, जैसे 'वाई० एम० सी० ए०' और 'वाई० डब्ल्यू० सी० ए०' समाज-कल्याण के क्षेत्र मे अच्छा काम कर रहे हैं। 'यग डेमोक्रेट्स', 'यग रिपब्लिकन्स', 'यग

क्रिश्चियन वर्कर्स' और 'नैशनल स्टुडेन्ट्स एसोसियेशन' मे कुछ अधिक राजनैतिक चेतना है। परन्तु ये युवक-सस्थाए फिर भी इतनी सुसगठित नही हैं। सामान्य रूप से कह सकते है कि सयुक्त राज्य अमरीका में युवको के सगठन तो बहुत-से हैं, परन्तु युवको का अपना कोई राष्ट्रीय आदोलन हो, ऐसा नही कहा जा सकता। अभी-अभी वे इसकी जरूरत महसूस करने लगे है। इस दिशा मे उन्होने कुछ प्रयत्न भी शुरू किया है। शायद इसी कारण 'यग डेमोक्रेट्स' और 'यग रिपब्लिकन्स' ने 'यग एडल्ट कौन्सिल' मे शामिल होने का निश्चय किया है। देश के युवक सगठनो को आपस मे जोडनेवाली वही एकमात्र सस्था है। वह स्वय भी देश के युवक-सगठनो को एक दूसरे के निकट लाकर उनको एक चेतनायुक्त और रचनात्मक शक्ति का रूप देने मे यत्नशील है। उसका हमे तथा अफ्रीका के युवक नेताओ को निमन्त्रण देना इसी ओर एक प्रयत्न था।

"अमरीका की वैदेशिक नीति के बारे मे बाहरी जगत मे बडी गलतफहमिया फैली हुई हैं। उनके दृष्टिकोण को समझ लेना हमारे लिए उचित ही होगा। खासतौर पर इसलिए भी कि हमारे देश मे सामान्यतया यह माना जाता है कि अमरीका का रुख हमारे प्रति बहुत मित्रता का नही है। हमने देखा कि जहातक अतर्राष्ट्रीय राजनीति का सम्बन्ध है, वहा के जन-साधारण को उसमे बहुत कम दिलचस्पी है। 'न्यूयार्क टाइम्स' और एक-दो दूसरे समाचार-पत्रो को छोड दें तो न्यूयार्क और वाशिगटन के अन्य समाचार-पत्र अतर्राष्ट्रीय समाचार विशेष नही देते। प्रातीय समाचार-पत्र तो खासतौर पर ऐसे समाचार बहुत ही कम देते है। वहा के समाचार-पत्र होते तो हैं बहुत भारी-भरकम, परन्तु उनका ७५ प्रतिशत भाग विज्ञापनो से भरा होता है। यहा तो लोगो को मुख्यत अपनी आय और भौतिक सुख-सुविधाए बढाने से काम है। न वे किसी झझट मे पडते है और न चाहते हैं कि कोई और उन्हें किसी झझट मे डाले। उन्हे न तो राजनैतिक महत्वाकाक्षाए है और

न दूसरे देशो पर अपना साम्राज्य लादने की इच्छा। हमने देखा कि उनकी वृत्ति कुछ इस तरह की है कि यदि कोई उन्हे यह विश्वास दिला दे कि कोई अन्य देश और खासतौर पर सोवियत रूस उन्हे नही सतायगा तो वे सारे ससार से अपने-आपको अलग कर लें और आप भले और अपना काम भला, इस प्रकार रहना पसन्द करेंगे। इस रुख का कारण यही है कि आर्थिक दृष्टि से वे काफी समृद्ध हैं और हर बात मे स्वावलम्बी है, किसी बात के लिए दूसरे पर आश्रित नही है।

"उन्हे अपने जीवन का तरीका अच्छा लगता है। बल्कि उस पर उन्हें बहुत गर्व है। यदि वे देखते हैं कि उसे खतरा है, तो समझते है कि उनकी सारी हस्ती खतरे मे है और उनका सारा रोष उमड पडता है। इसी कारण वे हर चीज को इसी दृष्टि से देखते हैं कि वह साम्यवाद के अनुकूल है या प्रतिकूल और उसके अनुसार ही उसका विरोध या स्वागत करते है।

यही वृत्ति उनके विदेश मत्रालय की वैदेशिक नीति मे प्रतिबिंबित होती है। यह मुख्यत. सरक्षणात्मक और नकारात्मक है। अतर्राष्ट्रीय बातो मे दिलचस्पी की इस कमी और दूसरे महायुद्ध के पहले-वाले वर्षों मे शेष ससार से कोई वास्ता नही रखने के कारण अमरीका ने ब्रिटेन और सोवियत रूस की भाति अपने दूतावासो के लिए वैदेशिक राजनीति मे निपुण आदमी तैयार करने की परवा नही की। इसलिए ऐसा लगता है मानो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का नेतृत्व अमरीकियो के सिर पर जबरदस्ती लाद दिया गया हो, जिसके न तो वे योग्य हैं और न इसकी उन्हें इच्छा है। इस प्रश्न पर मैंने वहा के बहुत-से महत्वपूर्ण व्यक्तियो से प्रत्यक्ष चर्चा भी की। उन्होने भी सामान्यत. इस बात का अनुमोदन किया। इसी कारण उनकी नीतियो के बारे में बाहर और खास तौर पर भारत मे बडी गलतफहमिया फैली हुई है। बाहरी ससार मे क्या-क्या विचार-धाराए फैल रही है, उनसे वहा के लोगो को परिचित रखने का भी पूरा प्रयत्न नही हो रहा है। इसी कारण अमरीका की

जनता यह नहीं समझ पा रही है कि बाहरी जगत मे उसकी नीति के बारे मे इतनी गलतफहमिया क्यो फैली हुई है।

"मेरी अपनी राय यह है कि सामान्यत अमरीका की जनता को भारत के बारे मे बहुत-कुछ जानकारी नही है, बल्कि कुछ हदतक गलत जानकारी ही है। परन्तु अब भारत के प्रति उनमे दिलचस्पी बराबर बढ रही है और जिन दिनो हम वहा थे, वहा का वातावरण वास्तव मे हमारे देश के अनुकूल होता जा रहा था। हमने देखा कि हमारे बारे मे उनके दिमाग मे जो गलत कल्पनाए भरी हुई थी, वे निकल रही हैं। इसका एक चिन्ह यह माना जा सकता है कि काश्मीर के बारे मे हमसे वहा एक भी प्रश्न नही पूछा गया, जो कि अबतक भारत-विरोधी भावनाओ का केन्द्र-बिन्दु बना हुआ था। वहा के लोग अब यह समझते जा रहे हैं कि ससार मे एक तटस्थ शक्ति का होना भी जरूरी है। इसी प्रकार वे अब हमारी वैदेशिक नीति को भी समझने और उसकी कद्र करने लगे हैं।

"मैं यह भी बतादू कि अमरीका के धनपतियो में अब यह भावना बढ रही है कि भारत के उद्योगो में उन्हे अपनी पूजी लगानी चाहिए। वहापर मैं बहुत-से उद्योगपतियो, बैंकरो आदि से मिला। उन्होने इस विषय में बडी दिलचस्पी प्रकट की। अत इस दिशा में प्रयत्न करके हमें इस अनुकूल परिस्थिति से लाभ उठाना चाहिए।

"अपनी इस यात्रा में हम बहुत-से महत्वपूर्ण व्यक्तियो से मिले, जिनमें श्रीमती ऐलीनोर रूजवेल्ट, सीनेटर (अब राष्ट्रपति), केनेडी सीनेटर हम्फ्री, श्री चेस्टर बोल्स, सेक्रेटरी बेनसन, रिपब्लिकन पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष श्री अलकार्न और प्रातीय गवर्नरो में से न्यूयार्क स्टेट के नेलसन राकफेलर तथा मिशिगन के विलियम्स प्रमुख हैं। अधिकारियो में हमारी आखिरी मुलाकात श्री राकफेलर से हुई। वह सौहार्दयुक्त, मिलनसार और साफ तबीयत के आदमी है। उन्होने अमरीका के बारे में मुझसे अपनी राय पूछी तो उनकी वैदेशिक नीति

के बारे में मेरे जो विचार बने थे, वे मैंने उन्हे बता दिये। मोटे तौर पर वह इससे सहमत थे। उन्होने कहा कि प्रजातत्र का भविष्य इसपर निर्भर है कि सयुक्त राज्य अमरीका, भारत और ब्राज़ील किस हद तक आपस मे सहयोग करते हैं। ब्राज़ील पर उन्होने क्यो जोर दिया, यह हम अच्छी तरह नही समझ सके।

"मेरा ख्याल है कि हमें यत्नपूर्वक अमरीका की जनता से अपने सम्बन्ध बढाकर अपने देश की सही-सही जानकारी उसे देते रहना चाहिए। सरकारी प्रतिनिधि-मडलो की अपेक्षा हमारे जैसे गैर-सरकारी प्रतिनिधि-मडल दोनो देशो के बीच अच्छे सम्बन्ध बनाने मे अधिक अच्छा काम कर सकते है। मुझे निश्चय है कि भिन्न-भिन्न प्रकार की गैर-सरकारी सस्थाओ द्वारा यदि अलग-अलग स्तर पर सद्भावना-मडल भेजे जाय, तो वे हमारे दोनो देशो को एक दूसरे के निकट लाने में बडा काम कर सकते है।"

रूस और अमरीका आज ससार के दो सबसे बडे उद्योग-प्रधान राष्ट्र है। दोनो विज्ञान को सर्वोपरि महत्व देते है। अबतक अमरीकी जनता यह समझ रही थी कि उनका देश अपने प्रतिस्पर्धी से विज्ञान मे बहुत आगे है। परन्तु स्पुतनिक के सफल प्रयोग द्वारा रूस ने उसके इस आत्म-विश्वास को बड़ा जबरदस्त धक्का पहुचा दिया है, यद्यपि अमरीका के राजनीतिज्ञ और वैज्ञानिक रूस की इस प्रगति से एकदम बेखबर नही थे। सैनिक शक्ति मे दोनो राष्ट्र लगभग बराबरी के है। कोई भी देश किसी दूसरे से किसी बात मे एकदम आगे नही कहा जा सकता। अब तो केवल आत्मरक्षा के खातिर भी दोनो देशो को एक दूसरे के बारे में अधिक जानकार रहना पडेगा। इसी कारण दोनो देशो के उच्चतम नेता एक दूसरे के देश में आने-जाने लगे है। इससे यह आशा भी जागने लगी है कि सभवतः पचशील, अर्थात सह-अस्तित्व और 'जियो व जीने दो' के सिद्धान्त को धीरे-धीरे मान्यता मिल जाय।

परिशिष्ट १

प्रतिनिधि-मण्डल का वक्तव्य[1]

वहनो, भाइयो और रूस के नौजवान दोस्तो !

हम लोग भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस, जिसके नेता श्री जवाहरलाल नेहरू है, की युवक-सस्था के प्रतिनिधि की हैसियत से यहा आये है। हम नातो सदस्य भारत के विभिन्न भागो से आ रहे हैं।

लखनऊ मे अक्तूवर, १९५७ मे भारतीय युवक-काग्रेस का सालाना जलसा हुआ था। उसमे हमारे निमन्त्रण पर आपकी सोवियत युवक-समिति के तीन साथी निरीक्षक के रूप मे भाग लेने आये थे। हमे इसकी वडी खुशी हुई थी। उस समय आपके प्रतिनिधियो ने हमे यहा एक सद्भावना-मडल भेजने का निमत्रण दिया था। उसीके फलस्वरूप आज हम लोग आपके वीच उपस्थित है। आपके निमन्त्रण और स्वागत के लिए हम आपकी समिति के वहुत आभारी हैं।

हमे रूस मे आये तेईस-चौवीस रोज हो गये। मास्को से लेनिनगाद, याल्टा होते हुए हम कीव गये और वहा से फिर आपकी इस विशाल नगरी मास्को मे आये है। यहा से हम उजवेकिस्तान जायगे और यो एक माह की अपनी यह अविस्मरणीय यात्रा पूरी करके अपने देश भारत वापस पहुचेंगे।

हम लोग यहा खुले दिल और दिमाग लेकर आये हैं। आपकी युवक-प्रवृत्ति, आपकी सस्थाए, आपके खेल-कूद के स्थान, आपके लोगो का

[1] यह वक्तव्य प्रतिनिधि-मण्डल ने रूस से विदा होते समय मास्को टेलीविजन पर दिया था।

रहन-सहन हमने बिना किसी पूर्व-धारणा के देखने और समझने की कोशिश की है। यहा हमको बहुत-कुछ नई बातें देखने और सीखने को मिली हैं, जिनका उपयोग हम अपने देश मे लौटकर करेगे।

हमारे देश के राष्ट्र-पिता महात्मा गाधी ने हमे हमेशा सत्य, अहिंसा और शान्ति का पाठ पढाया है। हमने शान्ति के मार्ग से ही लडकर अग्रेजो से अपने देश को आजाद किया है। आज हमारे देश के सर्वप्रिय नेता श्री जवाहरलाल नेहरू भी उसी रास्ते पर चलकर सारी दुनिया मे शान्ति कायम करने का पूरा प्रयत्न कर रहे है, हमारे देशवासियो को शान्ति का पाठ पढा रहे हे। जब आपके नेताओ और आपकी जनता ने पचशील को स्वीकार किया और उन सिद्धान्तो पर चलकर दुनिया मे शान्ति स्थापित करने का निश्चय किया तब हमे बहुत प्रसन्नता हुई।

हम जहा-जहा गये, हमे आपका अपार प्रेम मिला। आपकी जनता का भारत के लोगो के लिए इतना प्रेम देखकर हम गद्गद हो गये है। वापस भारत जाकर हम आपके इस प्रेम की कहानी वहा के लोगो को और विशेषकर अपने युवक साथियो को सुनायगे।

आपने बहुत बडे-बडे काम किये है। आपका देश महान है। मास्को का विश्वविद्यालय और मीत्रो मनुष्य की प्रगति मे बडे कदम है। आपकी 'यग पायनियर' सस्था हमे विशेष प्रिय लगी। बच्चे स्वस्थ, हँसमुख और व्यवहार-कुशल है। सब जगह हमसे बहुत प्यार से मिले और बडी सरलता से हमारे मित्र बन गये। उनके खाली समय मे उनको आराम मिले, खेल-कूद की सुविधा मिले, ठीक से पढाई की व्यवस्था हो, स्वास्थ्य के लिए पूरा इन्तजाम हो, इस सबका आप खूब स्याल रखते है, यह देखकर हमे विशेष प्रसन्नता होती है।

भारत के लोगों और युवको के समान ही यहा के लोग भी शाति चाहते हे, इसमे कोई सदेह नही। यद्यपि हमारे सिद्धान्त जुदा-जुदा है और हमारी कार्य करने की पद्धतियो मे भी अतर है, फिर भी हमारे अतिम

लक्ष्य एक ही है—दुनिया मे अमन कायम करना । जिन-जिन देशो के लोग व युवक शाति चाहते हैं, हम उन सवके साथ मिलकर शाति की ताकत वढाना चाहते है । इसलिए हमे भरोसा है कि आप और हम सब साथ मिलकर शाति के लिए एकसाथ काम कर सकते है।

आपने स्पुतनिक वनाया । दुनिया की प्रगति के इतिहास मे यह एक क्रातिकारी घटना हुई है । आपके यहा विज्ञान और टेकनोलोजी का बहुत विकास हुआ है । स्पुतनिक बनाने के लिए जो उद्योग करने पडे, उसके लिए रूस की जनता को, खासकर युवक और युवतियो को बहुत त्याग करना पडा है, यह हम जानते है । उनको वर्षो से रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुओ की कमी सहन करनी पड रही है । फिर भी उन्होने इसे बहादुरी से सहन किया है । हमे विश्वास है कि आपका त्याग और यह अपार शक्ति दुनिया मे शाति कायम करने के लिए ही काम मे आयगी। तभी आप लोगो का यह त्याग सारी दुनिया के लोगो के लिए किया गया त्याग सावित होगा । हम आपके इस प्रयत्न मे आपकी सफलता चाहते है ।

आपके लोकप्रिय नेता श्री ख्रुश्चोव से परसो हमारा प्रतिनिधिमडल मिल सका, इसकी हमे बहुत ज्यादा खुशी है और हम उनके तहेदिल से आभारी है । उन्होने वहुत देर तक हमारे सब प्रश्नो का प्रेम से जवाव दिया और हमारी कदर की, इसे हम अपना परम सौभाग्य समझते हैं ।

हमे भरोसा है कि रूस और भारत के युवको का भविष्य उज्ज्वल है और हम दोनो मिलकर दुनिया के भविष्य को वनाने मे काफी हिस्सा वटा सकते हैं ।

हम चाहते है कि भारतीय युवक काग्रेस के लोगो की शुभ कामनाए आपके जरिये आपके सारे नवयुवको के पास पहुचें ।

आपके निमत्रण, स्वागत और प्रेम के लिए हम सोवियत युवक-समिति व सव रूसी नौजवान दोस्तो के वहुत आभारी हैं । कृपया

हमारा धन्यवाद और प्रेम स्वीकार करें।

नमस्ते !

पासीवा (धन्यवाद),

दसविदानिया (अलविदा) !

परिशिष्ट २

प्रतिनिधि-मण्डल का प्रतिवेदन

भारतीय युवक काग्रेस का दूसरा वार्षिक अधिवेशन सन् १९५८ के अक्तूबर मास मे लखनऊ मे हुआ था। इस अवसर पर हमने कई देशों के युवक-सगठनो को निमत्रित किया था। तदनुसार सोवियत रूस, सयुक्त राज्य अमरीका, जापान, पूर्वी जर्मनी, चीन, उत्तर वियतनाम, मिस्र, और यूगोस्लाविया के प्रतिनिधियो ने इस अधिवेशन मे भाग लिया।

अपने-अपने देश लौटने से पहले सोवियत रूस और चीन के प्रतिनिधियो ने भारतीय युवक-काग्रेस को निमत्रण दिया था कि वह भी अपने प्रतिनिधियो का एक सद्भावना-मडल सन् १९५८ मे किसी समय उनके देश मे भेजे। यहा से लौटने पर एक लिखित निमन्त्रण भेजकर उन्होंने इसकी पुष्टि भी कर दी।

भारतीय काग्रेस कमेटी के युवक-विभाग ने इस निमन्त्रण को स्वीकार किया और इन दोनो देशो को एक-एक सद्भावना-मडल भेजने का निश्चय किया। एक प्रतिनिधि-मडल श्री रवीन्द्र वर्मा के नेतृत्व में चीन गया और दूसरा रूस। रूसवाले प्रतिनिधि-मडल का नेतृत्व करने के लिए मुझसे कहा गया।

रूस भेजे गए प्रतिनिधि-मडल मे मेरे अतिरिक्त निम्नलिखित सदस्य थे —

१ श्री एस पी- मित्तल, सेक्रेटरी, पजाब प्रदेश युवक काग्रेस

---

[१] यह प्रतिवेदन प्रतिनिधि-मण्डल ने भारत लौटने पर कांग्रेस-अध्यक्ष को दिया था।

२. श्री पूरनसिंह 'आज़ाद', अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी युवक-विभाग, नई दिल्ली

३ श्री ए सी जॉर्ज, सेक्रेटरी, केरल प्रदेश युवक काग्रेस

४ श्री मनुभाई पटेल, गुजरात प्रदेश काग्रेस कमेटी

५ श्री प्रभात पालित, पश्चिमी वगाल युवक काग्रेस

६. श्रीमती प्रतिमा मुकर्जी, पश्चिमी वंगाल

हम १२ जून १९५८ को मास्को पहुचे और एक महीना रूस मे रहे।

इस अवधि मे हमे मास्को के अलावा लेनिनग्राद, याल्टा (क्रीमिया), कीव (युक्रेन) और ताशकन्द (उज़बेकिस्तान) ले जाया गया।

इन स्थानो पर हमने बच्चो तथा युवको की बहुत-सी सस्थाए और सगठन देखे और अच्छी तरह उनका अध्ययन किया। हमने वहा की शिक्षा-सस्थाए भी देखी। उनमे मास्को और लेनिनग्राद के विश्व-विद्यालय तथा पूर्वी देशो का अध्ययन करनेवाली सस्थाए (ओरिएन्टल फैकल्टीज़) मुख्य थी। इनमे खासतौर पर एशिया और अफ्रीका के देशों और उनके प्रान्तो तक की भाषाए पढाई जाती हैं। बच्चो की शिक्षा-कल्याण-सम्बन्धी सस्थाए भी देखी। इनमें से मुख्य 'यग पायनियर्स' थी, जिसकी शाखाए सारे देश मे फैली हुई है। नाटक, सगीत, नृत्य आदि के द्वारा वहा की सास्कृतिक प्रवृत्तियो का भी हमने अवलोकन किया। वहा के वगीचे, खेल, स्टेडियम भी हमने देखे और यह भी जाना कि वहा के युवक फुरसत के समय का उपयोग किस प्रकार विश्राम, खेल, मनोविनोद और राष्ट्रीय निर्माण के विविध कामो मे करते हैं।

'कोमसोमोल' (यग कम्यूनिस्ट लीग) सोवियत रूस के युवको का सबसे बडा सगठन है। इसके प्रतिनिधियो से हम विभिन्न स्थानों पर मिले और उनसे लवी चर्चाए की। यह संगठन कम्यूनिस्ट पार्टी के सीधे नियन्त्रण और मार्ग-दर्शन मे काम करता है। सोवियत रूस के युवको के जीवन पर कोमसोमोल का बहुत प्रभाव है। खेल-कूद और राष्ट्रीय निर्माण-सबधी खास-खास सारी प्रवृत्तिया इसी सगठन के द्वारा सचालित

होती है । इसे शासन का पूरा-पूरा समर्थन प्राप्त है ।

दोनो देशो के युवक-सगठनो के बीच भावी सबध कैसा हो और हम कौन-कौन-से सामान्य काम मिल-जुलकर कर सकते है, इस विषय मे सोवियत युवक-समिति और कोमसोमोल के नेताओ के साथ हमारी विस्तृत चर्चाए हुईं ।

२९ जून १९५८ को कीव मे सोवियत रूस के पहले युवक-दिवस-समारोह मे सम्मिलित होने पर हमे बडी खुशी हुई। कोमसोमोल ने सुझाया कि जून मास का अतिम छुट्टी का दिन सारे देश मे युवक-दिवस के रूप मे मनाया जाय। शासन ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया। समारोह का आयोजन बडा प्रभावशाली रहा। सारा शहर उत्सव मे डूब गया था। नौजवानो और बच्चो के खेल, परेड आदि सब बहुत प्रभावोत्पादक रहे। जन-समूह ने हमारे प्रति बहुत प्रेम प्रकट किया और अपने सगठन की तरफ से हमने उन्हे जो भेंट दी, उसकी सबने बडी सराहना की। उन्होने हमारे गीतो और सगीत को भी बहुत पसन्द किया ।

उनका देश इतना विशाल है और हमारी यात्रा इतनी सक्षिप्त थी कि उसके बारे मे अपने कोई विचार प्रकट करना बडा कठिन लगता है। साथ ही हम वहा सर्वत्र सोवियत युवक-समिति के मातहत और हरदम उसके प्रतिनिधियो के साथ घूमते रहे। इसलिए हमे जहा चाहे वहा जाने की छूट होते हुए भी हमारे विचार इकतर्फा हो सकते है।

इस यात्रा के दौरान जिन निर्णयो पर हम पहुचे, वे सक्षिप्त मे इस प्रकार है—

१ सोवियत रूस की जनता भयकर युद्ध मे से गुजरी है और उसने बहुत बरबादी सही है। इसलिए वहा के लोग और खासकर नौजवान स्वभावत युद्ध के विरोधी हैं। हमे निश्चय हो गया है कि वे शान्ति चाहते है और शान्ति के लिए प्रयत्न करनेवालो को वे हर प्रकार का सहयोग देंगे ।

२. हम जहा-जहा भी गये, भारत की जनता के प्रति हमने अद्भुत सद्भाव पाया। इसका खास कारण यही है कि एक तो विदेशी शासन से लडकर हमने स्वतन्त्रता पाई और दूसरे हम सच्चे दिल से ससार मे शाति चाहते है और उसके लिए यत्न-शील हैं। हमारे प्रधानमन्त्री के प्रति वहा की जनता मे असीम प्रेम और आदर है। सच तो यह है कि वहा के जन-साधारण उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हैं।

३ सोवियत सघ मे हमने सर्वत्र देखा कि देश के नव-निर्माण और प्रगति के लिए, खासतौर पर अपनी योजनाओ को सफल बनाने के लिए, वहा के युवक काफी काम कर रहे है। इस विषय मे हमे लगता है कि हमारे देश के युवको को आज की अपेक्षा बहुत अधिक काम करना चाहिए। उन्हे सगठित होकर अपने देश के प्रजातान्त्रिक ढाचे के अन्तर्गत रहकर, राष्ट्र-निर्माण के सभी कामो मे अधिक भाग लेना चाहिए।

४. हमे खासतौर पर ध्यान रखना चाहिए कि रूस की जनता के साथ हमारी मित्रता का फल यह न हो कि उससे हमारे देश की कम्यूनिस्ट पार्टी को, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, किसी भी प्रकार से बल मिले। हमारे नौजवानो को भूलना नही चाहिए कि यद्यपि रूसी जनता भी शान्ति ही चाहती है, फिर भी रूस पर शासन करनेवाली कम्यूनिस्ट पार्टी के और हमारे तौर-तरीको मे बडा अन्तर है। यदि इस मित्रता का गलत अर्थ लगाकर हम उनकी विचार-पद्धति को अपनी विचार-पद्धति मे मिला देंगे तो यह बात हमारे लिए घातक सिद्ध होगी।

५. रूसियो को हक है कि वे जिस प्रकार ठीक समझें अपने देश का शासन करें। परन्तु हम अनुभव करते हैं कि रूसी पद्धति हमारे देश और भावी योजनाओ के लिए उपयुक्त नहीं है।

६. हमने देखा कि सोवियत सघ के युवक बडी कडी मेहनत करते है। अपने देश के लिए उन्होने बड़ा त्याग किया है। हमारा ख्याल है कि हमारे देश के युवकों को भी अपनी जिम्मेदारी समझकर

खूब कडा परिश्रम करना चाहिए। हमे बातें और बहस कम और काम अधिक करना चाहिए ।

७ यदि युवक-नेताओ द्वारा युवक-सगठनो से काम करवाया जाय तो यहा भी ऐसा हो सकता है । आज यदि उनपर अधिक जिम्मेवारी डाली जाय, और इस समय ऐसा करने की जरूरत भी है, तो हमे विश्वास है, वे उसे अवश्य पूरी करके दिखायगे और आगे आनेवाली जिम्मेदारियो को निभाने के योग्य अपने-आपको बना सकेंगे ।

८. उपर्युक्त सुझावो को कार्यान्वित करने के लिए हमारा सुझाव है कि शिक्षा और योजना-मन्त्रालय द्वारा रूस, पश्चिमी जर्मनी, बेल-जियम, हॉलैंड, और इग्लैंड के युवको की प्रवृत्तियो का अध्ययन करने के लिए यहा से प्रतिनिधि-मण्डल भेजे जाय और उनके अनुभवो से अधिक लाभ उठाया जाय ।

९ यदि युवक-काग्रेस को अपना विकास करना है और विदेशो के युवक-संगठनो से अपना सपर्क रखना है, जिसकी आज के जमाने मे आवश्यकता है भी, तो इसके लिए एक वैदेशिक विभाग खोल दिया जाना चाहिए, जिसमे पर्याप्त सख्या मे योग्य कार्यकर्त्ता हो ।

१० हम अनुभव करते हैं कि अब जब कभी इस तरह से प्रति-निधि-मण्डल विदेशो को भेजे जाय तो यह ध्यान रहे कि उसमे कम-से-कम एक सदस्य तो उस देश की भाषा का अच्छा जानकार अवश्य हो ।

११ पहले की अपेक्षा आज हमे और भी अधिक निश्चय हो गया है कि अपने देश मे जो मार्ग हमने अपनाया है, वही सबसे अच्छा है । लोकतन्त्र और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता बडी कीमती चीजें है। इनको कभी, किसी कीमत पर, अपने आदर्शों को जल्दी प्राप्त करने के लिए भी, नही छोडना चाहिए ।

हमारे प्रतिनिधि-मडल मे एक महिला थी, जो अच्छा गा भी सकती थी। यह बडा अच्छा हुआ । हम समझते है कि आगे ऐसे सब प्रति-निधि-मण्डलो मे एक-दो महिलाए भी अवश्य हो, जो गायन तथा नृत्य

अच्छी तरह जानती हो ।

सोवियत जीवन के विविध पहलुओ के बारे मे हमने विविध जानकारी प्राप्त की । इसे हम लेखो के रूप मे अपने पत्र 'युवक काग्रेस' द्वारा युवक कार्यकर्ताओ की सेवा में रखना चाहते हैं ।

हम समझते है कि युवक-काग्रेस का अपना प्रतिनिधि-मण्डल रूस भेजने का निश्चय समय और उपयोगिता की दृष्टि से भी बहुत अच्छा और सामयिक रहा ।

यह प्रतिनिधि-मण्डल दोनो देशो के बीच सद्भावना उत्पन्न करने के उद्देश्य से भेजा गया था । हम मानते है कि कुल मिलाकर उसमे यह सफल रहा है ।

इस महत्वपूर्ण और दिलचस्प कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए युवक काग्रेस ने हमे जो मौका दिया, इसके लिए हम उसके कृतज्ञ है । जितने भी दिन हम रूस मे रहे, हमने अपने मिशन को सफल बनाने के लिए अपनी पूरी शक्ति से काम किया और मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि इसमे हमारे प्रतिनिधियो ने पूरा-पूरा सहयोग दिया । हमने एकदिल होकर एक टीम के रूप में काम किया । सबका व्यवहार सुन्दर तथा पूरी तरह अनुशासनबद्ध रहा । इसके लिए मैं प्रतिनिधि-मण्डल के हर सदस्य को धन्यवाद देना चाहता हू ।

रूस मे हम श्री ख्रुश्चोव से भी मिले । उन्होने हमें यह जो अवसर दिया, इसके लिए हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ है । ३५ मिनट तक उनसे हमारी यह दिलचस्प बातचीत खुले दिल से होती रही । वातावरण बड़ा मैत्रीपूर्ण रहा । स्वयं उन्होने ही हमसे प्रश्न पूछने के लिए कहा और सौहार्दपूर्वक उनके जवाब दिये । हमें बताया गया कि रूस के प्रधानमत्री शायद पहली बार ही किसी गैर-सरकारी प्रतिनिधि-मडल से मिले थे । कुछ भी हो, उनसे मिलनेवाला युवक प्रतिनिधि-मडल तो यह पहला ही था ।

अंत में हम सोवियत युवक-समिति को धन्यवाद दिये बगैर नही रह

सकते, जिन्होने हमे वहा निमन्त्रित किया और हमारी यात्रा तथा सुख-सुविधाओ का इतना सुन्दर प्रबन्ध किया। सोवियत रूस के समस्त युवको के भी हम कृतज्ञ है।

हम सब प्रतिनिधियो का यह सम्मिलित और सर्वसम्मत प्रतिवेदन है।

१९ जुलाई, १९५८

रामकृष्ण बजाज
प्रतिनिधि-मण्डल के नेता

परिशिष्ट ३

सोवियत संघ में आय और कीमतें

अपनी रूस-यात्रा के समय मैंने सामान्य अर्थ-व्यवस्था के साथ-साथ वहा के दैनिक जीवन के आर्थिक स्तर का भी अध्ययन किया था। . नीचे दी हुई तालिका उसी खोज-बीन का परिणाम है। इससे वहा के निवासियो के जीवन-स्तर की झलक मिल जाती है।

इन आकडो के सग्रह मे हमे बडी कठिनाई हुई थी, लेकिन जो सूचनाए हमे मिली, वे यथासभव सही है।

ये आकडे सन् १९५८ के हैं। इस बीच वहा काफी आर्थिक परिवर्तन हुए हैं। रूबल का अवमूल्यन हुआ है—पुराने दस रूबल अब एक रूबल के बराबर है। इस हिसाब से सारी अर्थ-व्यवस्था मे हेर-फेर हो गये हैं। हमारी यात्रा के समय रूबल और रुपये की विनिमय-दर १२ रूबल = १ रुपया थी। अब एक रूबल लगभग पाच रुपये के बराबर है।

(१) मासिक आय

	रूबल	रुपयों मे (स्थूलमान मे)
शिक्षक (जो प्रतिदिन छः कक्षाए पढाते हैं)	६००	५००
शिक्षक (जो प्रतिदिन दस कक्षाए पढाते हैं)	१,०००	८५०

लेक्चरर (जो एम ए नहीं हैं)	१२,००-१,६००	१,०००-,१३२५
,, (जो एम ए है)	२,५००-३,२००	२,१००-२,६५०
सहायक प्रोफेसर	२,०००-२,७००	१,६५०-२,२५०
,,	२,५००-३,२००	२,१००-२,६५०
,,	२,८००-४,०००	२,३५०-३,३५०
प्रोफेसर (डाक्टरेट की उपाधिसहित)	३,५००-४,५००	३,०००-३,७५०
,, (आंशिक समय)	१,६००	१,३५०
डायरेक्टर, इंस्टिट्यूट ऑव इन्टरनैशनल अफेअर्स	७,०००	५,८५०
अनुवादक (प्रत्येक शीट के ६०० से ८०० रूबल तक)	६,०००-८,०००	५,०००-६,६५०
इंजीनियर	१ ०००-१,५००	८००-१,२००
ऐकेडेमीशियन	२०,०००-३०,०००	१८,०००-२५,०००
नौकरानी	२००-३००	१७५-२५०
विक्रेता-लडकी	६००	५००
क्लर्क	५००-७००	४२०-६००
मजदूर	८००	६६०
डाक्टर (प्रतिदिन ४० परिवारों का निरीक्षण करता है।)	६००	५००
टैक्सी ड्राइवर	१,२००	१,०००

मकान-किराया मोटे तौर पर आय का तीन प्रतिशत होता है। गैस का खर्च प्रत्येक परिवार को ३ से ४ रूबल, रेडियो और टेलीविजन-सहित बिजली का खर्च २० से ३० रूबल। २००० रूबल मासिक आय तक पर आयकर १० प्रतिशत और अधिक-से-अधिक १३ प्रतिशत।

(२) भिन्न-भिन्न चीजो की कीमतें

चीज का नाम	वजन, नग, नाप	कीमतें		
		रूबल	रुपये	खुले बाजार मे (रुपये)
चावल	किलोग्राम	२०	१६	—
मूगफली	,,	१५	१२.५०	—
आलू (उस समय सरकारी बाजार मे अप्राप्य)	किलोग्राम	—	—	१ २५ से १ ७५
टमाटर	,,			२५-३३
प्याज	किलोग्राम	४	३	१७
ककडी (अगस्त मे)	,,	२-३	१ ५०-२ ५०	—
ककडी (बेमौसम)	,,	—	—	२५-३०
सतरा	,,	१६	१३.२५	—
मोसम्मी (छोटी)	,,	१५	१२.५०	—
नीबू	एक	२.५०	२ १०	—
मक्खन	किलोग्राम	२८.५०	२३.७५	—
आइसक्रीम (छोटी)	एक	२	१.५०	—
चाय	कप	.५०	.४०	—
नीबू की चाय	,,	१	८०	—
चाकलेट (छोटी)	एक	१	.८०	—
लम्बी रोटी	एक	२ ५०	२.१०	—
काली रोटी	,,	१	.८०	—
अडा	,,	१ ३०	१	—
शेरी (शराब)	गिलास	५०	.४०	—
वोदका ,,	बोतल	२८	२३	—
बीअर ,,	,,	२.४५	२	—

ओवर कोट	एक	२७००	२२५०	—
ऊनी सूट	,,	२०००-	१६५०-	—
		२५००	२०८०	—
मिश्रित ऊनी सूट	,,	८००	६५०	—
खालिस ऊनी कपडा	गज	३००-	२५०-	—
		४००	३३०	—
रेशमी कमीज	एक	१५०	१२५	—
सूती ,,	,,	६०	५०	—
युक्रेनी रुई का कमीज	,,	३००	२५०	—
सूती मोजे (साधारण)	जोडा	१३	११	—
,, (घटिया)	,,	७-८	६-७	—
तौलिया (मामूली)	एक	५०	४२	—
जूते (जो भारत मे ३० रु० मे बिकते है)	जोडा	२५०	२१०	—
बच्चो के जूते (चमडे के)	,,	७७	६४	—
टेनिस के जूते	,,	३२	२६	—
जूते का रेशमी लेस	,,	३	२ ५०	—
,, साधारण लेस	,,	१	.८५	—
बूट की पालिश	एक बार	२	१ ७५	—
औरतो का साधारण				—
हैड बैग (चमडे का)	एक	१००	८५	—
बेनिटी बैग (मामूली)	,,	१००	८५	—
छाता (चीनी)	,,	८०	६७	—
लिपस्टिक	एक	५-१२	४-१०	—
इत्र	छोटी शीशी	१३	११	—

सती कपडे और चमडे का सामान भारत से चार-पाच गुना महगा है ।

बादाम की क्रीम	शीशी	६	५	—
कोल्ड क्रीम				
(चेहरे पर लगाने का)		३-५	२ ५०-४	—
बिजली का शेवर	एक	९०-	७५-	—
		१८०	१२५	
शेविंग ब्रुश	एक	१५	१२ ५०	—
नहाने का साबुन	तीन			
(घटिया)	टिकिया	९	७ ५०	—
साबुन की डिबिया	एक	३ २५	२ ५०	—
दांत का ब्रुश (घटिया)	एक	३	२ ५०	—
बड़ा कंघा	,,	६ ५०	४ ५०	—
छोटा कंघा	,,	३ ५०	३	—
सिगरेट	एक पैकेट	१ ५०	१ २५	—
दियासलाई की डिब्बी	एक	१५	१२	—
बॉलपेन-जैसी पेन्सिल	,,	५-२०	४-१६	—
मामूली पेन्सिल	,,	३०	२४	—
नोट बुक (४० पृष्ठ की)	,,	१७	१४	—
स्टोव[1]	एक	५०	४२	—
फाइबर बॉक्स (छोटा)	,,	६०-	५०-	—
		८०	७०	—
टेलीविजन सेट	,,	८००	६७५	—
बाइसिकल	,,	६९०	५७५	—

[1] स्टोव, फाइबर बॉक्स और टेलीविजन सेट रूस में बड़े सस्ते है।

होटल पीकिंग—सिंगल रूम, स्नानघरसहित ३०-३५ रूबल=२५-३० रु० प्रतिदिन
डबल रूम ,, ४५-५० ,, =३८-४२ ,, ,,
नाश्ता-भोजन का खर्च अलग
होटलों में, सामान्यत भोजन के १६ रूबल=१३ रु०

रूसी युवकों के बीच

स्कूटर			
५ सीटवाली कार	एक	३,०००	२,५००
७ ,, ,,	,,	१५,०००	१२,५००
	,,	३०,०००	२५,०००

'मंडल' द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य

पुस्तक	लेखक	मूल्य
आत्मकथा	(गाधीजी)	४ ००
प्रार्थना-प्रवचन २ भाग	,,	५ ५०
गीता-माता	,,	४ ००
पन्द्रह अगस्त के बाद		२ ००
धर्मनीति	,,	२ ००
द० अफ्रीका का सत्याग्रह		३ ५०
मेरे समकालीन	,,	५ ००
आत्म-सयम	,,	३ ००
गीता-बोध	,,	५०
अनासक्तियोग	,,	७५
ग्राम-सेवा	,,	३७
मगल-प्रभात		३७
सर्वोदय	,	३७
नीति-धर्म	,,	३७
आश्रमवासियो से	,,	४०
हमारी माग	,,	१ ००
एक सत्यवीर की कथा	,,	२५
आत्मकथा (सक्षिप्त)	,,	१ ००
हिन्द-स्वराज्य	,,	७५
अनीति की राह पर	,,	१.००
बापू की सीख	,,	५०
गाधी-शिक्षा . तीन भाग	,,	६२
आज का विचार दो भाग	,,	७४
ब्रह्मचर्य दो भाग	,,	१ ७५
गाधीजी ने कहा था ६ भाग		२ ७०
शान्ति-यात्रा	(विनोबा)	१.५०
विनोबा के विचार : २ भाग		३ ००
जीवन और शिक्षण	,,	२.००
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	,,	१ ००
ईशावास्यवृत्ति	,,	.७५
ईशावास्योपनिषद्	,,	.१२
सर्वोदय-विचार	,,	१.१२
स्वराज्य-शास्त्र	,,	.५०
सर्वोदय-सदेश	(विनोबा)	१.५०
गाधीजी को श्रद्धाजलि	,,	३७
भूदान-यज्ञ		२५
राजघाट की सनिधि मे	,,	६२
विचारपोथी	,,	१ ००
सर्वोदय का घोषणा-पत्र	,,	२५
उपनिषदो का अध्ययन	,,	१ ००
कुछ पुरानी चिट्ठिया	(नेहरू)	१० ००
इतिहास के महापुरुष	,,	३ ००
मेरी कहानी	,,	१० ००
,, (सक्षिप्त)	,,	२ ५०
हिन्दुस्तान की समस्याए	,,	२ ५०
राष्ट्रपिता	,,	२ ००
राजनीति से दूर	,,	२ ००
विश्व-इतिहास की झलक	(स०)	६.००
हिन्दुस्तान की कहानी	(सक्षिप्त)	२ ५०
गाधीजी की देन	(राजेन्द्रप्रसाद)	१ ५०
आत्मकथा	,,	८ ००
राजाजी की लघुकथाए	(राजाजी)	१.५०
महाभारत-कथा	,,	५.००
कुब्जा-सुन्दरी	,,	२ २५
शिशु-पालन	,,	५०
दशरथ-नन्दन श्रीराम		५ ००
मैं भूल नही सकता	(काटजू)	२.५०
कारावास-कहानी	(सु० नै०)	७ ५०
गाधी की कहानी	(लु० फि०)	१ ५०
इगलैंड मे गाधीजी		१ २५
बा, बापू और भाई		.५०
गाधी-विचार-दोहन		१.५०
सन्त-सुधासार (सक्षिप्त)	वि ह.	६.००
श्रद्धा-कण	,,	०.७५
गाधीवादी सयोजन के सिद्धात		५.००
भागवत-धर्म	(ह० उ०)	५.५०

[स्व]तंत्रता के झरने (मावलकर) १ ५०
(घ० दा० विड़ला) २ ००
रूप और स्वरूप ,,
डायरी के पन्ने ,, ७५
ध्रुवोपाख्यान ,, १ ००
स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय) ३०
मेरी मुक्ति की कहानी ,, १ ००
प्रेम मे भगवान ,, १ ५०
जीवन-साधना ,, २ ५०
कलवार की करतूत ,, १ २५
हमारे जमाने की गुलामी ,, ३५
वुराई कैसे मिटे ? ,, १ ००
वालको का विवेक ,, १ ००
हम करें क्या ? ,, ५०
धर्म और सदाचार ,, ४ ००
अंधेरे मे उजाला ,, १ २५
ईसा की सिखावन ,, १ ५०
कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल) १ ००
साहित्य और जीवन (चतुर्वेदी) २ ५०
कब्ज (म० प्र० पोद्दार) २ ००
हिमालय की गोद मे ,, १ ००
फर्द्धवितो की कहानिया ,, २ ००
जीवन-सदेश (ख० जिब्रान) २ २५
अशोक के फूल (ह०प्र० द्विवेदी) १ २५
कांग्रेस का इतिहास (संक्षिप्त) ३ ००
सप्तदशी ६ ००
रीढ की हड्डी २ ००
अमिट रेखाए १ ५०
तामिल-वेद (तिरुवल्लुवर) ३ ५०
हमारे गाव की कहानी १ ५०
खादी द्वारा ग्राम-विकास २ ००
साग-भाजी की खेती ७५
पशुओ का इलाज ३ ५०
रामतीर्थ-सदेश (३ भाग) ७५
१ १२
रोटी का सवाल (क्रोपाटकिन) ३ ००

नवयुवको से दो बातें ,, ५०
पुरुषार्थ (डा० भगवानदास) ६ ००
काश्मीर पर हमला २ ००
शिष्टाचार ५०
तट के बंधन (विष्णु प्रभाकर) २ ५०
भारतीय संस्कृति (साने गुरुजी) ३ ५०
आधुनिक भारत
फलो की खेती ५ ००
मैं तंदुरुस्त हू या बीमार ? ३ ००
गांधीजी की छत्र-छाया में ० ५०
भागवत-कथा १ ५०
जय अमरनाथ ३ ५०
हमारी लोक-कथाए १ ५०
संस्कृत-साहित्य-सौरभ १ ५०
(३६ पुस्तकें) प्रत्येक ० ४०
समाज-विकास-माला
(१५१ पुस्तकें) प्रत्येक ० ३७
कृषि-ज्ञान-कोष (डा० व्यास) ४ ००
प्रकाश की बातें १ ५०
ध्वनि की लहरें १ ५०
गरमी की कहानी १ ५०
धरती और आकाश १ ५०
समुद्र के जीव-जंतु १ ५०
नवीन यात्रा (मनोज बसु) २ ५०
रूस मे छयालीस दिन
(यशपाल जैन) ३ ००
मैं उनका ऋणी हू २ २५
सुभाषित सप्तशती २ ५०
शारदीया १ ५०
आंसू और मुस्कान १ ००
अमृत की बूंदें १ ००
तूफान और ज्योति २ ५०
प्राकृतिक जीवन की ओर १ ५०
कोई शिकायत नही २ ५०
सेतुबंध २ ००